विद्यालय

शिक्षक मार्गदर्शिका
सामाजिक अध्ययन

कक्षा 8

लेखिका :
रजनी गुप्ता

विद्यालय प्रकाशन
दिल्ली • मेरठ

© प्रकाशक

New Edition

मूल्य : ₹ 30:00

विषय-सूची

इकाई – I : भूगोल (संसाधन और विकास)

1. हमारे प्राकृतिक संसाधन 3
2. भूमि, मिट्टी एवं जल 9
3. प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन 19
4. खनिज एवं ऊर्जा के स्रोत 26
5. कृषि 34
6. उद्योग 41
7. जनसंख्या 48
8. आपदाएँ 55

इकाई II : भारत का आधुनिक इतिहास

1. भारत का आधुनिकीकरण 63
2. भारत में उपनिवेशवाद 98
3. भारत में कम्पनी का शासन 73
4. भारत में कम्पनी के शासन का प्रभाव 79
5. कृषक तथा जनजातीय आंदोलन 87
6. शिल्पकलाएँ तथा औद्योगिक विकास 91
7. 1857 ई. का विद्रोह 96
8. ब्रिटिश शासनकाल में शिक्षा का विकास 103
9. महिलाएँ, जातीयता और सुधार 107
10. उपनिवेशवाद और शहरी जीवन 112
11. राष्ट्रीय कला और चित्रकला में परिवर्तन 116
12. स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम चरण 120
13. स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रीय आंदोलन का द्वितीय चरण 125
14. स्वतंत्रता के बाद भारत 133

इकाई III : सामाजिक और राजनीतिक जीवन

1. हमारा संविधान और कानून 138
2. मूल अधिकार एवं कर्त्तव्य 141
3. संसद एवं उसके कार्य 146
4. भारत की न्यायपालिका 153
5. संघीय कार्यपालिका 159
6. पुलिस और न्यायपालिका की भूमिका 163
7. पिछड़ापन और सामाजिक न्याय 167
8. सरकार की आर्थिक नीतियाँ 172

आदर्श प्रश्न-पत्र : I, II व III 177

1

इकाई 1 : भूगोल (संसाधन और विकास)

हमारे प्राकृतिक संसाधन

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) संसाधन (ii) (a) सम्भाव्य संसाधन

(iii) (b) वास्तविक संसाधन (iv) (d) चट्टानें

(v) (b) अनिवकरणीय संसाधन (vi) (c) तकनीकी एवं मानक

2. निम्नलिखित को सुमेल :

'अ'	'ब'
सम्भाव्य संसाधन	सौर ऊर्जा
जैविक संसाधन	पेड़
अजैविक संसाधन	जल
वास्तविक संसाधन	सोना व चाँदी की खानें
नवीकरणीय संसाधन	वायु
अनवीकरणीय संसाधन	कोयला

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) मूल (ii) मात्राएँ (iii) बाह्य संसाधन

(iv) उन्नति (iv) सार्वभौमिक संसाधन (v) हलकी

संकलित निर्धारण

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक पंक्ति में दीजिए :

(i) प्रकृति प्रदत्त वे पदार्थ, जिनसे मानव की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, संसाधन कहलाते हैं।

(ii) उपभोग वस्तु को संसाधन बनाता है।

(iii) प्रकृति जिन संसाधनों को प्रत्यक्ष रूप से प्रदान करती है, वे प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं।

(iv) सभी जीवित वस्तुएँ, जिनमें प्राणी और वनस्पति सम्मिलित किए जाते हैं; जैसे—पेड़-पौधे, घास, पशु, जीव, पक्षी आदि; जैविक संसाधन कहलाते हैं।

(v) आने वाली पीढ़ियों की परवाह करने के साथ वर्तमान जरूरतों की पूर्ति करने के लिए संसाधनों का उपयोग उत्साहवर्धक विकास कहलाता है।

2. 5 पंक्तियों में उत्तर :

(i) प्रत्येक जीव जीवन की मूल आवश्यकताओं के लिए प्रकृति पर निर्भर करता है। प्रकृति अनेक प्रकार के संसाधनों का भंडार है; जैसे—वायु, जल, मिट्टी आदि। ये सभी प्राकृतिक संसाधन जीवों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। इस प्रकार, प्रकृति जिन संसाधनों को प्रत्यक्ष रूप से प्रदान करती है, वे प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं। नदी एक प्राकृतिक संसाधन है। उपभोग और विकास के आधार पर प्राकृतिक संसाधनों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—संभाव्य संसाधन तथा वास्तविक संसाधन।

(ii) **संभाव्य तथा वास्तविक संसाधनों में अंतर**

क्र.सं.	संभाव्य संसाधन	**वास्तविक संसाधन**
1.	संसाधन, जिनके किसी प्रदेश में पाए जाने की पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान होती हैं या जिन संसाधनों की मात्राओं के विषय में मानव अनभिज्ञ है और उन्हें अब तक उपयोग में नहीं ला सकता है, साथ ही वे भविष्य के उपयोग के लिए संरक्षित	मानव जिन संसाधनों की मात्राओं से भिज्ञ है तथा वर्तमान में उनका बड़े पैमाने पर उपयोग कर रहा है, वास्तविक संसाधन कहलाते हैं।

	हैं, को संभाव्य संसाधन कहते हैं।	
2.	इन संसाधनों को उपयोग में लाने के लिए तकनीकी प्रयास अविकसित अवस्था में है।	इन संसाधनों का भरपूर उपयोग करके के लिए तकनीकी विकास विकसित अवस्था में हैं।
3.	सौर ऊर्जा इसका अच्छा उदाहरण है।	अरब देशों के पेट्रोलियम के कुएँ तथा भारत में महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उड़ीसा स्थित मैगनीज के भंडार वास्तविक संसाधन के अच्छे उदाहरण हैं।

(iii) विश्व के निशचित स्थानों पर स्थिर अवस्था में पाए जाने वाले संसाधन स्थिर संसाधन कहलाते हैं। उदाहरण–सोना, चाँदी, ताँबा, पत्थर, एल्युमीनियम आदि। पृथ्वी पर इन संसाधनों का वितरण भौतिक कारणों के कारण असमान है। अन्य देशों के मुकाबले एशिया में खनिज और धातुएँ अधिक मात्रा में विद्यमान हैं; भारत विश्व में अभ्रक का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। अत: अभ्रक एक स्थिर संसाधन है।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) मानव जीवन में प्राकृतिक संसाधन महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। वे निर्जीवों के लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं। उनके उपयोग निम्न प्रकार समझे जा सकते हैं–

(1) ये संसाधन हमें जीवन को सहजतापूर्वक और सुखपूर्वक जीने के लिए हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

(2) प्राकृतिक संसाधन; जैसे–वायु, जल, मिट्टी आदि हमें भोजन तथा दैनिक उपयोग की बहुत–सी वस्तुओं को बनाने के लिए

कच्चा माल उपलब्ध कराते हैं।

(3) जीवों का जीवित रहना प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करता है।

(4) प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के आधार पर ही देश विकसित, विकासशील और अविकसित राष्ट्रों में वर्गीकृत किए जाते हैं।

(5) लोगों का जीवन स्तर प्राकृतिक संसाधनों के कुशल एवं न्यायिक उपयोग पर ही निर्भर करता है।

(6) उद्योगों का विकास प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करता है।

(7) किसी भी देश का आर्थिक विकास प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करता है।

(ii) तकनीकी और पूँजी संसाधनों के विकास के दो महत्त्वपूर्ण कारक हैं। भारत की आजादी के बाद संसाधनों की आवश्यकता को हलके में महसूस किया गया, परंतु जैसे ही देश की आबादी बढ़ी, वैसे ही संसाधनों में वृद्धि की आवश्यकता को महसूस किया गया। साथ ही तकनीकी विकास की धारा भी दिन–प्रतिदिन बहती चली गयी। जनता की जरूरतों के अनुसार नई तकनीकियों की खोज की जा रही है तथा उनका उपयोग भी किया जा रहा है। जरूरतों की पूर्ति के लिए बहुत–से प्राकृतिक संसाधनों को उपयोग में लाया जा रहा है। उदाहरण के लिए, प्रारंभ में रेलवे इंजनों को खींचने के लिए भाप की शक्ति, जो कोयले की ऊष्मा से प्राप्त की जाती थी, को उपयोग में लाया जाता था। कोयला ऊष्मीय ऊर्जा का एक प्राकृतिक स्रोत है। परंतु कोयले के भंडार बड़ी तेजी से समाप्ति की ओर हैं तथा सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं। दूसरी ओर, बिजली और डीजल कोयले के विकल्प के रूप में उपयोग में लाए जा रहे हैं। इसीलिए 1995 ई. के अंत तक भाप चालित सभी रेल इंजनों को डीजल और विद्युत चालित इंजनों में बदल दिया गया। इसका अन्य कारण इंजन तकनीकी में नई तकनीकियों ने उल्लेखनीय एवं महत्त्वपूर्ण

परिवर्तन कर दिया। इसके अतिरिक्त बढ़ती हुई आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए दूसरे बहुत-से संसाधनों को विकसित किया गया।

(iii) **उत्साहवर्धक विकास के सिद्धांत :**

(1) हमें प्राकृतिक पर्यावरण के विनाश के प्रति सचेत रहना चाहिए।

(2) मानव जीवन के गुणों में सुधार होना चाहिए।

(3) पृथ्वी पर जैव-विविधताओं के संरक्षण को प्राथमिकता देनी चाहिए।

(4) हमें सभी प्रकार के जीवों की परवाह और सम्मान करना चाहिए।

(5) हमें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए प्रयासरत रहना चाहिए।

(6) पुनर्प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए।

(7) विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों पर रोक लगानी चाहिए।

4. निम्नलिखित में अंतर स्पष्ट कीजिए :

(i) **प्राकृतिक संसाधन और मानव-निर्मित संसाधन**

क्र.सं.	प्राकृतिक संसाधन	मानव-निर्मित संसाधन
1.	प्रकृति जिन संसाधनों को प्रत्यक्ष रूप से प्रदान करती है, वे प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं।	मानव द्वारा बनाए गए संसाधनों को मानव-निर्मित संसाधन कहते हैं।
2.	नदी एक प्राकृतिक संसाधन है।	इमारतें, सड़कें, कुएँ आदि इसके उदाहरण हैं।

(ii) **जैविक तथा अजैविक संसाधन**

क्र.सं.	जैविक संसाधन	अजैविक संसाधन
1.	सभी जीवित वस्तुएँ, जिनमें प्राणी और वनस्पति सम्मिलित किए जाते है; जैविक संसाधन कहलाते हैं।	सभी निर्जीव वस्तुएँ अजैविक संसाधन कहलाती हैं।
2.	उदाहरण - पेड़-पौधे, घास, पशु, जीव, पक्षी आदि।	उदाहरण –मिट्टी, चट्टानें, धातुएँ, खनिज, जल, लवण, शक्ति के स्रोत आदि।

(iii) **नवीकरणीय एवं अनवीकरणीय संसाधन**

क्र.सं.	नवीकरणीय संसाधन	अनवीकरणीय संसाधन
1.	वे संसाधन जो एक बार प्रयोग करने पर समाप्त नहीं होते, नवीकरणीय संसाधन कहलाते हैं।	वे संसाधन, जो एक बार प्रयोग होने या करने पर समाप्त हो जाते हैं, अनवीकरणीय संसाधन कहलाते हैं।
2.	इन्हें कभी समाप्त न होने वाले संसाधनों के नाम से भी जाना जाता है।	इन्हें समाप्त होने वाले संसाधन भी कहते हैं।
3.	उदाहरण–जल, वायु, सौर ऊर्जा आदि।	उदाहरण –कोयला, पेट्रोलियम, यूरेनियम, बलुआ पत्थर आदि।

5. निम्नलिखित शब्दों को समझाकर लिखिए :

(i) **शिल्प विज्ञान (तकनीकी) :** नवीनतम ज्ञान और कुशलता का उपयोग शिल्प विज्ञान कहलाता है।

(ii) **उत्साहवर्धक विकास :** आने वाली पीढ़ियों की परवाह करने के साथ वर्तमान जरूरतों की पूर्ति करने के लिए संसाधनों का उपयोग उत्साहवर्धक विकास कहलाता है।

(iii) **कुशल मानव संसाधन :** प्राकृतिक और मानवकृत संसाधनों का भरपूर उपयोग तभी किया जा सकता है, जब उसके निवासी कुशल और जागरूक होते हैं। यही कुशल निवासी कुशल मानव संसाधन कहलाते हैं।

(iv) **सर्वव्यापी :** जो सब जगह व्याप्त हो, सर्वव्यापी कहलाता है।

2 भूमि, मिट्टी एवं जल

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (b) 57% (ii) (d) इन सभी से

(iii) (a) असम में (iv) (b) नदियों से

(v) (a) राजस्थान में (vi) (c) पहाड़ियों में

(vii) (b) मिट्टी अपरदन को रोकने के लिए वायु की गति को

(viii) (c) 8% (ix) (b) राजस्थान में

2. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य (v) सत्य (vi) असत्य

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) विरल (ii) भूमि (iii) निजी भूमि

(iv) ढलान (v) ह्यूमस (vi) अपरदन

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) 90% जनसंख्या।

(ii) भूमि का उपयोग वानिकी, इमारतों, सड़कों के निर्माण के लिए, रेलों का जाल बिछाने, उद्योग स्थापित करने आदि के लिए किया जाता है। इस प्रक्रिया को भू-उपयोग कहते हैं।

(iii) पृथ्वी पर दो प्रकार की भूमियाँ पाई जाती हैं—निजी स्वामित्व वाली तथा सामुदायिक स्वामित्व वाली।

(iv) धरातल का ऊपरी भाग, जिसमें टूटा-फूटा चट्टानी पदार्थ तथा ह्यूमस मिला होता है, मिट्टी कहलाता है।

(v) पर्वतीय मिट्टी, लेटराइड मिट्टी, जलोढ़ मिट्टी, काली मिट्टी, लाल मिट्टी, रेतीली या मरुस्थलीय मिट्टी।

(vi) वायु, जल और जलवायवीय तथा मौसम के कारकों द्वारा मिट्टी का कटना, टूटना तथा बिखरना मृदा अपरदन कहलाता है।

(vii) पर्वतीय ढलानों पर पर्वतों के कन्टूरों के समांतर खेतों में कृषि करने को कंटूर कृषि कहते हैं।

(viii) पृथ्वी का तीन-चौथाई भाग जल से ढका है, इसीलिए पृथ्वी को जलीय ग्रह कहते हैं।

(ix) पेड़-पौधों के बीच धरातल पर खाली जगह सूखी घास या पत्तों से ढकी रहती है, जो मिट्टी की नमी को बाहर जाने से रोकती है, जिससे मिट्टी का अपरदन रूक जाता है। यह प्रक्रिया मल्चिंग कहलाती है।

2. 6 पंक्तियों में उत्तर :

(i) मिट्टी निर्माण के दो कारक निम्नलिखित हैं—

(1) आधारभूत चट्टानें : मौसम, ताप और पाले के द्वारा चट्टानों को तोड़ता है। इसके अतिरिक्त; पौधे, जानवर और मानव भी मिट्टी के निर्माण में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। मूल

चट्टान मिट्टी के रासायनिक गुणों, रंग, संरचना तथा खनिजों का निर्धारण करती है।

(2) समय : एक इंच मिट्टी के निर्माण में हजारों वर्षों का समय लगता है। मिट्टी को, निर्माण में लिए गए समय के आधार पर पुरानी तथा नवीन मिट्टी में विभाजित किया जाता है।

(ii) भारत में विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ पायी जाती हैं, जिनमें मुख्य हैं–पर्वतीय मिट्टी, लेटराइट मिट्टी, जलोढ़ मिट्टी, काली मिट्टी, लाल मिट्टी, रेतीली या मरुस्थलीय मिट्टी। किन्हीं दो प्रकार की मिट्टियों का वर्णन निम्नलिखित है–

(1) पर्वतीय मिट्टी : इस प्रकार की मिट्टी भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है। हिमालय में इस मिट्टी में अधिक विस्तार पाया जाता है। हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, उत्तराखंड, असम आदि पहाड़ी राज्यों में यह बड़ी मात्रा में पाई जाती है। इस मिट्टी का निर्माण नदियों द्वारा लाई गयी सिल्ट तथा जंगलों से प्राप्त कार्बनिक पदार्थों के जमाव से होता है।

(2) काली मिट्टी : काली मिट्टी का निर्माण ज्वालामुखी से निकले लावा से होता है। इस मिट्टी में चूना, पोटाश, मैग्नीशियम, एल्युमिना तथा लोहे की पर्याप्त मात्रा पाई जाती है, परंतु इसमें फॉस्फोरस, नाइट्रोजन तथा जैविक तत्त्वों की कमी होती है। इसका विस्तार गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु में है। अन्य मिट्टियों की तुलना में यह मिट्टी पानी को काफी समय तक रोके रखने की क्षमतायुक्त होती है।

(iii) मृदा अपरदन के दो प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं–

(1) वन कटाव : वनों का अबाध कटाव वन कटाव कहलाता है। पेड़-पौधों की जड़ें मिट्टी के कणों को मजबूती से पकड़े रहती हैं। जब पेड़-पौधे कट जाएँगे तो भूमि का कटाव अवश्य होगा।

(2) अत्यधिक पशुचारण : पशु या जंगली जानवर घास चरते

समय अपने खुरों से पौधों को जड़ सहित उखाड़ देते हैं, जो भू अपरदन का मुख्य कारण बनता है।

(iv) **कन्टूर कृषि :** पर्वतीय ढलानों पर पर्वतों के कन्टूरों के समांतर खेतों में कृषि करने को कंटूर कृषि कहते हैं।

यह मिट्टी के अपरदन को रोकने में सहायक है। इस प्रकार की खेती जम्मू एवं कश्मीर, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश आदि में देखी जा सकती है।

फसल चक्र : फसलों को बदल-बदलकर क्रम में बोना फसल चक्र कहलाता है। लगातार लंबे समय तक एक ही तरह की फसल बोने से खेतों की मिट्टी कमजोर हो जाती है, जिससे उसकी कणों को रोकने की क्षमता का ह्रास होता है और यह मिट्टी के अपरदन का कारण बनता है। इसलिए अलग-अलग समय में अलग-अलग तरह की फसलें बोनी चाहिए।

(v) प्रकृति में जल घूम-फिरकर एक रूप से दूसरे रूप में तथा एक जगह से दूसरी जगह आता-जाता रहता है, जिसे जल चक्र के नाम से जानते हैं। अन्य शब्दों में, महासागरीय जल का जलमंडल से वायुमंडल तथा स्थलमंडल में परिसंचरण जल चक्र कहलाता है। जल प्रत्येक ताप पर वाष्प में परिवर्तित होता रहता है और वाष्प से बादल बनते हैं तथा बादल संघनित होकर वर्षा, हिम, ओस, पाला, कुहरा आदि के रूप में धरातल पर गिरते हैं। यह जल मिट्टी की रंध्रों के द्वारा जमीन के नीचे पहुँच जाता है, जिसे भूमिगत जल कहते हैं। फिर जल बड़ी मात्रा में सूर्य की गर्मी से वाष्प में परिवर्तित होता रहता है, जो बादलों के रूप में आकाश में उड़कर चला जाता है। इस प्रकार जल हमेशा एक चक्र में घूमता रहता है, जिसे जल-चक्र कहते हैं।

(vi) वर्षा जल को घरों की छतों से इकट्ठा करके भविष्य के उपयोग के लिए भूमि से संचित करना रेनवाटर हार्वेस्टिंग प्रणाली कहलाती है।

जल को प्रदूषित होने से बचाने तथा बेकार बहने से रोकने के लिए इस प्रणाली को घरों में अपनाया जाता है।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) मिट्टी का संरक्षण करने के कुछ उपाय निम्नलिखित हैं–

(1) पौधारोपण : भू-संरक्षण के लिए बड़े पैमाने पर पौधा रोपण करना चाहिए क्योंकि पेड़-पौधों की जड़ें मिट्टी के कणों को मजबूती से जकड़े रहती हैं, जिससे भू-अपरदन की क्रिया पर रोक लगती है।

(2) सोपानी कृषि : पर्वतीय ढलानों पर पर्वतों के कन्टूरों के समांतर खेतों में कृषि करने को कंटूर कृषि कहते हैं।

यह मिट्टी के अपरदन को रोकने में सहायक है। इस प्रकार की खेती जम्मू एवं कश्मीर, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश आदि में देखी जा सकती है।

(3) सीढ़ीनुमा खेतों में कृषि : पहाड़ी किसान पर्वतों के ढालों पर सीढ़ीनुमा खेतों को बनाकर उनमें खेती करते हैं, जिसे सीढ़ीनुमा कृषि कहते हैं। ये खेत वर्षा के तीव्र बहाव को राकते हैं, जिससे मिट्टी का अपरदन रूकता है।

(4) फसल चक्र : फसलों को बदल-बदलकर क्रम में बोना फसल चक्र कहलाता है। लगातार लंबे समय तक एक ही तरह की फसल बोने से खेतों की मिट्टी कमजोर हो जाती है, जिससे उसकी कणों को रोकने की क्षमता का ह्रास होता है और यह मिट्टी के अपरदन का कारण बनता है। इसलिए अलग-अलग समय में अलग-अलग तरह की फसलें बोनी चाहिए।

(5) बाँधों का निर्माण : बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में नदियों पर बाँध बनाए जाने चाहिए, जिससे बाढ़ों पर नियंत्रण पाया जा सके। बाँध पानी के तेज बहाव को रोकते हैं, जिससे मिट्टी का अपरदन नहीं हो पाता।

(6) मल्चिंग : पेड़-पौधों के बीच धरातल पर खाली जगह सूखी घास या पत्तों से ढकी रहती है, जो मिट्टी की नमी को बाहर जाने से रोकती है, जिससे मिट्टी का अपरदन रूक जाता है। यह प्रक्रिया मल्चंग कहलाती है।

(7) अत्यधिक पशुचारण पर नियंत्रण : पशुओं के एक ही स्थान पर अधिक समय तक चरने पर रोक लगानी चाहिए। ऐसा करने से पशुचारण नियंत्रित होगा, जिससे पशुओं के खुरों से मिट्टी रौंदी नहीं जाएगी, साथ ही पौधों तथा घास की जड़ें नहीं उखड़ेंगीं और इन सब के कारण मिट्टी का अपरदन नहीं होगा।

(8) पेड़ों की बाड़ : खेतों की मेड़ों पर यूकेलिप्टस, पोपलर जैसे लंबे बढ़ने वाले वृक्षों की बाढ़ लगानी चाहिए। यह बाड़ हवा की गति को रोकेगी, जिससे भूमि के अपरदन को होने से रोका जाएगा।

(ii) विश्व में जल का वितरण असमान है। दक्षिणी गोलाद्र्ध के 81% क्षेत्र में जल पाया जाता है। इसीलिए इसे जलीय गोलाद्र्ध कहते हैं। इसके विपरीत उत्तरी गोलाद्र्ध में 6% क्षेत्र जलीय है, इसीलिए इसे भू-गोलाद्र्ध के नाम से जानते हैं। यूरोप, एशिया, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा चीन जल की अधिकतम मात्रा को घेरे हुए हैं, जबकि ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, मध्य एशिया तथा अरब के देशों ने जल का कम क्षेत्र घेरा है। सहारा (अफ्रीका), थार (भारत), अटाकामा, कालाहारी, गोबी, अरेबिया मरुस्थल वर्षा की कमी का सामना करते हैं। अवक्षेपण, वाष्पीकरण, वाष्पोत्सर्जन आदि से पूरे विश्व में जल का वितरण प्रभावित होता है।

(iii) **पृथ्वी की सतह पर जल के स्रोत :** जल तीन अवस्थाओं में पाया जाता है–गैस, ठोस तथा द्रव। झीलों, तालाबों, कृत्रिम जलाशयों, पोखरों, नदियों, कुओं और भूमि के नीचे जल द्रव अवस्था में पाया जाता है। हिमखंड, बर्फ, ठोस कार्बन डाइऑक्साइड आदि जल के ठोस रूप हैं। जल वायुमंडल में वाष्प के रूप में विद्यमान रहता है

बादलों से जल वर्षा के रूप में बरसता है। बादल और भाप भी जल के गैसीय रूप हैं। भूमिगत जल ट्यूब वैलों (नलकूपों), कुओं, आर्टिजन कुओं तथा गीजर के रूप में पृथ्वी से बाहर आता रहता है। नलकूप और कुओं से हम फसलों की सिंचाई तथा पीने के लिए जल प्राप्त करते हैं। नगरों में नहरों, नदियों और नलकूपों से पेयजल की पूर्ति की जाती है।

(iv) भारत में विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ पायी जाती हैं। ये मिट्टियाँ निम्न प्रकार हैं–

(1) पर्वतीय मिट्टी : इस प्रकार की मिट्टी भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है। हिमालय में इस मिट्टी में अधिक विस्तार पाया जाता है। हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, उत्तराखंड, असम आदि पहाड़ी राज्यों में यह बड़ी मात्रा में पाई जाती है। इस मिट्टी का निर्माण नदियों द्वारा लाई गयी सिल्ट तथा जंगलों से प्राप्त कार्बनिक पदार्थों के जमाव से होता है।

(2) लेटराइट मिट्टी : इस मिट्टी का निर्माण चट्टानों के टूटने से होता है। इस मिट्टी में लोहे तथा पोटाश की मात्रा अत्यधिक होती है, जिससे यह कम उपजाऊ होती है। यह मिट्टी गहरे लाल तथा सफेद रंग की होती है। इसमें केवल घास और झाड़ियाँ उग पाती हैं। इसका विस्तार मध्य प्रदेश, पूर्वी और पश्चिमी घाटों, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, उड़ीसा के तटीय भागों, मेघालय, असम और राजमहल की पहाड़ियों में है।

(3) जलोढ़ मिट्टी : यह मिट्टी हिमालय की नदियों द्वारा मैदान में लायी जाती है। यह बहुत उपजाऊ मिट्टी है। कुल मिट्टी का 1/4 भाग जलोढ़ मिट्टी का बना है। गंगा का विशाल मैदान उत्तर भारत की नदियों द्वारा लाई गयी मिट्टी से बना हुआ है। इसका विस्तार पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिमी बंगाल, उत्तराखंड तथा असम के कुछ हिस्सों में है। यह मिट्टी पोटाश,

फॉस्फोरस, मैग्नीशियम, चूना तथा ह्यूमस युक्त होती है। खेती के लिए यह सबसे अच्छी मिट्टी मानी जाती है।

(4) काली मिट्टी : काली मिट्टी का निर्माण ज्वालामुखी से निकले लावा से होता है। इस मिट्टी में चूना, पोटाश, मैग्नीशियम, एल्युमिना तथा लोहे की पर्याप्त मात्रा पाई जाती है, परंतु इसमें फॉस्फोरस, नाइट्रोजन तथा जैविक तत्त्वों की कमी होती है। इसका विस्तार गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु में है। अन्य मिट्टियों की तुलना में यह मिट्टी पानी को काफी समय तक रोके रखने की क्षमतायुक्त होती है।

(5) लाल मिट्टी : इस मिट्टी में लोहे तथा एल्युमिना की अधिक मात्रा पाई जाती है, इसीलिए इसका रंग लाल होता है। इस मिट्टी का निर्माण रूपांतरित और क्रिस्टलीय शैलों के टूटने से हुआ है। इसका विस्तार मध्य प्रदेश से तमिलनाडु तक है। कुछ भाग पश्चिमी महाराष्ट्र के कोंकण तट पर भी विस्तृत है। वर्षा के समय इस मिट्टी में पाया जाने वाला ह्यूमस नष्ट हो जाता है। पहाड़ियों के कुछ हिस्से भी इस मिट्टी के बने हैं।

(6) रेतीली या मरुस्थलीय मिट्टी : यह मिट्टी अत्यधिक कम वर्षा वाले क्षेत्रों में पाई जाती है। मिट्टी के कणों का आकार बड़ा होता है तथा रेत की मात्रा अधिक होती है। इसीलिए इसे रेतीली मिट्टी कहते हैं। इस मिट्टी का विस्तार राजस्थान के थार रेगिस्तान, गुजरात, लद्दाख, हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में है। मिट्टी में काँटेदार झाड़ियाँ, बबूल, नागफनी आदि वनस्पतियाँ पाई जाती हैं परंतु सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर इन मिट्टियों में अच्छी फसलें पैदा की जाती हैं।

(v) जल संसाधनों को निम्न प्रकार से संरक्षित करेंगे :

(1) जल-प्रदूषण को रोकने के लिए प्रदूषित जल का शोधन करेंगे।

(2) पेयजल की पूर्ति करने से पूर्व उसका क्लोरीनीकरण करना चाहिए।

(3) फसलों में कीटनाशकों, जहरीले रसायनों आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(4) जल को प्रदूषित होने से बचाने तथा बेकार बहने से रोकने के लिए रेनवाटर हार्वेस्टिंग प्रणाली को घरों में अपनाना चाहिए।

(5) फसलों की सिंचाई करने के लिए छिड़काव विधि (स्प्रिंकल सिस्टम) का प्रयोग करना चाहिए ताकि जल वाष्पोत्सर्जन द्वारा एवं मेड़ों से बाहर जाकर नष्ट न होने पाए।

(6) नहरों को पक्का बनाना चाहिए ताकि पानी की हानि नहर के किनारों से रिसकर न हो सके।

(7) हमें आवश्यकतानुसार विभिन्न कार्यों के लिए जल का उपयोग सीमित मात्रा में करना चाहिए। सदैव जल को बचाने का प्रयास करना चाहिए।

(8) कम जल चाहने वाली फसलों को बोना चाहिए।

(9) नगरों के सीवर को जल-स्रोतों (नहर, नदी, नाले) आदि में न डालकर उसे इकट्ठा करके खाद में बदल देना चाहिए।

4. निम्नलिखित में भेद बताइए :

(i) **अपभ्रंश और अपरदन**

अपभ्रंश	अपरदन
अपभ्रंश की प्रक्रिया से मिट्टी का निर्माण होता है।	अपरदन की प्रक्रिया से वायु, जलादि से मिट्टी टूटती व बिखरती है।

(ii) **मल्चिंग तथा शैल्टर बैल्ट**

मल्चिंग	शैल्टर बैल्ट
पेड़-पौधों के बीच धरातल पर खाली जगह सूखी घास या पत्तों से ढकी रहती है, जो मिट्टी की नमी को बाहर जाने से रोकती है, जिससे मिट्टी का अपरदन रूक जाता है। यह प्रक्रिया मल्चिंग कहलाती है।	खेतों की मेड़ों पर लंबे बढ़ने वाले वृक्षों; जैसे-यूकेलिप्टस, पोपलर आदि के बाड़ लगाने की प्रक्रिया शैल्टर बैल्ट कहलाती है।

(iii) **कन्टूर कृषि तथा सीढ़ीनुमा खेती**

कन्टूर कृषि	सीढ़ीनुमा खेती
पर्वतीय ढलानों पर पर्वतों के कन्टूरों के समांतर खेतों में कृषि करने को कंटूर कृषि कहते हैं।	पहाड़ी किसान पर्वतों के ढाल पर सीढ़ीनुमा खेतों को बनाकर उसमें खेती करते हैं, जिसे सीढ़ीनुमा खेती कहते हैं।

5. निम्नलिखित शब्दों को समझाइए :

(i) **अतिचारण :** पशुओं के एक ही स्थान पर अधिक समय तक चरने की प्रक्रिया अतिचारण कहलाती है।

(ii) **वन विनाश :** वनों को अबाध काटना एवं उजाड़ना वन विनाश कहलाता है।

(iii) **मृदा अपरदन :** वायु, जल और जलवायवीय तथा मौसम के कारकों द्वारा मिट्टी का कटना, टूटना तथा बिखरना मृदा अपरदन कहलाता है।

(iv) **भू-गोलार्द्ध :** उत्तरी गोलार्द्ध में 6% क्षेत्र जलीय है तथा बाकी क्षेत्र धरातलीय है, इसीलिए इसे भू-गोलार्द्ध के नाम से जानते हैं।

3 प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) 10% सेल्सियम (ii) (d) उपर्युक्त सभी में

(iii) (a) 24 (iv) (a) कनाडा में

(v) (a) ऑस्ट्रेलिया में (vi) (c) टुण्ड्रा

(vii) (a) कैक्टस (नागफनी) (viii) (a) ज्वारीय वनों में

(ix) (a) राजस्थान में (x) (d) चीता

2. निम्नलिखित प्रत्येक के लिए एक शब्द लिखिए :

(i) राष्ट्रीय पार्क (ii) मांसाहारी (iii) वृक्ष संबंधी जानवर

(iv) जैवमंडलीय रिजर्व (v) नीली व्हेल

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
काजीरंगा राष्ट्रीय पार्क	असम
कान्हा राष्ट्रीय पार्क	मध्य प्रदेश
दुधवा राष्ट्रीय पार्क	उत्तर प्रदेश
कार्बेट राष्ट्रीय पार्क	उत्तराखंड
बांदीपुर पक्षी अभयारण्य	कर्नाटक
हजारीबाग राष्ट्रीय पार्क	बिहार
पलामू राष्ट्रीय पार्क	बिहार
तरोबा राष्ट्रीय पार्क	महाराष्ट्र

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) मिट्टी में स्वत: उगने वाले पेड़-पौधों को प्राकृतिक वनस्पति कहते

हैं।

(ii) तापमान, वर्षा, सूर्य का प्रकाश एवं ऊष्मा, वायु, मिट्टी आदि।

(iii) उष्ण कटिबंधीय वर्षा वाले वन, उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती मानसूनी वन, भूमध्य सागरीय वन, शुष्क कोणधारी वन, शुष्क मिश्रित वन, शुष्क पर्णपाती वन।

(iv) जैतून, ओक, कॉर्क, अखरोट आदि।

(v) उष्ण कटिबंधीय घास भूमियाँ, शुष्क घास भूमियाँ।

(vi) लाइकेन, मॉस, शैवाल, झाड़ीनुमा पौधे; जैसे–क्राउन बेरी, हर्टिल बेरी, बिली, सेज, बिल-बेरी, ब्लू बेरी आदि।

(vii) स्थलमंडल, जलमंडल तथा वायुमंडल को संयुक्त रूप से जैवमंडल के नाम से पुकारते हैं।

(viii) जैवमंडल में वनस्पतियाँ और जंतु अपने जीवनयापन तथा जीने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं तथा परस्पर संबंधित हैं। इस व्यवस्था को पारिस्थितिकी कहते हैं।

(ix) CITES (खतरे के अंतर्गत आने वाले जीवों की प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर सम्मेलन) जीवों और वनस्पतियों की कुछ प्रजातियों के संरक्षण के लिए जैव-व्यापार पर रोक लगाती है।

(x) 24 टाइगर रिजर्व।

2. 6 पंक्तियों में उत्तर :

(i) उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन विश्व के मानसूनी क्षेत्रों में पाए जाते हैं। वृक्ष पतझड़ की ऋतु में गर्मी के कारण अपनी पत्तियों को धरातल पर गिरा देते हैं। ये वन उष्ण कटिबंधीय वर्षा वाले वनों की अपेक्षा कम सघन होते हैं। मुख्य वृक्षों में सागोन, साल, शीशम, यूकेलिप्टस तथा मैनग्रोव हैं। वृक्षों की लकड़ी कठोर होती है। इन वनों का विस्तार म्यांमार, थाइलैंड, ब्राजील, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में है।

(ii)

क्र.सं.	मरुस्थलीय प्रदेश की वनस्पति	टुण्ड्रा प्रदेश की वनस्पतियाँ
1.	मरुस्थलीय भूमियों में वर्षा ऋतु में बहुत कम वर्षा लगभग 30 सेमी होती है। इसलिए भूमि रेतीली तथा अनुपजाऊ होती है।	टुण्ड्रा प्रदेश में वार्षिक वर्षा लगभग 25 सेमी होती है। पूरे वर्षभर धरातल बर्फ से ढका रहता है।
2.	यहाँ बबूल, कीकर, नागफनी, खैर तथा कँटीली झाड़ियाँ पायी जाती हैं।	यहाँ मुख्य रूप से लाइकेन, मॉस, शैवाल, झाड़ीनुमा पौधे; जैसे–क्राउन बेरी, हर्टिल बेरी, बिली, सेज, बिल-बेरी, ब्लू बेरी आदि पाए जाते हैं।
3.	इन वनस्पतियों का विस्तार सहारा (उत्तरी अफ्रीका), थार (भारत), अरेबिया (सीरिया और सऊदी अरब), गोबी (मध्य एशिया), अटकामा (दक्षिणी अमेरिका) आदि मरुस्थलों में है।	यह वनस्पति टैगा के उत्तर से 66½ उत्तरी अक्षांशों से आगे यूरेशिया के उत्तरी भाग, अलास्का, ग्रीनलैंड, उत्तरी ध्रुव तथा उत्तरी चीन में पायी जाती है।

(iii) उष्ण जलवायवीय क्षेत्रों के कुछ देशों में (अफ्रीका तथा दक्षिण अमेरिका) जेब्रा, जंगली भैंसे, जिराफ, नीलगाय आदि पाए जाते हैं। कालाहारी एवं सहारा (अफ्रीका) तथा थार (भारत) जैसे मरुस्थलों में छिपकलियाँ, साँप, ऊँट आदि जानवर बहुतायत से पाए जाते हैं। घास भूमियाँ शाकाहारी तथा शिकारी जंतुओं से भरी पड़ी हैं।

(iv) वनों के कोई दो लाभ निम्नलिखित हैं–

(1) वनों के वृक्ष मृदा अपरदन को रोकते हैं तथा बाढ़ नियंत्रण में सहयोगी हैं।

(2) वृक्षों की इमारती लकड़ी से हम ऑफिस, घर और होटलों के लिए फर्नीचर बनाते हैं। जंगलों से प्राप्त ईंधन की लकड़ी से भोजन पकाया जाता है। पशुओं के लिए चारा मिलता है।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) विश्व में पाए जाने वाले दो प्रकार के वनों का वर्णन निम्नलिखित है–

(1) उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती मानसूनी वन : उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन विश्व के मानसूनी क्षेत्रों में पाए जाते हैं। वृक्ष पतझड़ की ऋतु में गर्मी के कारण अपनी पत्तियों को धरातल पर गिरा देते हैं। ये वन उष्ण कटिबंधीय वर्षा वाले वनों की अपेक्षा कम सघन होते हैं। मुख्य वृक्षों में सागोन, साल, शीशम, यूकेलिप्टस तथा मैनग्रोव हैं। वृक्षों की लकड़ी कठोर होती है। इन वनों का विस्तार म्यांमार, थाइलैंड, ब्राजील, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में है।

(2) भूमध्यसागरीय वन : ये वन भूमध्य रेखा के 30° उत्तर तथा 45° दक्षिण के मध्य अर्थात् भूमध्य सागर के चारों ओर पाए जाते हैं। गर्मियाँ ज्यादा उष्ण तथा शुष्क, जाड़े अधिक ठंडे और आर्द्रता युक्त होते हैं। वर्षा का वार्षिक औसत 50 सेमी से 100 सेमी तक होता है। वृक्षों के बीच में उचित फासला पाया जाता है। इस क्षेत्र के मुख्य वृक्षों में जैतून, ओक, कॉर्क, अखरोट आदि हैं।

(ii) **विश्व स्तर पर वन्य जीव संरक्षण :** प्रदूषण केवल वनस्पतियों के लिए ही हानिकारक नहीं है, बल्कि यह वन्य जीवों के लिए भी हानिकारक है। कीटनाशकों, कवकनाशकों, उर्वरकों आदि का अत्यधिक प्रयोग कीटों, कीड़ों और जंतुओं के लिए हानिकारक होता है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि विश्व की एक-तिहाई

आबादी का भोजन मछली है; परंतु मछलियों की कुछ प्रजाजियों पर खतरा मँडरा रहा है। उन प्रजातियों का संरक्षण करना चाहिए। सीलों, वालरसों आदि का शिकार इन प्रजातियों के लिए खतरा बना हुआ है। नीली व्हेल विलुप्त होने के कगार पर है। इसके अतिरिक्त जानवरों की कुछ प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं या विलुप्तीकरण के कगार पर हैं। शिकारी चीतों, शेरों, हाथियों, हिरनों, गुलदारों, सर्पों, खरगोशों, मगरमच्छों, शतुरमुर्गों, नेवलों, गिलहरियों, जंगली सुअरों आदि को मांस, दाँत, बाल, खाल, सींग, फर आदि प्राप्त करने के लिए मारते हैं। आए दिन उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी प्रदेशों से वन्य जीवों की खालों, सींगों, मांस आदि को तस्करों से बड़ी मात्रा में बरामद किया जाता है, जो इस बात के प्रमाण है कि शिकारी उक्त जानवरों को चोरी-छिपे मारते रहते हैं। विश्व की सरकारों के माध्यम से वन्य जीवों के संरक्षण के लिए बहुत-से उपाय किए गए हैं, जिनमें से मुख्य उपाय निम्नलिखित हैं–

(1) विश्व के प्रत्येक देश में वन्य जीवों के उनके प्राकृतिक पर्यावरण में संरक्षण के लिए राष्ट्रीय पार्क, वन्य जीव अभ्यारण्य, जैवमंडलीय रिर्जव आदि की स्थापना की गई है।

(2) वन्य जीवों के शरण स्थलों के संरक्षण के लिए सरकार चेतनायुक्त कार्यक्रमों; जैसे–वनमहोत्सव तथा सामाजिक वानिकी आदि का आयोजन करती है।

(3) विश्व के बहुत-से राष्ट्रों ने कानूनों की सुरक्षा के अंतर्गत अनेक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वन्य जीवों का व्यापार, शिकार तथा प्रयोग अवैधानिक घोषित किया है। भारत सरकार ने चीतों, शेरों, मोरों, हिरनों तथा ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (राजस्थान के जोधपुर, बीकानेर आदि में पाई जाने वाली सुंदर चिड़िया) के शिकार पर रोक लगा रखी है।

(4) CITES (वन्य जीवों की खतरे में पड़ी प्रजातियों) के

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर सम्मेलन की स्थापना, अनेक जीवों और वनस्पतियों तथा पक्षियों की सूची जो निषिद्ध व्यापार के अंगर्तत बनाने के लिए की गई है। इन प्रजातियों में रीछ, हाथी, गैंडे, डॉलफिन आदि प्रमुख हैं।

(5) भारत सरकार ने मगरमच्छ, घड़ियाल, अजगर, काला हिरन, हाथी तथा हिम चीते आदि की रक्षा के लिए विशेष कानूनों का निर्माण किया है।

(6) भारत में 60 राष्ट्रीय पार्कों तथा 400 वन्य जीव अभयारण्यों की स्थापना की गई है, जिससे कि वन्य जीवों को संरक्षण प्रदान किया जा सके। भारत में 24 टाइगर रिजर्व प्रोजेक्ट हैं।

4. निम्नलिखित में भेद कीजिए :

(i) राष्ट्रीय पार्क और वन्य जीव अभयारण्य

क्र.सं.	राष्ट्रीय पार्क	वन्य जीव अभयारण्य
1.	सरकारी नियंत्रण में रहने वाली वन्य जीवों की प्रजातियों के रहने के लिए प्राकृतिक क्षेत्र राष्ट्रीय पार्क कहलाता है।	वन्य जीव अभयारण्य ऐसे क्षेत्र हैं, जहाँ वानिकी, पशुचारण या कृषि जैसे कार्यों पर सरकारी रोक लगी होती है।
2.	भारत में 60 राष्ट्रीय पार्कों की स्थापना की गई है।	भारत में 400 वन्य जीव अभयारण्यों की स्थापना की गई है।

(ii) **प्रेयरी और स्टेपीज**

प्रेयरी	स्टेपीज
प्रेयरी घास भूमियाँ संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा में फैली हैं।	स्टेपीज घास भूमियाँ मध्य एशिया में फैली हैं।

(iii) **पर्यावरण और वातावरण**

पर्यावरण	वातावरण
मानव जीवन को चारों ओर से घेरने वाली प्राकृतिक वस्तुओं के समूह को पर्यावरण कहते हैं।	पृथ्वी के चारों ओर मिश्रित गैसों और जलवाष्प का आवरण, जो 480 किमी की ऊँचाई तक फैला है, वातावरण (वायुमंडल) कहलाता है।

(iv) **मानसूनी वन और शुष्क मानसूनी वन**

क्र.सं.	मानसूनी वन	शुष्क मानसूनी वन
1.	ये वन महान हिमालय की शिवालिक श्रेणियों, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल तथा आंध्र प्रदेश में पाए जाते हैं।	ये वन उत्तर-पूर्वी राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दक्षिण पश्चिमी उत्तर प्रदेश, गुजरात तथा प्रायद्वीपीय भारत में पाए जाते हैं।
2.	यहाँ वार्षिक वर्षा का औसत 100 से 200 सेमी होता है।	यहाँ वार्षिक वर्षा का औसत 50 से 100 सेमी है।
3.	इन वनों में पाए जाने वाले मुख्य वृक्षों में साल, शीशम, सागौन, नीम, पीपल, आँवला, चंदन, आम, आबनूस आदि हैं।	मुख्य वृक्षों में बबूल और कँटीली झाड़ियाँ हैं तथा सवाना किस्म की सवाई, कांस, मूँज जैसी घासें पायी जाती हैं।

5. निम्नलिखित शब्दों को समझाइए :

(i) **विलुप्त प्राय:** किसी वस्तु या प्राणी अथवा वनस्पति के नष्ट होने के कगार को विलुप्त प्राय कहते हैं।

(ii) **विलुप्तीकरण के कगार पर प्रजातियाँ :** विश्व की एक-तिहाई आबादी का भोजन मछली है परंतु मछलियों की कुछ प्रजातियों पर खतरा मँडरा रहा है। सीलों, वालरसों आदि का शिकार इन प्रजातियों के लिए खतरा बना हुआ है। नीली व्हेल विलुप्त होने के कगार पर है। इसके अतिरिक्त जानवरों की कुछ प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं या विलुप्तीकरण के कगार पर है।

(iii) **पारितंत्र :** जैवमंडल में वनस्पतियाँ और जंतु अपने जीवनयापन तथा जीने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं तथा परस्पर संबंधित हैं। इस व्यवस्था को पारिस्थितिकी कहते हैं।

(iv) **वेल्ड :** दक्षिण अफ्रीका में पायी जाने वाली घास भूमियाँ वेल्ड कहलाती हैं।

4 खनिज एवं ऊर्जा के स्रोत

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) जीवाश्म ईंधन (ii) (c) अणु शक्ति

(iii) (a) जल-विद्युत (iv) (d) चीन

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
तारापुर	महाराष्ट्र
कलपक्कम	तमिलनाडु
काकरापार	गुजरात

कैगा	कर्नाटक
नरौरा	उत्तर प्रदेश
रावतभाटा	राजस्थान

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) सत्य

(iv) सत्य (v) असत्य

4. प्रत्येक के लिए एक शब्द लिखिए :

(i) खनिज (ii) जीवाश्म ईंधन (iii) अयस्क

(iv) शोधनशाला

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) पृथ्वी की परतों और चट्टानों में प्राकृतिक रूप से मिलने वाले रासायनिक यौगिक खनिज कहलाते हैं।

(ii) खनिजों की उनके रंगों, कठोरता, घनत्व, विलेयता आदि के आधार पर पहचान करेंगे।

(iii) खनिज तीन प्रकार के होते हैं–धात्विक, अधात्विक तथा खनिज ईंधन।

(iv) ऐसी चट्टानें जिनसे खनिज निकाला जाता है, अयस्क कहलाते हैं।

(v) खनन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा पृथ्वी की परतों में स्थित चट्टानों से खनिज को पृथक् किया जाता है।

(vi) जब धातु-अयस्क पृथ्वी के नीचे अधिक गहराई पर स्थित होता है, तो इसमें मशीन चालित शाफ्ट से गहरे छिद्र किए जाते हैं और इस विधि को शाफ्ट खनन कहते हैं।

(vii) अभ्रक, जिप्सम, चूना, पत्थर, संगमरमर, नमक, सोडा, हीरा, ग्रेफाइट, नीलम, रूबी आदि।

(viii) पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस खनिज ईंधनों के भंडार पृथ्वी की सतह से अत्यधिक गहराई पर स्थित होते हैं। इसलिए इसमें गहरे

छिद्र कुएँ बनाए जाते हैं, जिसे वेधन (ड्रिलिंग) कहते हैं।

(ix) विश्व में पेट्रोलियम का सबसे बड़ा उत्पादक देश सऊदी अरब है तथा सोने का सबसे बड़ा उत्पादक देश दक्षिण अफ्रीका है।

(x) महाराष्ट्र।

(xi) बॉम्बे हाई तथा अंकलेश्वर भारत में पेट्रोलियम के सर्वाधिक उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं।

2. 5 पंक्तियों में उत्तर :

(i)

क्र.सं.	धात्विक खनिज	अधात्विक खनिज
1.	कच्ची धातुओं से बनने वाले खनिजों को धात्विक खनिज कहते हैं।	जिन खनिजों में धातुएँ नहीं मिली होतीं, उन्हें अधात्विक खनिज कहते हैं।
2.	उदाहरण–मैंगनीज, निकिल, ताँबा, सोना, चाँदी, लैड, बॉक्साइड आदि।	उदाहरण –अभ्रक, जिप्सम, चूना, पत्थर, संगमरमर, नमक, सोडा, हीरा, नीलम आदि।
3.	इनमें चमक होती है तथा वे ऊष्मा और विद्युत की सुचालक होती हैं।	इनमें चमक नहीं होती तथा वे ऊष्मा और विद्युत की कुचालक होती हैं।

(ii) **धातुओं के भौतिक गुण :**

(1) पारा तथा गेलियम को छोड़कर सभी धातुएँ साधारण ताप पर ठोस अवस्था में होती हैं।

(2) सामान्यत: धातुओं के गलनांक ऊँचे होते हैं।

(3) पारा तथा गेलियम कमरे के ताप पर द्रव अवस्था में होते हैं।

(4) धातुएँ कठोर, भंगुर, तन्य तथा घात-वर्धनीय होते हैं।

(5) धातुओं में चमक होती है तथा वे ऊष्मा और विद्युत की सुचालक होती हैं।

(iii) **वेधन :** पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस खनिज ईंधनों के भंडार पृथ्वी की सतह से अत्यधिक गहराई पर स्थित होते हैं। इसलिए इसमें गहरे छिद्र कुएँ बनाए जाते हैं, जिसे वे धन (ड्रिलिंग) कहते हैं।

शाफ्ट खनन : जब धातु-अयस्क पृथ्वी के नीचे अधिक गहराई पर स्थित होता है, तो इसमें मशीन चालित शाफ्ट से गहरे छिद्र किए जाते हैं और इस विधि को शाफ्ट खनन कहते हैं।

(iv) **लौह अयस्क :** यूक्रेन, यू.एस.ए., ब्राजील, ऑस्ट्रेलिया, चीन आदि।

ताँबा : चिली, यू.एस.ए, रूस, कनाडा, जायरे, जाम्बिया, पोलैंड, पेरू आदि।

जस्ता : कनाडा, जापान, यू.एस.ए., पोलैंड, पेरू, मैक्सिको आदि।

चाँदी : मैक्सिको, पेरू, कनाडा आदि।

अभ्रक : भारत, ब्राजील, रूस आदि।

कोयला : चीन, यू.एस.ए., भारत, जर्मनी, रूस आदि।

(v) **लोहा :** ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, गोवा, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु आदि।

कोयला : झारखंड, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, असोम, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, मेघालय, जम्मू एवं कश्मीर, नागालैंड।

मैंगनीज : झारखंड, महाराष्ट्र, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, गोवा, कर्नाटक, गुजरात, राजस्थान।

बॉक्साइट : झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु।

(vi) भारत विश्व के कुल कोयला उत्पादन का 40% कोयला उत्पादित करता है। भारत में निम्नलिखित कोयला उत्पादन क्षेत्र हैं–

(अ) गोंडवाना क्षेत्र :

(1) **दामोदर घाटी क्षेत्र :** रानीगंज (पश्चिम बंगाल), झरिया,

बोकारो, गिरिडीह, कर्णपुर –सभी बिहार तथा झारखंड में स्थित हैं।

(2) **महानदी घाटी क्षेत्र :** कोरबा, सोनहाट, रामगढ़ (मध्य प्रदेश), तालचर, संबलपुर (ओडिशा)।

(3) **सोन घाटी क्षेत्र :** सिंगरौली, डमरिया, सोहागपुर (मध्य प्रदेश), तत्रा पानी, रामकोला (छत्तीसगढ़), डाल्टनगंज, हुतार, औरंगा (बिहार)।

(ब) गोदावरी क्षेत्र : सिंगरैनी और तन्दुर (आंध्र प्रदेश), बल्लारपुर और चाँदा (महाराष्ट्र)।

(स) सतपुड़ा क्षेत्र : छिंदवाडा और नरसिंहपुर (मध्य प्रदेश)।

इसके अलावा पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग, राजस्थान में पलना, तमिलनाडु में दक्षिणी अर्काट जिला तथा कश्मीर में चिनाब नदी के किनारी कोयले के भंडार स्थित हैं। असम में लखीमपुर व शिवसागर जिले का माकूम क्षेत्र भी कोयले के खनन के लिए जाना जाता है।

(vii) सूर्य की ऊष्मा और प्रकाश से प्राप्त ऊर्जा सौर ऊर्जा कहलाती है। सौर ऊर्जा नवीकरणीय और प्रदूषणरहित होती है। इस ऊर्जा का उपयोग सौर सेलों में विद्युत उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। सोलर हीटर, सोलर कुकर, सोलर ड्रायर आदि यंत्र सौर ऊर्जा से संचालित होते हैं।

(viii) समुद्री ज्वार से विद्युत उत्पन्न की जाती है, जिसे ज्वारीय ऊर्जा कहते हैं। उच्च ज्वार समुद्र के संकरे मुहाने पर बने बाँध से जुड़ी टरबाइन से टकराता है जो जनरेटर से विद्युत उत्पन्न करता है। रूस, फ्रांस आदि देशों में ज्वारीय ऊर्जा उत्पन्न की जाती है।

(ix)

क्र.सं.	बायो गैस	प्राकृतिक गैस
1.	पशुओं के गोबर, सड़े पेड़-पौधों तथा नगरीय कूड़ा-करकट से उत्पन्न ऊर्जा को बायो गैस कहते हैं।	क्रूड ऑयल के वेधन के समय निकलने वाली गैस प्राकृतिक गैस कहलाती है।
2.	इसका उपयोग खाना पकाने में तथा प्रकाश (रोशनी) करने के लिए किया जाता है।	इसका उपयोग भोजन पकाने तथा औद्योगिक कार्यों में किया जाता है।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर:

(i) **खनिजों के उपयोग :**

(1) लोहे से मशीनें, कृषि यंत्र, कीलें, चौखट-जँगले, रेलवे लाइनें आदि बनाए जाते हैं।

(2) ताँबे से विद्युत तार, बिजली के उपकरण, बर्तन, पाइप, सिक्के आदि बनाए जाते हैं।

(3) हीरे से काँच पत्थर आदि काटे जाते हैं। इससे आभूषण भी तैयार किए जाते हैं।

(4) चाँदी, औषधियों, आभूषणों, परावर्तकों, दर्पण, तार तथा बर्तनों को बनाने में उपयोगी है।

(5) सोना; औषधियों, आभूषणों, मूर्ति आदि बनाने में उपयोगी है।

(6) अभ्रक को वैद्युत यंत्रों में धारा को रोकने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

(7) बॉक्साइट (एल्युमीनियम) से विद्युत तार, उपकरण, बर्तन, मशीनें आदि बनाए जाते हैं।

(8) मैंगनीज से शुष्क सैल, इनेमिल आदि बनाए जाते हैं।

(9) सिलिकन का उपयोग कंप्यूटर बनाने में किया जाता है।

(10) टिन का उपयोग संदूक, बोतल, प्लेट, शेल्फ, अलमारी आदि बनाने में किया जाता है।

(ii) **ऊर्जा के गैर-परंपरागत स्रोत :** ऊर्जा के ऐसे स्रोत जो नवीकरणीय हैं तथा जो कभी भी समाप्त नहीं हो सकते, ऊर्जा के गैर-परंपरागत स्रोत कहलाते हैं। ऊर्जा के परंपरागत स्रोत; जैसे—कोयला, पेट्रोलियम आदि असीमित हैं तथा निरंतर प्रयोग के कारण इन स्रोतों की कमी बढ़ती जा रही है। एक दिन ये सभी स्रोत जड़ से समाप्त हो जाएँगे। इसीलिए मानव ने ऊर्जा के गैर-परंपरागत स्रोत; जैसे—सौर, पवन, ज्वारीय ऊर्जा आदि का विकास किया है।

(1) **सौर ऊर्जा :** सूर्य की ऊष्मा और प्रकाश से प्राप्त ऊर्जा सौर ऊर्जा कहलाती है। सौर ऊर्जा नवीकरणीय और प्रदूषणरहित होती है। इस ऊर्जा का उपयोग सौर सेलों में विद्युत उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। सोलर हीटर, सोलर कुकर, सोलर ड्रायर आदि यंत्र सौर ऊर्जा से संचालित होते हैं।

(2) **ज्वारीय ऊर्जा :** समुद्री ज्वार से विद्युत उत्पन्न की जाती है, जिसे ज्वारीय ऊर्जा कहते हैं। उच्च ज्वार समुद्र के संकरे मुहाने पर बने बाँध से जुड़ी टरबाइन से टकराता है जो जनरेटर से विद्युत उत्पन्न करता है। रूस, फ्रांस आदि देशों में ज्वारीय ऊर्जा उत्पन्न की जाती है।

(iii) जल को कोयला, गैस या डीजल को जलाकर प्राप्त ऊष्मा से गर्म किया जाता है। एक निश्चित ताप पर यह उबलने लगता है। उबलने से जल भाप में परिवर्तित हो जाता है। भाप जनरेटर से जुड़ी टरबाइन के पिस्टन को धकेलती है और इस प्रकार जनरेटर से विद्युत उत्पन्न होती है। इस विद्युत को तापीय विद्युत कहते हैं। भारत में उत्पन्न होने वाली कुल विद्युत का 60% भाग तापीय विद्युत है।

विश्व में तापीय विद्युत का वितरण : संयुक्त राज्य अमेरिका,

कनाडा, ब्रिटेन, चीन, भारत, दक्षिण अफ्रीका, जर्मनी, रूस आदि।

भारत में तापीय विद्युत का वितरण :

उत्तर प्रदेश : ओबरा, टाँड़ा, परीछा, रिहंद, हरदुआगंज, ऊँचाहार, सिंगरौली, पनकी, दादरी।

मध्य प्रदेश : सतपुड़ा, अमरकण्टक, विन्ध्याचल।

छत्तीसगढ़ : कोरबा।

पंजाब : भटिंडा।

हरियाणा : पानीपत, फरीदाबाद।

राजस्थान : कोटा, अंता।

दिल्ली : राजघाट, बदरपुर, इंद्रप्रस्थ।

गुजरात : उकाई, गांधीनगर, अहमदाबाद, कवास, साबरमती, उटरन, धुवरण।

महाराष्ट्र : नासिक, खपार, खेड़ा, भुसावल, बुल्लरशाह, चंद्रपुर, ट्राम्बे, पारली, चोता, कोराडी, उडन।

तमिलनाडु : एन्नोर, नेवेली, तूतीकोरिन।

बिहार : बरौनी, कहलगाँव, पतरातू।

पश्चिम बंगाल : कोलकाता, टीटागढ़, दुर्गापुर, फरक्का, गौरीपुर।

असम : नामरूप, चंहपुर, बोंगाईगाँव।

आंध्र प्रदेश : रामागुण्डम, नैल्लोर, विजयवाड़ा, कोठगुदम, सह्याद्री।

उड़ीसा : तलचर।

केरल : केकुलम।

5 कृषि

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (d) उपर्युक्त सभी (ii) (a) 100 – 200 सेमी

(iii) (a) बागवानी (iv) (c) चावल

(v) (c) ब्राजील (vi) (d) पेड़ के रस से

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) 80% (ii) अधिकतम (iii) 200

(iv) दोमट (v) नमी (vi) जूट

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) असत्य (v) सत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) कृषि 'Agriculture' शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के दो शब्दों 'ager' (एगर) या 'agri' तथा 'culture' को मिलाकर हुई है– 'ager' या 'agri' का अर्थ है–मिट्टी तथा 'culture' का अर्थ है–मिट्टी की जुताई।

(ii) खेती, मत्स्य पालन, रेशम कीट पालन, पशुपालन, सामाजिक वानिकी आदि।

(iii) मशीनें, बीज, उर्वरक, श्रम, कीटनाशक, दवाइयाँ, धूप, वर्षा आदि कृषि के इनपुट हैं तथा फसलें कृषि की आउटपुट हैं।

(iv) जहाँ कृषि योग्य भूमि की अधिकता होती है अर्थात् बड़े कृषि फार्मों वाले किसान बड़े-बड़े खेतों में फसलों का उत्पादन करते हैं,

तो यह विस्तृत खेती कहलाती है।

(v) जल की उपलब्धता के आधार पर कृषि तीन प्रकार की होती है—मानसूनी कृषि, शुष्क कृषि, सिंचित कृषि तथा आर्द्र कृषि।

(vi) 50 सेमी वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में की जाने वाली कृषि को शुष्क कृषि कहते हैं।

(vii) अनचाहे पेड़-पौधों से आच्छादित भू-खंड से पेड़-पौधों को काटकर उसी खंड पर जला देते हैं। उनकी राख मिट्टी में मिलकर भूमि को उपजाऊ बनाती है। किसान इस भूमि में फसलोत्पादन करते हैं और इस प्रकार की खेती को झूम खेती कहते हैं।

(viii) गेहूँ, चावल, मक्का, ज्वार-बाजरा, गन्ना आदि।

(ix) चीन।

(x) विश्व में चीन तथा भारत में पश्चित बंगाल सर्वाधिक चावल उत्पादक हैं।

(xi) बुआई के मौसम में गन्ने को 20° सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है तथा वृद्धि के समय तापमान 20° से. से 28° से. के बीच होना चाहिए।

2. सात पंक्तियों में उत्तर :

(i) **सिंचित कृषि :** मानसूनी तथा अद्‌र्ध-शुष्क क्षेत्रों में वर्षा के न्यूनतम घनत्व के कारण सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे क्षेत्रों में सूखे के समय फसलों की सिंचाई की जाती है। इसे सिंचित कृषि कहते हैं। चीन, भारत, मध्य एशिया, मिस्र, ईराक आदि देशों में सिंचित कृषि की जाती है।

वर्षा वाली कृषि : जिन क्षेत्रों में वार्षिक वर्षा का औसत 200 सेमी से अधिक होता है, वे क्षेत्र वर्षा वाली कृषि के अंतर्गत आते हैं। दक्षिण भारत में मालाबार तटीय प्रदेश तथा बांग्लादेश मानसूनी खेती के लिए जाने जाते हैं।

(ii) जहाँ कृषि योग्य भूमि की अधिकता होती है अर्थात् बड़े कृषि

फार्मों वाले किसान बड़े-बड़े खेतों में फसलों का उत्पादन करते हैं, तो यह विस्तृत खेती कहलाती है।

ऐसे देशों की जनसंख्या विरल होती है, जहाँ विस्तृत खेती को अपनाया गया है। आधुनिक कृषि मशीनों तथा यंत्रों से खेतों को जोता, बोया और फसलों को काटा जाता है। ऑस्ट्रेलिया के डाउन्स, उत्तरी अमेरिका के प्रेयरी, यूरेशिया के स्टेपी तथा दक्षिण अफ्रीका के पम्पास नामक घास भूमियों में गेहूँ की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है।

(iii) **यायावर पशुचारण :** विश्व के शुष्क और अद्‌र्ध-शुष्क क्षेत्रों में यहाँ-वहाँ काँटेदार झाड़ियाँ, बबूल आदि उगे होते हैं। यहाँ गड़रिए चारे और पानी की तलाश में अपने पशु झुंडों के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं। ये झुंड बकरियों, भेड़ों, ऊँटों, भैंसों, गायों आदि पशुओं के होते हैं। इस प्रकार सामूहिक पशुचारण भी एक तरह की कृषि है क्योंकि ये पशु गड़रियों का दूध, खाल, हड्डियाँ, ऊन आदि देते हैं। विश्व में मध्य एशिया टुण्ड्रा, सहारा, थार (भारत) तथा पर्वतों के ढलान इसी प्रकार के क्षेत्र हैं, जहाँ यायावर पशुचारण होता है।

आदिम जीविका कृषि : अनचाहे पेड़-पौधों से आच्छादित भू-खंड से पेड़-पौधों को काटकर उसी खंड पर जला देते हैं। उनकी राख मिट्टी में मिलकर भूमि को उपजाऊ बनाती है। किसान इस भूमि में फसलोत्पादन करते हैं और इस प्रकार की खेती को झूम खेती कहते हैं।

यहाँ किसान कसावा, रतालू, आलू, मक्का आदि की खेती करते हैं। इस प्रकार की खेती पहाड़ों तथा वन क्षेत्रों में देखी जा सकती है। इसीलिए इसे आदिम जीविका कृषि भी कहते हैं।

(iv) **व्यापारिक दुग्ध फार्मिंग :** इस प्रकार की खेती में पशुचालन, जैसे-गाय आदि के पालने के अतिरिक्त चारा फसलों को उगाया जाता है। गायों से दूध, खाल और मांस प्राप्त किया जाता है। उन्हें खिलाने के लिए जौ और जई की फसलों को उगाया जाता है। दूध

से बड़े पैमाने पर डेरी संयंत्रों में मक्खन, घी, क्रीम, पनीर तथा दुग्ध पाउडर बनाए जाते हैं। इस तरह की खेती (व्यवसाय) नीदरलैण्ड, स्विटजरलैंड, डेनमार्क, हॉलैंड, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और भारत में की जाती है।

(v) **व्यापारिक बागानी कृषि :** इस प्रकार की खेती के अंतर्गत फलों, सब्जियों, फूलों आदि की फसलों को उगाया जाता है। इन्हें ट्रकों से बाजारों में भेज दिया जाता है। छोटे आकार के खेतों से अधिक-से-अधिक उपज ली जाती है। उत्पादों को खुले बाजारों में बेच दिया जाता है। इसीलिए इसे व्यापारिक कृषि कहा जाता है। यह एक प्रकार की गहन खेती है, जिसमें उर्वरकों और श्रमिकों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है। इनके उत्पादों का यूरोप और अमेरिका में बहुत बड़ा बाजार है। अमेरिका का वाशिंगटन क्षेत्र सेब, फ्रांस और जर्मनी का ब्रांडी तथा इटली टमाटर के लिए प्रसिद्ध है।

(vi) **मक्का की खेती के लिए आवश्यक भौतिक दशाएँ :** मक्का की फसल नाइट्रोजनयुक्त चिकनी दोमट मिट्टी में होती है। इसके लिए 21° से. से 27° से. तापमान, खुली धूप तथा 120 सेमी वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है।

मक्का का विश्व में वितरण : संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राजील, चीन, रूस, कनाडा, भारत, मेक्सिको, फ्रांस, अर्जेन्टाइना, इटली, दक्षिणी अफ्रीका, मिस्र।

मक्का का भारत में वितरण : गंगा-यमुना का दोआब, बिहार, पंजाब, हरियाणा, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा और महाराष्ट्र।

(vii) **जूट की खेती के लिए आवश्यक भौतिक दशाएँ :** यह तीन फीट की ऊँचाई का रेशेदार पौधा है। इसे मानसूनी जलवायु, 27° से. से 37° से. तापमान, नदियों द्वारा लाई गई उर्वर कॉप मिट्टी, 180 सेमी से 250 सेमी के मध्य वार्षिक वर्षा तथा खिली धूप की आवश्यकता होती है। इसे स्वर्ण रेशा कहते हैं।

विश्व में वितरण : बांग्लादेश, भारत, चीन, थाइलैंड, ताइवान तथा ब्राजील।

भारत में वितरण : पश्चिम बंगाल, असोम, बिहार तथा ओडिशा।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **रेशेदार फसलें :** वे फसलें जो रेशे प्राप्त करने के लिए उगाई जाती हैं और जो परंपरागत रूप से कागज, कपड़ा और रस्सियाँ बनाने के लिए प्रयुक्त की जाती हैं, रेशेदार फसलें कहलाती हैं।

कपास : कपास की खेती समतल जमीन, जिसकी मिट्टी काली तथा चूनायुक्त भारी दोमट होती है, में की जाती है। बुवाई के समय तापमान 20° से. से 30° से. के बीच तथा पकाई के समय 25° से. से 35° से. के बीच 200 दिन की पालारहित अवधि जिसमें खिली हुई धूप होनी चाहिए। इसके पौधों को 75 सेमी से 100 सेमी के मध्य वार्षिक वर्षा की आवश्यकता पड़ती है। इसके अतिरिक्त रासायनिक खाद तथा श्रमिकों की भी जरूरत पड़ती है।

रेशों की लंबाई, रंग, शक्ति तथा बनावट के आधार पर कपास की किस्मों का निर्धारण किया जाता है। यह तीन प्रकार की होती है—लंबे, मध्यम तथा छोटे रेशों वाली कपास।

जूट : जूट की खेती के लिए आवश्यक भौतिक दशाएँ : यह तीन फीट की ऊँचाई का रेशेदार पौधा है। इसे मानसूनी जलवायु, 27° से. से 37° से. तापमान, नदियों द्वारा लाई गई उर्वर कॉप मिट्टी, 180 सेमी से 250 सेमी के मध्य वार्षिक वर्षा तथा खिली धूप की आवश्यकता होती है। इसे स्वर्ण रेशा कहते हैं।

विश्व में वितरण : बांग्लादेश, भारत, चीन, थाइलैंड, ताइवान तथा ब्राजील।

भारत में वितरण : पश्चिम बंगाल, असोम, बिहार तथा ओडिशा।

(ii) **गेहूँ के लिए आवश्यक भौतिक दशाएँ :** गेहूँ का विकास ट्रिटिकम नामक घास से हुआ है। इसके लिए चूना युक्त दोमट मिट्टी, 50 सेमी से 75 सेमी वार्षिक वर्षा, 1° से. से 15° से. तापक्रम धूप वाले 90 दिन की अवधि तथा पालारहित मौसम की आवश्यकता पड़ती है। फसल पकने के समय तापमान 25° से. से

28° से. के बीच रहना चाहिए। पौधों की वृद्धि के लिए यूरिया उर्वरक का प्रयोग किया जाता है। इससे पौधे स्वस्थ होते हैं और मजबूती से खड़े रहते हैं।

चावल के लिए आवश्यक भौतिक दशाएँ : चावल के लिए रोपाई के समय 18° से. से 20° से तापमान तथा फसल पकने के समय 26° से. से 27° से. तापमान चाहिए। चमकीली धूप धान के लिए वरदान है। इस फसल के लिए 150 सेमी वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। साथ ही इसके खेत में 10 से 15 सेमी ऊँचाई तक पानी खड़ा रहना चाहिए। अत: इसे पानी की अधिक आवश्यकता होती है। यह चीकायुक्त मिट्टी, जो ज्यादा समय तक आर्द्रता धारण कर सकती है, में पनपती है। इस तरह की मिट्टी नदी-घाटियों, नदी डेल्टाओं तथा सागरीय तटों के निकट मिलती है। धान की खेती के लिए अधिक मात्रा में श्रमिकों की आवश्यकता होती है। इसकी फसल के लिए सुपर फॉस्फेट, उर्वरक आदि की जरूरत पड़ती है। कुछ देश वर्ष में धान की 2 या 3 फसलें उगाते हैं। उत्तर भारत में एक तथा दक्षिण भारत में किसान धान की दो फसलें उगाते हैं।

(iii) **कृषि विकास :** जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ कृषि उत्पादन में भी वृद्धि हुई। लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कृषि के सुधरे और वैज्ञानिक तरीकों का विकास हुआ। नवीन तकनीक पर आधारित नई कृषि मशीनों, उच्च उत्पादन देने वाले बीजों, सिंचाई के साधनों; जैसे—नलकूप, स्प्रिंकल, नहरें आदि का विकास किया गया। इसके अलावा उर्वरक, चकबंदी, कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना, सरकारी संस्थाएँ अनेक कृषि क्रांतियाँ; जैसे—श्वेत क्रांति (दुग्ध उत्पादन), नीली क्रांति (मछली उत्पादन), गुलाबी क्रांति (झींगा उत्पादन), लाल क्रांति (मांस उत्पादन), हरित क्रांति (गेहूँ उत्पादन) आदि कृषि विकास के अन्य साधन हैं। कृषि विकास

विकसित और विकासशील देशों की आर्थिक स्थिति में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

(iv) **संयुक्त राज्य अमेरिका का एक कृषि फार्म :** रोहिन्टन बुश यू. एस.ए. के. प्रेयरी प्रदेश का एक कृषक है। वह 300 एकड़ जमीन का मालिक है। वह विशेषकर गेहूँ की खेती करता है। फार्म पर स्थित उसका घर बिजली, नलकूप, स्प्रिंकलर, कीटनाशक, ट्रैक्टर, बीज बोने वाली मशीन, कल्टीवेटर, हैरो, हार्वेस्टर आदि आधुनिक सुविधाओं से युक्त है।

वह हमेशा भूमि के उपजाऊपन के प्रति सजग रहता है। इसलिए खेत से दो फसल लेने के बाद वह मिट्टी के नमूने, तत्त्वों की जाँच के लिए मृदा परीक्षणशाला को भेजता है तथा कृषि विशेषज्ञों से परामर्श लेता है। वह कृषि कार्यों में अपने परिवार के सदस्यों की मदद नहीं लेता, क्योंकि वह मशीनीकृत खेती करता है, जिसमें उसकी सहायता के लिए प्रबंधक, मजदूर, तकनीशियन आदि हैं। उसके फार्म पर एक कंप्यूटर सैट भी है, जिसमें उसके पास इंटरनेट सुविधा है। वह इसके द्वारा कृषि संबंधी हर चीज को जानता है। वह स्वयं को एक व्यापारी मानता है, न कि एक किसान। वह अपने उत्पादों से बड़ी रकम पाता है, इसीलिए उसका रहन-सहन का स्तर अति उच्च है।

4. कारण बताइए :

(i) क्योंकि यहाँ वार्षिक वर्षा का औसत 200 सेमी से अधिक होता है।

(ii) क्योंकि यहाँ कृषकों तथा श्रमिकों को राज्य सरकार वेतन देती है तथा कृषि में आने वाली सभी लागत (खर्चों) को सरकार वहन करती है। इसके अतिरिक्त सरकार किसानों और श्रमिकों के परिवारों की देखभाल की जिम्मेदारी भी लेती है।

(iii) क्योंकि वह मशीनीकृत खेती करती है, जिसमें उसकी सहायता के लिए प्रबंधक, मजदूर, तकनीशियन आदि हैं।

5. निम्नलिखित शब्दों को समझाइए :

(i) **मत्स्य विज्ञान :** मत्स्य पालन से संबंधित ज्ञान अथवा प्रशिक्षण संबंधित ज्ञान मत्स्य विज्ञान कहलाता है।

(ii) **रेशम विज्ञान :** रेशम के कीटों को पालने से संबंधित ज्ञान रेशम विज्ञान कहलाता है।

(iii) **पशुपालन :** कुछ पालतू तथा घरेलू जानवर, जिन्हें पालने से हमें लाभ प्राप्त होता है अर्थात् दूध, खाल, मांस, अंडे, ऊन आदि प्राप्त होते हैं; को पालना पशुपालन कहलाता है।

(iv) **सामाजिक वानिकी :** सामाजिक वानिकी से अर्थ खाली पड़े स्थानों पर फलदार वृक्ष लगाने से है, जिससे पर्यावरण की सुरक्षा के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की वृद्धि हो।

(v) **अंगूर की खेती :** अंगूर की खेती को विटिकल्चर कहते हैं। इस प्रकार की खेती फ्रांस, इटली, स्पेन तथा भूमध्यसागरीय क्षेत्र के कई देशों में की जाती है। इससे शराब उद्योग को कच्चा माल प्राप्त होता है।

6 उद्योग

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) फ्लैक्स (ii) (b) सूती वस्त्र उद्योग

(iii) (a) यू.एस.ए. (iv) (a) सार्वजनिक उपक्रम

(v) (b) जापान (vi) (a) लौह-इस्पात उद्योग

(vii) (c) सहकारी क्षेत्र का

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
टाटा लौह एवं इस्पात कारखाना	बिहार
भारतीय लौह एवं इस्पात कारखाना	पश्चिम बंगाल
मैसूर लौह एवं इस्पात कारखाना	कर्नाटक
राऊरकेला इस्पात कारखाना	उड़ीसा
भिलाई इस्पात कारखाना	छत्तीसगढ़
बोकारो इस्पात लिमिटेड	झारखंड
सलेम इस्पात लिमिटेड	तमिलनाडु
विजयनगर इस्पात लिमिटेड	कर्नाटक

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) असत्य (v) असत्य (vi) सत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) उद्योग वे निर्माण इकाइयाँ हैं, जो कच्चे माल को अंतिम उत्पाद में परिवर्तित करते हैं और इस प्रक्रिया को विनिर्माण कहते हैं।

(ii) कच्चा माल, श्रम, जल, बाजार, पूँजी, यातायात, ऊर्जा के स्रोत।

(iii) चाय, चीनी, वस्त्र, कागज, पटसन (जूट), घी, तेल, चमड़ा, दुग्ध उद्योग आदि।

(iv) लोहा तथा इस्पात, सीमेंट, हीरा कटिंग, ऑटोमोबाइल, रीयल एस्टेट आदि।

(v) ऐसे उद्योग जिनमें लघु स्तर पर पूँजी, श्रमिक, कच्चा माल, भूखंड आदि की आवश्यकता पड़ती है तथा जो घर पर ही शुरू किए जा सकते हैं, कुटीर उद्योग कहलाते हैं; जैसे-पॉटरी, टोकरी बुनना तथा हस्तकला से निर्मित वस्तुएँ।

(vi) पूर्वी–उत्तरी अमेरिका, पश्चिमी और मध्य यूरोप तथा पूर्वी एशिया।

(vii) जमशेद जी टाटा ने।

(viii) इस्पात का उपयोग तार, कृषि यंत्र, औजार, मोटर कार, रेलगाड़ियाँ, रेलवे इंजन, पानी के जहाज (जलयान), विभिन्न प्रकार के इंजन, मशीनें, रेल की पटरियाँ, पुल, बिजली के खंभे, विद्युत उपकरण, पिन, सुइयाँ, पाइप, इमारतें, चारपाई आदि बनाने में किया जाता है।

(ix) बंगलुरू।

2. सात पंक्तियों में उत्तर :

(i) आकार पर आधारित उद्योगों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है–भारी उद्योग तथा लघु उद्योग।

(अ) भारी उद्योग : ऐसे उद्योग जिनमें बड़ी मात्रा में श्रमिकों, पूँजी, भूखंड, भारी मशीनों, कुशल और शिक्षित कर्मचारी, तकनीशियन (इंजीनियर, वैज्ञानिक), कच्चा माल तथा परिवहन के साधनों की व्यवस्था की आवश्यकता पड़ती है, भारी उद्योग कहलाते हैं। इस्पात तथा लोहा उद्योग, वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग आदि ऐसे ही उद्योग हैं।

(ब) लघु उद्योग : वे उद्योग, जिनमें लघु स्तर पर भूखंड, पूँजी, श्रमिक, कच्चा माल आदि की आवश्यकता पड़ती है, लघु उद्योग कहलाते है; जैसे–दुकान, पुस्तक प्रकाशन, साइकिल के पुर्जे, काँच, सल्फर (चीनी), रेशम वस्त्र की बुनाई आदि। कुटीर उद्योग भी लघु उद्योगों की पूँजी में आते हैं; जैसे–पॉटरी, टोकरी बुनना तथा हस्तकला से निर्मित वस्तुएँ।

(ii)

क्र.सं.	निजी क्षेत्र के उद्योग	सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग
1.	किसी व्यक्ति या कई व्यक्तियों द्वारा मिलकर चलाए जाने वाले उद्योग निजी क्षेत्र के उद्योग कहलाते हैं।	केंद्रीय या राज्य सरकारों द्वारा चलाए जाने वाले उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग कहलाते हैं।
2.	उदाहरण–मवाना शुगर मिल्स, मवाना; टाटा मोटर्स; मोदी कॉन्टीनेन्टल टायर आदि।	उदाहरण–भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स लिमिटेड, गैस ऑथोरिटी इंडिया लिमिटेड, बोकारो स्टील्स लिमिटेड आदि।

(iii) **भारत के औद्योगिक क्षेत्र :**

उत्तरी क्षेत्र : दिल्ली, गुड़गाँव, मेरठ, हरिद्वार, रूद्रपुर, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, बनारस।

दक्षिणी क्षेत्र : चेन्नई, हैदराबाद, बंगलुरू, कोल्लम, त्रिवेन्द्रम, मदुरै, विजयवाड़ा, कोयम्बटूर, विशाखापत्तनम।

पश्चिमी क्षेत्र : मुंबई, पूना, वड़ोदरा, अहमदाबाद, सूरत।

पूर्वी क्षेत्र : कोलकाता, आसनसोल, बर्दवान।

(iv) **भारत के प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण इस्पात एवं लौह उद्योग :**

(1) टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (TISCO) साकची, सिंहभूमि, जमशेदपुर (बिहार)।

(2) इंडियन आयरन एंड स्टील कम्पनी (ISCO) कुल्टी (पश्चिमी बंगाल)।

(3) मैसूर आयरन एंड स्टील कम्पनी (MISCO), भद्रावती (कर्नाटक)।

(4) राउरकेला स्टील प्लांट, राउरकेला (ओडिशा)।

(5) भिलाई स्टील पलांट, भिलाई (छत्तीसगढ़)।

(6) बोकारो स्टील प्लांट लिमिटेड, बोकारो (झारखंड)।

(7) सलेम स्टील प्लांट, सलेम (तमिलनाडु)।

(8) विशाखापत्तनम स्टील प्लांट, विशाखापत्तनम (आंध्र प्रदेश)।

(9) दुर्गापुर स्टील प्लांट, दुर्गापुर (पश्चिमी बंगाल)।

(10) विजयनगर स्टील प्लांट, हास्पेट (कर्नाटक)।

(v) **भारत में सूती वस्त्र उद्योग :**

महाराष्ट्र : मुंबई, नागपुर, पूना, वर्धा, अमरावती, अकोला, कोल्हापुर, शोलापुर, सांगली, जलगाँव।

गुजरात : अहमदाबाद, सूरत, भावनगर, वड़ोदरा, पोरबंदर, भड़ौच, राजकोट, ककोल।

मध्य प्रदेश : इंदौर, देवास, ग्वालियर, रतलाम, मन्दसौर।

उत्तर प्रदेश : आगरा, मोदीनगर, लखनऊ, वाराणसी, मेरठ, पिलखुवा, सरधना, खेखड़ा, अलीगढ़।

तमिलनाडु : कोयम्बटूर, मदुरै, चेन्नई, त्रिचिरापल्ली, तन्जौर।

पश्चिम बंगाल : हुगली, हावड़ा।

आंध्र प्रदेश : हैदराबाद, वारंगल, सिकंदराबाद, गुन्टुर।

पंजाब : फगवाड़ा, अमृतसर, लुधियाना।

कर्नाटक : मैसूर, बंगलुरू, बेलगाँव, बेलारी, गुन्टुर।

राजस्थान : अजमेर, जयपुर, ब्यावर, भीलवाड़ा, कोटा, किशनगढ़।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **उद्योगों की स्थापना के कारण :**

(1) कच्चा माल : उद्योगों की स्थापना के लिए सस्ता यातायात और कच्चे माल के स्रोत महत्त्वपूर्ण कारक हैं। बड़े पैमाने पर सामान के निर्माण के लिए कम समय में कच्चे माल की आसानी से लगातार पूर्ति जरूरी है। कुछ कच्चा माल बहुत जल्दी सड़कर खराब हो जाता है, इसीलिए उससे तैयार किए जाने वाले पदार्थों के कारखाने उसके बहुत पास स्थापित किए जाते हैं। उदाहरण के लिए—दूध तथा फलों से बनने वाले पदार्थों के कारखाने।

(2) श्रम : उद्योगों में अनेक कार्यों को करने के लिए बहुत-से कुशल, अद्‌र्ध-कुशल और अकुशल कर्मचारियों और श्रमिकों की आवश्यकता होती है।

(3) जल : उद्योगों की स्थापना के लिए साफ और ताजे जल की पूर्ति नितांत आवश्यक है। इसीलिए अधिकांश बड़ी औद्योगिक इकाइयों को नदियों के पास स्थापित किया गया है।

(4) बाजार : तैयार माल को बेचने के लिए बाजार की आवश्यकता होती है ताकि उसकी खपत का प्रबंध किया जा सके।

(5) पूँजी : पूँजी या धन उद्योगों की स्थापना के लिए एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कारक है। उद्योगपतियों को उद्योगों को चलाने के लिए कच्चा माल खरीदने और कर्मचारियों और श्रमिकों का वेतन देने के अलावा बिजली का बिल चुकाने के लिए पूँजी की आवश्यकता होती है।

(6) यातायात : कच्चा माल, श्रमिकों, ईंधन; जैसे—कोयला, तेल आदि को कारखानों तक पहुँचाने तथा तैयार माल को बाजारों तक लाने के लिए परिवहन के साधनों की आवश्यकता होती है।

(7) ऊर्जा के स्रोत : कारखानों को चलाने के लिए कोयला, विद्युत, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस जैसे ईंधनों की आवश्यकता होती है, जिन्हें ऊर्जा के स्रोत कहते हैं। इस्पात तथा लोहा उद्योग जैसी इकाइयों को कोयले की अत्यधिक आवश्यकता पड़ती है।

(ii) अहमदाबाद में सूती वस्त्र उद्योग की स्थापना की गई क्योंकि यह नगर गुजरात में साबरमती नदी पर स्थित है। गुजरात में भारत की सर्वाधिक कपास पैदा होती है तथा इसकी जलवायु नम है, जो सूत की कताई और बुनाई के लिए उपयुक्त है। कुशल और अद्‌र्धकुशल कारीगर, रेलों तथा सड़कों का जाल, वायुपत्तन, मुंबई के बंदरगाह तक आसानी से पहुँचाना तथा पंजाब, हरियाणा आदि राज्यों में स्थित बाजार के अलावा निर्यात की सुविधाएँ आदि अहमदाबाद में सूती वस्त्र मिलों के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण कारक हैं।

(iii) **बंगलुरू तथा सिलिकॉन घाटी के आई.टी.उद्योग में समानताएँ :**

(1) बंगलुरू में चूनारहित वातावरण तथा रहन-सहन पर खर्चा कम आता है तथा सिलिकॉन घाटी में भी वातावरण सुखद और साफ है, जिससे आई.टी. सेक्टर का काफी हद तक विस्तार हुआ है।

(2) बंगलुरू में आई.टी कार्यक्रमों को संचालित करने के लिए बड़ी संख्या में प्रशिक्षित अनुभवी तथा कुशल प्रबंधक हैं तथा सिलिकॉन घाटी में भी अनेक अनुक्रियाओं को संपन्न करने के लिए कुशल कर्मचारी और तकनीशियन आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं।

(3) बंगलुरू शहर में इंजीनियरिंग की आई.टी. शाखा की शिक्षा प्राप्त करने के लिए बड़ी संख्या में शैक्षणिक संस्थान और कॉलेज हैं तथा सिलिकॉन घाटी में भी कुछ सबसे अधिक विकसित वैज्ञानिक और औद्योगिक केंद्र स्थित हैं।

4. कारण बताइए :

(i) महाराष्ट्र और गुजरात की जलवायु नम होने के कारण, रेलों तथा सड़कों का जाल, बंदरगाह, वायुपत्तन आदि के कारण सूती वस्त्र उद्योग मुख्यतया महाराष्ट्र और गुजरात में स्थित हैं।

(ii) क्योंकि चीनी उद्योग के लिए आवश्यक कच्चा माल (गन्ना) तथा श्रमिक उत्तर प्रदेश में बहुतायत में प्राप्त होते हैं।

(iii) क्योंकि बड़े उद्योगों को चलाने के लिए उद्योगपतियों को बड़ी मात्रा में कच्चा माल खरीदने, भारी मशीनों को खरीदने, परिवहन के साधनों, श्रमिकों का वेतन, भूखंड, बिजली का बिल आदि को चुकाने के लिए अत्यधिक वित्त की आवश्यकता पड़ती है। अतः बड़े उद्योगों की स्थापना के लिए सरकारी वित्तीय सहायता ली जाती है।

रचनात्मक निर्धारण

7 जनसंख्या

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (d) जनसंख्या (ii) (b) उत्तरी गोलार्द्ध में

(iii) (a) चीन (iv) (b) जापान में

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) वितरण (ii) बड़े पैमाने पर (iii) चार

(iv) 500 (v) परिवर्तन

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
केरल	भारत में सर्वाधिक साक्षरता वाला राज्य
चीन	विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला देश
भारत	विश्व का दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश
पश्चिमी बंगाल	भारत में सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला राज्य
बांग्लादेश	विश्व का सर्वाधिक जनघनत्व वाला देश
ऑस्ट्रेलिया	विश्व का निम्न जनघनत्व वाला महाद्वीप
एशिया	विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या 3720 मिलियन वाला महाद्वीप
कुवैत	विश्व का सर्वाधिक निम्न साक्षरता वाला देश

4. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) असत्य (v) असत्य

5. निम्नलिखित प्रत्येक कथन के लिए एक शब्द लिखिए :

(i) जन्म-दर (ii) जनगणना (iii) मृत्यु-दर

(iv) प्राकृतिक वृद्धि दर

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) किसी राज्य, देश या शहर में निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या को जनसंख्या कहते हैं।

(ii) जनसंख्या में वृद्धि तथा कमी होने को जनसंख्या परिवर्तन कहते हैं।

(iii) प्रति 1000 व्यक्तियों में जन्म लेने वाली जनसंख्या को जन्म-दर कहते हैं।

(iv) प्रति 1000 व्यक्तियों में मृत्यु होने वाली जनसंख्या को मृत्यु-दर कहते हैं।

(v) किसी क्षेत्र के प्रति वर्ग किमी में निवास करने वाली जनसंख्या को जनसंख्या घनत्व कहते हैं।

(vi) भारत का जनसंख्या घनत्व 324 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है।

(vii) किसी देश की जन्म दर और मृत्यु दर के अंतर को प्राकृतिक वृद्धि दर कहते हैं।

(viii) पढ़ने-लिखने को साक्षरता कहते हैं।

2. 6 पंक्तियों में उत्तर :

(i) विश्व में जनसंख्या का वितरण असमान है। अधिकांश जनसंख्या उत्तरी गोलार्द्ध के भागों में निवास करती है; जैसे-पूर्वी और दक्षिणी एशिया, संयुक्त राज्य अमेरिका, पश्चिमी यूरोप आदि। पूर्वी और दक्षिणी एशिया में प्राचीनकाल से ही जनसंख्या सघन रही है। विश्व की 57% जनसंख्या रूस सहित एशिया महाद्वीप में निवास करती है। चीन विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राष्ट्र है, जहाँ विश्व की 21% जनसंख्या निवास करती है। चीन के बाद विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला दूसरा देश भारत है। उच्च अक्षांशों में स्थित क्षेत्रों (ग्रीनलैंड, अंटार्कटिका, उत्तरी साइबेरिया), ध्रुवीय प्रदेशों; जैसे-टुंड्रा; मरुस्थलों (सहारा, गोबी, अटाकामा, थार, कालाहारी, अरेबिया), आल्पस, रॉकी तथा एंडीज जैसे पर्वतीय क्षेत्रों और पामीर तथा तिब्बत जैसी पठार-भूमियों में बहुत ही कम जनसंख्या निवास करती है।

(ii) **महाद्वीपानुसार जनसंख्या वितरण :**

महाद्वीप	जनसंख्या (मिलियन में)	औसत घनत्व/ वर्ग किमी	विश्व जन-संख्या का %
एशिया	3720	137.0	60.600
अफ्रीका	818	46.0	13.300
यूरोप	727	32.0	11.800
उ. अमेरिका	416	17.0	6.800
द. अमेरिका	350	19.0	5.700
ऑस्ट्रेलिया	31	3.0	0.005

(iii) विश्व में जनसंख्या घनत्व के निम्नलिखित चार क्षेत्र हैं

(अ) उच्च जनघनत्व वाले क्षेत्र : गंगा और सिंधु के मैदान (भारत), यांगटी सीक्यांग तथा मीक्यांग नदियों की घाटियाँ और बेसिन (चीन), जाफन और यूरोप की औद्योगिक पेटी (बैल्ट), अफ्रीका की नील नदी की घाटी; पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका।

(ब) मध्यम जनघनत्व वाले क्षेत्र : पूर्वी यूरोप, हिन्द-चीन के मैदानी क्षेत्र, उत्तर अमेरिका का मिसीसिपी का मैदान, अल्जीरिया, नाइजीरिया तथा दक्षिण अफ्रीका (अफ्रीका), ब्राजील के तटीय प्रदेश तथा मध्य चिली (दक्षिण अमेरिका)।

(स) आंशिक जनघनत्व वाले क्षेत्र : अंटार्कटिका, ग्रीनलैंड, टुंड्रा, मध्य एशिया में मंगोलिया, सहारा, कालाहारी, अरब अटाकामा आदि, मरुस्थल, अमेजन और कांगो बेसिन, ऊँचे पर्वतीय प्रदेश तथा पठार।

(द) अति अल्प जनघनत्व वाले क्षेत्र : उत्तरी यूरोप, पश्चिमी एशिया, मालागासी, सूडान, कनाडा तथा दक्षिण साइबेरिया।

(iv) लोगों का किन्हीं क्षेत्रों से अन्य क्षेत्रों को जाना तथा उनमें अन्य क्षेत्रों

से आना प्रवर्जन कहलाता है। राष्ट्रीय और राज्य प्रवर्जन के कारण विवाह, नौकरी, व्यापार आदि हैं। लोग अविकसित या विकासशील देशों से रोजगार की तलाश या सगे-संबंधियों से मिलने के लिए विकसित देशों की ओर प्रवर्जन करते हैं। गाँवों के लोग रोजगार, व्यापार और शिक्षा की तलाश में तथा वातावरण परिवर्तन के लिए शहरों की ओर पलायन करते हैं।

(v) **भारत में लिंगानुपात :** (2001 ई. की जनगणना के अनुसार) भारत में 1901 ई. में लिंगानुपात 972 और 2001 ई. में 933 था। केरल राज्य में लिंगानुपात सर्वाधिक 1058 तथा हरियाणा में सबसे कम 861 है जबकि संघशासित प्रदेशों में दमन और दीव में सबसे कम 709 तथा सर्वाधिक पुडुचेरी में 1001 है। भारत में महिलाओं की दयनीय सामाजिक और आर्थिक दशाओं के कारण लिंगानुपात पुरुषों के पक्ष में है।

(vi) **भारत में शहरीकरण के कारण :** ग्रामीण जनसंख्या रोजगार और व्यापार के अवसरों की तलाश में शहरों की ओर पलायन करती है। औद्योगिक केंद्र शहरों में तब्दील हो जाते हैं।

शहरों में बसने के लिए ग्रामीणों को उच्च जीवन-स्तर, शिक्षा, स्वास्थ्य, निरंतर जलापूर्ति तथा विद्युत आदि कारक आकर्षित करते हैं।

शहरों में आपसी मतभेद कम-से-कम होता है। वहाँ छुआछूत, जातिवाद जैसी बुराइयाँ भी देखने में नहीं आती हैं।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) जनसंख्या घनत्व और वितरण को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं–

(1) स्थलाकृति : उपजाऊ तथा समतल मैदान, जहाँ जलापूर्ति अविरल और बड़ी मात्रा में होती है, सघन जनसंख्या वाले क्षेत्र हैं। नदी-घाटियों और समुद्री तटों की ओर लोग सम जलवायु, मछली उत्पादन, जल परिवहन, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार तथा समुद्री उत्पादों के कारण बसने के लिए आकर्षित होते हैं। इसके विपरीत, मरुस्थलों

और पहाड़ों पर लोग इसलिए कम बसते हैं क्योंकि वहाँ उबड़-खाबड़ जमीन, गर्म/ठंडी जलवायु तथा वृक्ष कटान और पत्तियों के संग्रह करने जैसे असंगठित व्यवसायों आदि का होना है।

(2) जलवायु : सम जलवायु और उचित मात्रा में वर्षा वाले क्षेत्र लोगों को बड़ी मात्रा में बसने के लिए आकर्षित करते हैं। मानसूनी और उष्ण कटिबंधीय जलवायु वाले क्षेत्रों; जैसे–एशिया, पश्चिमी यूरोप तथा पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका में सघन जनसंख्या पाई जाती है जबकि सहारा, कालाहारी, थार जैसे मरुस्थलीय क्षेत्रों में उच्च तापमान और गर्म जलवायु के कारण विरल जनसंख्या पाई जाती है।

(3) मिट्टी : लावायुक्त काँप मिट्टी पौधों को आवश्यक और महत्त्वपूर्ण पोषक तत्त्वों की पूर्ति करती है, जिससे इस मिट्टी में अन्न, फल, तिलहन आदि की फसलें उगाई जाती हैं और यही कारण है कि कम उपजाऊ लाल, रेतीली तथा मरुस्थलीय और पर्वतीय मिट्टी वाले क्षेत्रों की तुलना में लावायुक्त काँप मिट्टी वाले क्षेत्रों में ज्यादा जनसंख्या निवास करती है।

(4) खनिज : खनिजों से भरपूर क्षेत्र बड़ी संख्या में लोगों को बसने के लिए आकर्षित करते हैं क्योंकि किसी राष्ट्र की उन्नति और विकास कोयला, पेट्रोलियम, धातु अयस्कों तथा अधातुओं आदि पर निर्भर करते हैं। खनन कार्य बड़ी संख्या में कुशल और अकुशल श्रमिकों, इंजीनियरों तथा तकनीशियनों को रोजगार उपलब्ध कराता है।

(5) ऊर्जा परिवहन के साधन : विभिन्न क्षेत्रों, विशेषकर पठारों और मैदानों में रेलों, सड़कों तथा नहरों का जाल बिछा है, जो उद्योगों और जनता को ऊर्जा और परिवहन की सुविधाएँ उपलब्ध कराता है और इसी कारण से इन क्षेत्रों में घनी जनसंख्या पाई जाती है।

(6) जलस्रोत : मानव जाति के बसाव के लिए जल सबसे प्रमुख आवश्यकता है, इसीलिए बड़े पैमाने पर जलापूर्ति वाले क्षेत्रों में सघन जनसंख्या निवास करती है।

(7) सरकारी नीतियाँ : कभी-कभी राज्य या केंद्र सरकार विशेष क्षेत्रों को विशेष समुदायों के बसाव के लिए आरक्षित रखती है, जिसका परिणाम यह होता है कि वहाँ कम जनसंख्या बसती है।

(ii) **विश्व जनसंख्या घनत्व :** किसी देश की जनसंख्या एवं भूमि के पारस्परिक अनुपात को जनसंख्या का घनत्व कहते हैं। विश्व का औसत जनसंख्या घनत्व 45 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। जनसंख्या घनत्व की दृष्टि से विश्व को निम्नलिखित चार क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है–

(अ) उच्च जनघनत्व वाले क्षेत्र : गंगा और सिंधु के मैदान (भारत), यांगटी सीक्यांग तथा मीक्यांग नदियों की घाटियाँ और बेसिन (चीन), जाफन और यूरोप की औद्योगिक पेटी (बैल्ट), अफ्रीका की नील नदी की घाटी; पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका।

(ब) मध्यम जनघनत्व वाले क्षेत्र : पूर्वी यूरोप, हिन्द-चीन के मैदानी क्षेत्र, उत्तर अमेरिका का मिसीसिपी का मैदान, अल्जीरिया, नाइजीरिया तथा दक्षिण अफ्रीका (अफ्रीका), ब्राजील के तटीय प्रदेश तथा मध्य चिली (दक्षिण अमेरिका)।

(स) आंशिक जनघनत्व वाले क्षेत्र : अंटार्कटिका, ग्रीनलैंड, टुंड्रा, मध्य एशिया में मंगोलिया, सहारा, कालाहारी, अरब अटाकामा आदि, मरुस्थल, अमेजन और कांगो बेसिन, ऊँचे पर्वतीय प्रदेश तथा पठार।

(द) अति अल्प जनघनत्व वाले क्षेत्र : उत्तरी यूरोप, पश्चिमी एशिया, मालागासी, सूडान, कनाडा तथा दक्षिण साइबेरिया।

(iii) **विश्व की व्यावसायिक संरचना :** विश्व की कार्यशील जनसंख्या राष्ट्रों के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। एशिया, अफ्रीका तथा दक्षिण अमेरिका के विकासशील देशों में जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग प्राथमिक व्यवसायों में संलग्न है। भारत, थाइलैंड, पाकिस्तान, ईरान, इराक, मिस्र, मलेशिया, इंडोनेशिया, श्रीलंका, म्यांमार आदि विकासशील देशों के निवासी प्राथमिक और तृतीय व्यवसायों में लगे हुए हैं।

4. निम्नलिखित में भेद कीजिए :

(i) **जन्म-दर तथा मृत्यु-दर**

क्र.सं.	जन्म-दर	मृत्यु-दर
1.	प्रति 1000 व्यक्तियों में जन्म लेने वाली जनसंख्या को जन्म-दर कहते हैं।	प्रति 1000 व्यक्तियों में मृत्यु होने वाली जनसंख्या को मृत्यु-दर कहते हैं।
2.	1991-2000 के दौरान जन्म-दर 30.97 थी।	1991-2000 के दौरान मृत्यु-दर 10.8 थी।

(ii) **ग्रामीण तथा शहरी जनसंख्या**

ग्रामीण जनसंख्या	शहरी जनसंख्या
गाँवों में निवास करने वाली जनता ग्रामीण जनसंख्या कहलाती है।	शहरों में निवास करने वाली जनता शहरी जनसंख्या कहलाती है।

(iii) **उत्प्रवासी तथा आप्रवासी**

उत्प्रवासी	अप्रवासी
जो लोग अपना देश छोड़कर विदेशों के लिए प्रवर्जन करते हैं, उत्प्रवासी कहलाते हैं।	जो लोग अन्य देशों को छोड़कर अपने देश में प्रवेश करते हैं, आप्रवासी कहलाते हैं।

(iv) **बाल हत्या तथा भ्रूण हत्या**

बालहत्या	भ्रूण हत्या
छोटे बालकों अर्थात् बच्चों की हत्या करना, बाल हत्या कहलाती है।	माता के गर्भ में ही भ्रूण (शिशु) की हत्या, भ्रूण हत्या कहलाती है।

8 आपदाएँ

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (d) सभी

(ii) (a) मंद गति से होने वाली प्राकृतिक आपदा

(iii) (b) गुजरात (iv) (a) सूखा

(v) (b) उत्तरी गोलार्द्ध में (vi) (b) पहाड़ियों में

(vii) (a) 3 दिसंबर 1984

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) खोखला (ii) तरंगें (iii) भू-स्खलन

(iv) भूकंप संबंधी

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
प्राकृतिक विपदा अनुसंधान केंद्र	आई.आई.टी. खड़गपुर
हिमानी	ऊँचे पर्वत
टाइफून	एशिया के पूर्वी तट
हरीकेन	उत्तरी अमेरिका
होरनेडो	वेस्टइंडीज
चक्रवात	उत्तरी गोलार्द्ध

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) प्रकृति या मानव-जनित भयंकर घटना आपदा कहलाती है।

(ii) आपदाएँ दो प्रकार की होती हैं—प्राकृतिक आपदाएँ, मानव-निर्मित आपदाएँ।

(iii) धरातल की आंतरिक गतिविधियों एवं हलचल के कारण धरती के हिलने या काँपने को भूकंप कहते हैं।

(iv) भूकंप लेखी यंत्र से भूकंप की स्थिति और शक्ति (तीव्रता) का पता लगाया जाता है। यह रिएक्टर पैमाने पर नोट किया जाता है।

(v) ज्वालामुखी के मुँह से निकलता दहकता हुआ लाल रंग का पिघला हुआ पदार्थ लावा (मैग्मा) कहलाता है।

(vi) ज्वालामुखी लगभग शंक्वाकार पर्वत है, जो भूगर्भ से नली के द्वारा उष्ण वाष्प, जैसे लावा तथा अन्य चट्टानी पदार्थों का प्रवाह धरातल पर लाता है।

(vii) जब नदी का जल अधिक होने के कारण उसके किनारों के ऊपर से होकर बहने लगता है, तो यह स्थिति बाढ़ कहलाती है।

(viii) जब किसी क्षेत्र में लंबे समय तक वर्षा, जल या नमी की कमी हो जाए तो यह स्थिति सूखा कहलाती है।

(ix) धूल, मिट्टी, तिनके, कागज के टुकड़े समेटे हुए तेज गति वाली चक्करदार हवा चक्रवाती तूफान कहलाती है।

(x) बादलों के फटने की स्थिति उत्पन्न होने पर जल तीव्र गति के साथ धरातल पर गिरता है। यह आकाश में बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न करता है। यही मेघ विस्फोट कहलाता है।

(xi) भू-स्खलन एक प्राकृतिक अभिक्रिया है, जिसमें पर्वतीय ढालों पर विशालकाय भूखंड नीचे की ओर खिसकने लगते हैं।

(xii) बाढ़ के लिए।

(xiii) बिहार, असम, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु एवं कर्नाटक आदि।

2. 5 पंक्तियों में उत्तर :

(i) प्रकृति-जनित आपदाओं को प्राकृतिक आपदाएँ कहते हैं। इन आपदाओं की उत्पत्ति का कारण प्रकृति में होने वाले परिवर्तन हैं। भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट, बाढ़, सूखा, चक्रवात, भूस्खलन,

सुनामी, बादल विस्फोट आदि कुछ इसी प्रकार की प्राकृतिक आपदाएँ हैं।

(ii) **भूकंप के प्रभाव :**

लाभ : (1) कभी-कभी ज्वालामुखी विस्फोट के साथ लावा बाहर निकल आता है, जो मिट्टी को उपजाऊ बनाता है।

(2) भूकंप धरातल को कई स्थलाकृतियों का रूप प्रदान करता है; जैसे–द्वीप, पठार, झीलें आदि।

हानियाँ : भूकंप प्राकृतिक आपदाओं में सबसे अधिक हानिकारक है, जिनके कारण क्षणभर में बड़े स्तर पर जीवों और निर्जीवों का विनाश होता है। इनसे होने वाली प्रमुख हानियाँ निम्नलिखित हैं–

(1) भूकंप नदियों के मार्गों को बदल देते हैं।

(2) विशालकाय निर्माण; जैसे–बहुमंजिलें भवन, पुल, मीनारें, सड़के, रेलवे, मार्ग आदि का विनाश भूकंप के द्वारा हो जाता है

(iii) **भूकंप का पूर्वानुमान और मापन :** भूकंप लेखी यंत्र से भूकंप की स्थिति और शक्ति (तीव्रता) का प्रता लगाया जाता है। यह रिएक्टर पैमाने पर नोट किया जाता है। भूकंप लेखी यंत्र द्वारा भूकंप की स्थिति और तीव्रता को कागज पर रेखाओं के रूप में अंकित किया जाता है, जिसकी मदद से हम भूकंप की दिशा तथा कंपनों के उद्‌गम केंद्र को पहचान सकते हैं। आगे बढ़ने वाली भूकंपीय तरंगे सबसे अधिक अधिकेंद्र को प्रभावित करती हैं।

मौसम की पूर्व घोषणा को टेलीविजन और रेडियो के माध्यम से लोगों को प्रेषित किया जाता है, जिससे लोग भूकंप आने से पहले ही सतर्क हो जाते हैं।

(iv) **भू-स्खलन के प्रभाव :**

(1) यह पहाड़ी ढलानों पर बसे गाँवों को उजाड़ता तथा नष्ट करता है।

(2) भू-स्खलन से सड़कों, रेलमार्गों, पगडंडियों तथा बाँधों का

विनाश होता है।

(3) भू-स्खलन से पशु, जंतु और पेड़-पौधे नष्ट हो जाते हैं और साथ ही यह पर्यावरण में असंतुलन उत्पन्न करता है।

(v) **बाढ़ आने के कारण :**

(1) भारी और लगातार होने वाली वर्षा

(2) प्राकृतिक भू-स्खलन जिसके कारण नदियों के मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं।

(3) भूकंप के कारण नदियों के मार्गों में परिवर्तन हो जाता है जिससे बाढ़ आती है।

(4) हिमपात के कारण नदियों का जल-स्तर बढ़ जाता है, जिससे जल के दबाव के कारण बाँध टूट जाते हैं और नदियों में जल की अधिकता के कारण बाढ़ आ जाती है।

(5) चक्रवाती तूफान समुद्री तटों पर अधिक मात्रा में जल जमा कर देते हैं, जो बाढ़ की स्थिति को जन्म देता है।

(6) सीमारहित वृक्ष कटान, व विनाश, मृदा अपरदन तथा पशुचारण बाढ़ के अन्य महत्त्वपूर्ण कारक हैं।

(vi) सूखे को नियंत्रित करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जाते हैं–

(1) सूखा प्रभावित क्षेत्रों में पानी की आपूर्ति करने के लिए नदियों पर बाँध तथा कृत्रिम जलाशयों या कुंडों का निर्माण करना चाहिए। भंडारित जल को फसलों की सिंचाई और पेयजल की पूर्ति के लिए उपयोग में लाना चाहिए।

(2) वनों की अबाध कटाई पर रोक लगानी चाहिए ताकि वर्षा में कमी न होने पाए।

(3) फसल-चक्र को अपनाना चाहिए तथा किसानों को सूखे से अप्रभावित फसलों को उगाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

(4) भूमिगत जल की मात्रा में वृद्धि करने के लिए बड़े पैमाने पर हरित पट्टी के विकास के लिए वृक्षारोपण होना चाहिए।

(5) सूखा प्रभावित क्षेत्रों से नहरें निकलवानी चाहिए ताकि सिंचाई और पीने के जल की आवश्यकता पूर्ति के लिए जलापूर्ति सुनिश्चित की जा सके।

(vii) **मेघ विस्फोट :** बादलों का निर्माण जलवाष्प, जलकणों तथा धूल के कणों से मिलकर होता है। बादलों का रंग भूरा, काला तथा सफेद होता है। सामान्यत: वर्षा के बादलों का रंग घना काला होता है तथा ये बादल कम ऊँचाई पर उतरते रहते हैं। जब पर्वतों के ऊपर ऊँचाई पर पर्याप्त तापमान पर जलवाष्प एकत्रित होती है तो कुछ समय तक यह क्रिया जारी रहती है। परंतु पर्वतों की ठंडी हवा के संपर्क में आने पर जलवाष्प का ताप अचानक गिर जाता है, जिसके परिणामस्वरूप जलवाष्प जलकणों में परिवर्तित हो जाती है, तो बादल के फटने या मेघ विस्फोट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और जल तीव्र गति के साथ धरातल पर जा गिरता है। यह आकाश में बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न करता है।

(viii)

क्र.सं.	टाइफून	हरीकेन
1.	दक्षिण-पूर्वी एशिया में चक्रवात को टाइफून कहते हैं।	उत्तरी अमेरिका में चक्रवाती तूफान को हरीकेन कहते हैं।
2.	यह भयंकर और विध्वंस-कारी होता है।	यह भयंकर उष्ण कटिबंधीय चक्रवात होता है।
3.	ये एशिया में, फिलीपिंस से लेकर जापान तक पूर्वी समुद्री तटों से दूर उठते हैं।	इसकी उत्पत्ति मैक्सिको की खाड़ी या कैरीनियन समुद्र से होती है।

(ix) बर्फ के नीचे सरकते हुए पहाड़ों को हिमानियाँ कहते हैं। जिन देशों में ऊँचे पर्वत पाए जाते हैं, वहाँ बर्फ के विशालकाय टुकड़े टूटकर

नीचे सरकने शुरू हो जाते हैं। ऐसी घटनाओं को हिमालयी क्षेत्रों में देखा जा सकता है। बर्फ के बड़े-बड़े टुकड़े पर्वतों से तेज हवा, भूकंप या ज्वालामुखी विस्फोट के कारण टूटकर ढलानों से नीचे की ओर खिसकने लगते हैं। इनमें शुष्क, तर तथा स्लैब हिमानियाँ होती हैं। इनका नियंत्रण पर्वतीय ढलानों पर वृक्षारोपण तथा घास लगाकर किया जा सकता है।

(x) **सुनामी का प्रभाव :** 26 दिसंबर, 2004 ई. को सुनामी ने इंडोनेशिया, सुमात्रा, मलेशिया, थाइलैंड, भारत, श्रीलंका के समुद्री तटों पर अपना कहर बरपाया था, जिसमें लगभग 2 लाख लोग मारे गए तथा बहुत बड़ी संख्या में लोग घायल हुए थे। भारत में अकेले ही 20,000 लोग मृत्यु का शिकार बने। तमिलनाडु तथा अंडमान निकोबार द्वीप समूह इससे सबसे अधिक प्रभावित हुए थे। इसके अलावा बड़ी संख्या में जलपोत, इमारतें, स्टीमर, मकान, झोंपड़ियाँ आदि भी इन लहरों के प्रहारों से नष्ट हो गए।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **भूकंप के लाभ :**

(1) कभी-कभी ज्वालामुखी के साथ लावा बाहर निकल आता है, जो मिट्टी को उपजाऊ बनाता है।

(2) भूकंप धरातल को कई स्थलाकृतियों का रूप प्रदान करता है, जैसे-द्वीप, पठार, झीलें आदि।

(3) पृथ्वी के नीचे दबी चट्टानों, जिनमें बहुत-सी धातुएँ और अधातुएँ अयस्कों के रूप में छिपी होती हैं, को भूकंप द्वारा आरोपित उद्वेग धरातल के समीप ले आता है, जिसका खनन आसानी से किया जा सकता है।

(4) भूकंप के कारण ही भूस्खलन तथा चट्टानों में टूट-फूट होती है, जिससे अपक्षय की क्रिया सरल और तीव्र हो जाती है।

(5) भूकंप के प्रभाव के कारण ही चट्टानों में भ्रंशन, विभंजन

तथा वलन होता है, जो गीजर (गर्म पानी के स्रोत) तथा आर्हिजयन कुओं को जन्म देते हैं। ये जल-स्रोत जीवन के लिए उपयोगी होते हैं।

(ii) **सूखे के प्रभाव :**

(1) सूखा प्रभावित क्षेत्रों में फसलें सूखकर नष्ट हो जाती हैं, जिससे बाढ़ आने की संभावना कम हो जाती है।

(2) पशुओं और जंगली जंतुओं को भोजन-चारे की कमी हो जाती है, जिससे वे भूख से मरने लगते हैं।

(3) ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर करती है, जो किसानों के लिए समस्याएँ पैदा करती है क्योंकि सूखे से फसलों के नष्ट हो जाने के कारण उन्हें धन प्राप्ति नहीं हो पाती और दुग्ध उत्पादन गिर जाता है।

(4) कृषि फसलों के नष्ट होने से कृषि आधारित उद्योगों को कच्चे माल की आपूर्ति नहीं हो पाती, जिससे श्रमिकों को बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है।

(5) लंबा सूखा अकाल को जन्म देता है, जिससे लोग और जानवर भूखे मर जाते हैं।

(6) सूखा प्रभावित क्षेत्रों से लोग भोजन और रोजगार की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए प्रस्थान कर जाते हैं, जो जनघनत्व में असंतुलन पैदा करता है। खेतिहर मजदूरों को काम नहीं मिल पाता है।

(7) पौधों एवं जल-जीव; जैसे-मछली, मेढक, लोबस्टार, झींगे, दरियाई घोड़े, मगरमच्छ, कछुए आदि जल के बिना जीवित नहीं रह सकते। साथ ही जल की कमी से जल-विद्युत उत्पादन तथा मत्स्य उत्पादन में भी कमी आ जाती है।

(iii) **आतंकवाद :** आतंकवाद मानव-जनित आपदा है, जिसमें लोग अपनी अवैधानिक माँगों को मनवाने के लिए हिंसा का सहारा लेते

हैं। यह एक अति गंभीर समस्या है, जिसने समाज की शांति भंग की हुई है। अपहरण करना, लूटपाट करना, लोगों को बंधक बनाकर रखना, मकानों, इमारतों, दुकानों, वाहनों, गाँवों में आग लगाना आदि ऐसी ही घटनाएँ हैं, जो आतंकवाद को जन्म देती हैं। इसके अतिरिक्त पड़ोसी देश अकसर हत्याकांड, सेना पर हमला, लड़कियों और महिलाओं का अपहरण आदि घृणित कार्यों को अंजाम देते हैं, क्योंकि वे अपने पड़ोसी देशों से द्वेष और जलन रखते हैं। आतंकवाद विश्वव्यापी समस्या है। भारत, नेपाल, अफगानिस्तान, श्रीलंका ऐसी समस्याओं से जूझ रहे हैं।

पाकिस्तान काफी समय पहले से जम्मू एवं कश्मीर में सीमा पार आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने में लगा हुआ है। भारत के असम, मिजोरम, त्रिपुरा, नागालैंड, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड राज्यों में अंतर्राजीय आतंकवादी गतिविधियाँ देखी जा सकती हैं। नक्सलियों ने 2010 में कई सौ सैनिकों, सिपाहियों और आदिवासियों को मौत के घाट उतार दिया। 1983-94 में पंजाब भी आतंकवाद का शिकार हो चुका है। इसके अलावा चीन और बांग्लादेश भी भारत के अंदर आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम दे चुके हैं। इसके अतिरिक्त पैसों के लिए वायुयान का अपहरण, मानव अपहरण, यातायात के साधनों को नष्ट करना, धार्मिक स्थानों को नुकसान पहुँचाना, हत्याकांड आदि आतंकवादी गतिविधियाँ हैं।

4. कारण स्पष्ट कीजिए :

(i) क्योंकि जब किसी स्थान पर गर्मी की अधिकता से वायुमंडलीय दाब घटता है परंतु उस स्थान के चारों ओर वायुदाब अधिक बढ़ जाता है तो अधिक दाब वाले स्थानों के बीच से वायुदाब घटने वाले स्थानों की ओर हवाएँ तेज गति से चलने लगती हैं। पृथ्वी की दैनिक गति के कारण ये हवाएँ चक्करदार रूप में चलने लगती हैं।

(ii) राजस्थान में अल्प मात्रा में वर्षण, भूमिगत जल की कमी के कारण, वायुमंडलीय तापमान में वृद्धि तथा वनों की कमी के कारण, अधिकांश भाग गर्मी के मौसम में सूख जाते हैं।

(iii) प्रशांत महासागर की तटीय पट्टी में ज्वालामुखी विस्फोट के कारण भूकंप आते रहते हैं।

इकाई II : भारत का आधुनिक इतिहास

1 भारत का आधुनिकीकरण

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) तीन कालों में (ii) (b) जेम्स मिल

(iii) (c) 1707 ई. में (iv) (b) 18वीं शताब्दी से

(v) (a) नई दिल्ली में (vi) (d) गांधीजी ने

(viii) (a) श्वेत पत्र

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
युगांतर	बंगाल
काल	महाराष्ट्र
हरिजन	गांधीजी
केसरी	तिलक

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) पाषाण (ii) राज्यों (iii) अवधि विभाजन

(iv) पुरातत्व विभाग (v) फसल उत्पादन

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) इतिहास पुराने समय में या बीते समय में घटने वाली घटनाओं का लेखा-जोखा है।

(ii) इतिहास का समय सोपानों में विभाजन अवधि विभाजन कहलाता है।

(iii) एक देश का दूसरे देश/देशों को राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के माध्यम से नियंत्रण या कब्जे में लेना, उपनिवेशवाद कहलाता है।

(iv) लिखित साक्ष्य, रिकॉर्ड, ग्रंथ, सिक्के, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, इमारतें, किले, महल तथा सरकारी दस्तावेज।

(v) गांधी जी का 'हरिजन', तिलक का 'केसरी', बंगाल के 'युगांतर' तथा संध्या, महाराष्ट्र का 'काल', 'व्हाइट पेपर' तथा भारत स्थित अंग्रेजी सरकार की विशेष विषय पर रिपोर्ट 'बंगाल गजट', 'कलकता गजट', 'द मद्रास कैरियर', 'बॉम्बे हेराल्ड', 'द ऑरियन्टल मैगजीन ऑफ कलकत्ता' आदि।

2. पाँच पंक्तियों में उत्तर :

(i) **भारत में आधुनिकीकरण :** भारत में 18वीं शताब्दी में आधुनिक युग प्रारंभ हो गया। इसी समय इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति ने भारत को प्रभावित किया और इसी के फलस्वरूप अंग्रेजों ने भारत में बहुत-सी औद्योगिक इकाइयों की स्थापना की। परंतु इसके अतिरिक्त समाज सती प्रथा तथा बाल विवाह आदि बुराइयों से ग्रस्त था। निरक्षरता के दाग को समाज से मिटाने के लिए शिक्षा के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया और इसके लिए देश में अनेक विद्यालयों और कॉलेजों की स्थापना की गयी, जिनमें अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को पढ़ाया गया। स्तरहीन कृषि और फसल उत्पादन में सुधार लाने के लिए नए-नए प्रयोग किए गए। भूमि की सिंचाई करने के लिए नहरों का निर्माण किया गया क्योंकि इससे पूर्व किसानों को खेती की सिंचाई के लिए मानसून पर निर्भर रहना

पड़ता था।

(ii) **ऐतिहासिक इमारतें :** अंग्रेजी सरकार ने प्रशासनिक दृष्टि से करीब-करीब देश के प्रत्येक कोने में अनेक इमारतों का निर्माण कराया। इन इमारतों में दिल्ली में स्थित इंडिया गेट, राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, केंद्रीय सचिवालय, राष्ट्रीय संग्रहालय, इत्यादि; मुंबई का चर्च गेट तथा गेटवे ऑफ इंडिया और कोलकाता का फोर्ट विलियम तथा विक्टोरिया मेमोरियल आदि महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक इमारतें हैं, जो आधुनिक भारतीय इतिहास की स्रोत हैं।

इसके अतिरिक्त अंग्रेजी सरकार ने पुरातत्व विभाग की स्थापना करके मध्यकालीन महलों, किलों, मकबरों, मसजिदों, प्राचीन मंदिरों आदि का संरक्षण किया।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **भारत का आधुनिक काल :** औरंगजेब की मृत्यु 1707 ई. में हुई और तभी से मुगल साम्राज्य का पतन प्रारंभ हो गया। औरंगजेब के उत्तराधिकारी निकम्मे और कमजोर थे, इसीलिए वे अपनी साम्राज्य को सही ढंग से सँभालने में असमर्थ थे। इसी बीच अन्य राजाओं और शासकों ने अपनी शक्ति और राज्य की सीमाओं में वृद्धि कर दी। इन शासकों में राजपूत, पठान, सिक्ख, मराठा आदि प्रमुख थे। इसी दौरान अनेक विदेशी व्यापारियों ने भारत की यात्राएँ कीं और यहाँ अपनी व्यापारिक कम्पनियों की स्थापना की। बाद में इन्हीं व्यापारियों ने शासकों का रूप ले लिया।

भारत में आधुनिकीकरण : भारत में 18वीं शताब्दी में आधुनिक युग प्रारंभ हो गया। इसी समय इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति ने भारत को प्रभावित किया और इसी के फलस्वरूप अंग्रेजों ने भारत में बहुत-सी औद्योगिक इकाइयों की स्थापना की। परंतु इसके अतिरिक्त समाज सती तथा बाल विवाह आदि बुराइयों से ग्रस्त था। निरक्षरता के दाग को समाज से मिटाने के लिए शिक्षा के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया और इसके लिए देश में अनेक विद्यालयों और कॉलेजों की स्थापना की गयी, जिनमें अंग्रेजी तथा

अन्य भारतीय भाषाओं को पढ़ाया गया। स्तरहीन कृषि और फसल उत्पादन में सुधार लाने के लिए नए-नए प्रयोग किए गए। भूमि की सिंचाई करने के लिए नहरों का निर्माण किया गया क्योंकि इससे पूर्व किसानों को खेती की सिंचाई के लिए मानसून पर निर्भर रहना पड़ता था।

(ii) **आधुनिक भारतीय इतिहास के महत्त्वपूर्ण स्रोत :** भारत में तथा भारत से बाहर आधुनिक भारतीय इतिहास के कुछ महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं, जो विस्तार से इसकी जानकारी देते हैं। ये स्रोत लिखित साक्ष्यों, रिकार्डों, ग्रंथों, सिक्कों, समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं, इमारतों, किलों, महलों तथा सरकारी दस्तावेजों के रूप में उपलब्ध हैं।

(अ) अंग्रेजों के कार्यालयी रिकार्ड : अंग्रेजी सरकार ने अपनी योजनाएँ, नीतियाँ, समझौते, निर्णय, निर्देश, अनुसंधान, संधियाँ, शासक आदि को कागजों पर लिखा तथा अपने विभागीय कार्यालयों में उन्हें रिकार्ड के रूप में संरक्षित रखा। महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों और सरकारी पत्रों को प्रशासनिक कार्यालयों में सावधानीपूर्वक संरक्षित किया गया। जिला स्तर पर तहसीलदार, कलक्टर तथा आयुक्त द्वारा अपने-अपने कार्यालयों में इन रिकार्डों को रिकार्ड कक्षों में संभालकर रखा गया था। संग्रहालयों तथा पुरातत्व विभाग को महत्त्वपूर्ण सरकारी रिकार्डों को संरक्षित रखने के लिए स्थापित किया गया है।

(ब) ऐतिहासिक स्मारक एवं इमारतें : अंग्रेजी सरकार ने प्रशासनिक दृष्टि से करीब-करीब देश के प्रत्येक कोने में अनेक इमारतों का निर्माण कराया। इन इमारतों में दिल्ली में स्थित इंडिया गेट, राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, केंद्रीय सचिवालय, राष्ट्रीय संग्रहालय, इत्यादि; मुंबई का चर्च गेट तथा गेटवे ऑफ इंडिया और कोलकाता का फोर्ट विलियम तथा विक्टोरिया मेमोरियल आदि महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक इमारते हैं, जो आधुनिक भारतीय इतिहास की स्रोत हैं।

इसके अतिरिक्त अंग्रेजी सरकार ने पुरातत्व विभाग की स्थापना

करके मध्यकालीन महलों, किलों, मकबरों, मसजिदों, प्राचीन मंदिरों आदि का संरक्षण किया।

(स) सिक्के : अंग्रेजी सरकार ने साम्राज्ञी विक्टोरिया तथा जेम्स द्वितीय की और अन्य ऐतिहासिक घटनाओं की तस्वीरों वाले सिक्के जारी किए। इन सिक्कों से भारत में अंग्रेजी शासन की सूचनाएँ प्राप्त करने में सहायता मिली।

(द) ग्रंथ, पत्रिकाएँ तथा समाचार-पत्र : अंग्रेजी तथा भारतीय लेखकों ने विभिन्न विषयों पर विभिन्न प्रकार की पुस्तकों, पत्रिकाओं आदि का लेखन किया जो कला, इतिहास, संगीत, नृत्य, नीतियाँ, नियम और कानूनों पर प्रकाश डालती हैं। ये सभी भारत के आधुनिक इतिहास के प्रमुख स्रोत हैं।

गांधी जी का 'हरिजन', तिलक का 'केसरी', बंगाल के 'युगांतर' तथा संध्या, महाराष्ट्र का 'काल', 'व्हाइट पेपर' तथा भारत स्थित अंग्रेजी सरकार की विशेष विषय पर रिपोर्ट 'बंगाल गजट', 'कलकता गजट', 'द मद्रास कैरियर', 'बॉम्बे हेराल्ड', 'द ऑरियन्टल मैगजीन ऑफ कलकत्ता' आदि।

4. निम्नलिखित शब्दों के विषय में लिखिए :

(i) **उपनिवेशवाद :** एक देश का दूसरे देश/देशों को राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के माध्यम से नियंत्रण या कब्जे में लेना, उपनिवेशवाद कहलाता है।

(ii) **सती प्रथा :** पति की मृत्यु होने पर उसकी पत्नी को उसकी चिता के साथ ही जला देने की प्रथा, सती प्रथा कहलाती है।

(iii) **संग्रहालय :** एक ऐसा संस्थान, जो समाज की सेवा और विकास के लिए जनसामान्य के लिए खोला जाता है और इसमें मानव और पर्यावरण की विरासतों के संरक्षण के लिए उनका संग्रह, शोध, प्रचार या प्रदर्शन किया जाता है।

(iv) **पुरातत्व :** किसी स्थान के अध्ययन के लिए अर्थात् पुरातात्विक अवशेषों को उजागर तथा अभिलेखित करना पुरातत्व कहलाता है।

2 भारत में उपनिवेशवाद

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (c) पुर्तगाली (ii) (b) वास्कोडिगामा
(iii) (c) 1602 ई. में (iv) (c) फ्रांसीसी
(v) (a) 1600 ई. में (vi) (c) पांडिचेरी
(vii) (a) जहाँगीर (viii) (b) फ्रांसीसी और अंग्रेजों के
(ix) (b) रॉबर्ट क्लाइव

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
कर्नाटक का प्रथम युद्ध	1744 ई.
कर्नाटक का द्वितीय युद्ध	1748 ई.
कर्नाटक का तृतीय यृद्ध	1756 ई.
प्लासी का युद्ध	1757 ई.
बक्सर का युद्ध	1764 ई.
इलाहाबाद की संधि	1765 ई.

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) पुर्तगाली।

(ii) सस्ती खरीद और महँगी बेच के आधार पर व्यापार करने की नीति वाणिज्यिक नीति कहलाती है।

(iii) वास्कोडिगामा एक पुर्तगाली व्यापारी था, जो 26 मई 1448 ई. को भारत के पश्चिमी तट पर स्थित कालीकट पहुँचा।

(iv) भारतीय मसाले, रेशम, कपास, रेशे तथा अन्य बहुत-से उपहार।

(v) सूरत, मछलीपट्टनम, पॉन्डिचेरी, चंद्रनगर, माहे तथा कराईकल।

(vi) डूप्ले एक फ्रांसीसी गवर्नर था, जिसने भारत में फ्रांसीसी साम्राज्य को स्थापित करने के प्रयास किए।

(vii) इंग्लिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने मुगल बादशाह औरंगजेब से कर रहित व्यापार करने की अनुमति प्राप्त की, जिसे फरमान कहते थे।

(viii) सन् 1748 ई. में अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के मध्य कर्नाटक का युद्ध लड़ा गया।

2. छह पंक्तियों में उत्तर :

(i) **कर्नाटक का प्रथम युद्ध (1744-1748 ई.) :** कर्नाटक में व्यापार को लेकर अंग्रेजी ईस्ट इणडिया कम्पनी तथा फ्रेंच ईस्ट इण्डिया कम्पनी एक-दूसरे को परास्त करने की होड़ में लगी हुई थीं। तत्कालीन फ्रांसीसी गवर्नर, जो भारत में फ्रांसीसी प्रतिष्ठानों का महानिदेशक भी था, इस कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा था। 1744 ई. में फ्रांसीसी और अंग्रेजी सेनाओं के बीच युद्ध हुआ, जिसे कर्नाटक के प्रथम युद्ध के नाम से जानते हैं।

(ii) **कर्नाटक का तीसरा युद्ध** 1756 ई. में अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के मध्य लड़ा गया। 1758 ई. में काउण्ट लैली फ्रांसीसी सेनापति बनकर भारत पहुँचा। 1757 ई. में लड़े गए प्लासी के युद्ध से बंगाल और हैदराबाद पर अंग्रेजों की धाक जम गयी। भारत में पांडिचेरी की संधि का पालन पूरी तरह नहीं किया गया। इसी कारण से यूरोप और भारत में अंग्रेजों के बीच युद्ध छिड़ गया। 1760 ई. में लैली और अंग्रेज सेनापति सर आयरकूट, वाण्डीवाश के युद्ध में एक-दूसरे के समक्ष अपनी सेनाओं को लेकर आ डटे। लैली हार गया और फ्रांसीसी हमेशा के लिए भारत से चले गए। लैली को कैद कर लिया गया। इस प्रकार पांडिचेरी अंग्रजों के अधिकार में आ गया।

(iii) बक्सर का युद्ध अक्टूबर 1764 ई. में लड़ा गया। बक्सर के मैदान

में शाह आलम और शुजाउद्दौला की सेनाओं ने मीरकासिम के सेनापतित्व में अंग्रेजों की सेना से घमासान युद्ध किया। इस युद्ध के परिणाम निम्नलिखित हैं—

(1) मीर कासिम और उसकी सेनाएँ बड़ी बहादुरी से लड़े परंतु वे क्लाइव की सेना के सामने न डट सके और युद्ध में हार गए।

(2) अंग्रेजों ने इलाहाबाद, बंगाल और बिहार को जीत लिया तथा बंगाल की गद्दी पर मीर जाफर को बैठा दिया गया।

(3) शाहआलम इलाहाबाद की संधि के द्वारा अंग्रेजों की सुरक्षा में चला गया।

(4) इस युद्ध के बाद बंगाल में अंग्रेजों की राजनीतिक स्थिति काफी मजबूत हो गयी।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **प्लासी के युद्ध के कारण :** नवाब के प्रति अंग्रेजों का षड्यंत्र, बस्ती बसाने की सुविधाओं का दुरुपयोग, कासिम बाजार, कलकता तथा काल कोठरी की दुर्घटना, चंद्रनगर पर कब्जा और मीरजाफर का षड्यंत्र—ये सभी प्लासी के युद्ध के प्रमुख कारण थे।

प्लासी के युद्ध के परिणाम :

(1) प्लासी के युद्ध ने भारत में अंग्रेजों का अपना साम्राज्य स्थापित करने के द्वार खोल दिए।

(2) क्लाइव की गिनती विश्व के महान सेनापतियों में होने लगी।

(3) सिराजुद्दौला के बाद मीरजाफर बंगाल का नवाब बन गया।

(4) बंगाल पर अंग्रेजों का अधिकार स्थापित हो गया तथा भारत में उनकी प्रतिष्ठा की धाक जम गयी।

(5) अंग्रेजों ने कर्नाटक के तीसरे युद्ध में फ्रांसीसियों को हरा दिया।

(6) मीरजाफर ने क्लाइव को एक जागीर प्रदान की, जिससे उसे प्रतिवर्ष 30,000 पौंड मिलने लगे।

(7) प्लासी का युद्ध क्लाइव की बेईमानी, षड्यंत्र, धोखे और बेवकूफ बनाने की नीति के माध्यम से जीता गया।

(8) बंगाल की असली सत्ता और शासन नवाब के हाथों से क्लाइव के हाथों में चला गया। इसीलिए क्लाइव को भारत में अंग्रेजी राज्य का संस्थापक माना जाता है।

(ii) **मीर कासिम और अंग्रेजों के बीच मतभेद :** 27 दिसंबर 1760 ई. को अंग्रेजों और मीर कासिम के मध्य एक समझौता हुआ कि नवाब बर्दवान, मिदनापुर तथा चटगाँव के जिले कम्पनी को दे देगा। कम्पनी इन जिलों से प्राप्त राजस्व से सेना के रख-रखाव का प्रबंध करेगी। शुरू में मीर कासिम और अंग्रेजों के बीच संबंध अच्छे रहे परंतु ये संबंध ज्यादा दिन न रह सके। दूसरी ओर बंगाल के व्यापारी, जमींदार और कारीगर अंग्रेजों के शत्रु हो गए थे। मीर कासिम अंग्रेजों के हाथ की कठपुतली बनना नहीं चाहता था। इस कारण से अंग्रेजों और मीर कासिम के बीच मतभेद पैदा हो गए। मीर कासिम को यह आभास हो गया था कि वह अपनी स्थिति को अब कभी मजबूत और संगठिन न कर सकेगा, इसीलिए उसने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर (बिहार) में स्थानान्तरित कर दी तथा एक प्रशिक्षित सेना का अंग्रेजी आधार पर गठन किया। मीर कासिम ने व्यापार को कर मुक्त कर दिया। अंग्रेज इसको सहन न कर सके क्योंकि व्यापार कर से बड़ी मात्रा में धन प्राप्त होता था। इसीलिए वे मीर कासिम से नाराज हो गए और अब वे मीर कासिम को पदच्युत कर उसकी जगह मीर जाफर को बंगाल का नवाब बनाना चाहते थे। अंग्रेजों ने उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचने शुरू कर दिए। इसीलिए मीर कासिम ने पटना में कुछ षड्यंत्रकारियों को मौत के घाट उतार दिया। मीर कासिम अंग्रेजों पर बहुत क्रोधित हुआ तथा उसने युद्ध किया, परंतु वह लड़ाई में हार गया और अवध जा पहुँचा, जहाँ उसने मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय तथा अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध एक मोर्चा तैयार किया।

4. निम्नलिखित शब्दों को समझाइए :

(i) **फैक्टर :** इंग्लिश ईस्ट इंडिया कम्पनी ने अपने व्यापारिक केंद्रों की स्थापना मसूलीपट्टम, हुगली, अहमदाबाद तथा भड़ौच में की। कम्पनी अपने कार्यों का संपादन नए कारिन्दों से कराती थी, जिन्हें फैक्टर के नाम से जाना जाता था।

(ii) **संधि :** राज्यों और राष्ट्रों के मध्य लिखित समझौता संधि कहलाता है।

(iii) **साम्राज्यवाद :** एक ऐसा राजनीतिक शासन, जहाँ अमीर और शक्तिशाली देश कमजोर देशों पर अपना नियंत्रण स्थापित करें।

(iv) **लाभकारी व्यापार :** यूरोप के व्यापारी भारतीय मसाले, रेशम तथा कपास सस्ते दामों पर खरीदते तथा ऊँचे दामों पर बेचकर अधिक मुनाफा कमाते थे, जिसे लाभकारी व्यापार कहा जाता था।

(v) **श्वेत पत्र :** सरकार की नीतियों से संबंधित ब्यौरा श्वेत पत्र कहलाता है।

(vi) **किलेबंदी :** हमले को रोकने के लिए किसी स्थान की दीवारों, खाइयों आदि से घेराबंदी करना किलेबंदी कहलाता है।

5. निम्नलिखित आधुनिक भारतीय इतिहास की तिथियों का महत्त्व बताइए :

(i) **1498 ई :** वास्कोडिगामा भारत के कालीकट नामक स्थान पर पहुँचा।

(ii) **1602 ई. :** अंग्रेजों ने ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना की।

(iii) **1744 ई. :** अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के मध्य कर्नाटक का प्रथम युद्ध हुआ।

(iv) **1763 ई. :** यूरोपीय देशों में सात वर्षों तक युद्ध चला।

(v) **1756 ई. :** नवाब अलीवर्दी खाँ की मृत्यु के पश्चात् उसका धेवता सिराजुद्दौला बंगाल का नवाब बना।

(vi) **1757 ई. :** ईस्ट इंडिया कम्पनी को बिहार, बंगाल और उडीसा में

अलीनगर की संधि के अंतर्गत बिना चुंगी अदा किए व्यापार करने का अधिकार प्रदान कर दिया गया।

(vii) **1764 ई. :** बक्सर के मैदान में शाहआलम और शुजाउद्दौला की सेनाओं ने मीर मासिम के सेनापतित्व में अंग्रेजों की सेना से घमासान युद्ध किया।

3 भारत में कम्पनी का शासन

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) 1773 ई. (ii) (d) 1792 ई.

(iii) (a) लॉर्ड डलहौजी से (iv) (a) 1560 ई. में

(v) (d) इनमें से कोईनहीं (vi) (a) 1767 ई.

(vii) (a) हैदर अली और अंग्रेजों के मध्य

(viii) (c) टीपू सुल्तान और अंग्रेजों में

(ix) (b) लॉर्ड वेलेजली

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) द्वैध शासन (ii) अंग्रेजों (iii) टीपू सुल्तान

(iv) लॉर्ड वेलेजली (v) रघुनाथ राव

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
लॉर्ड डलहौजी	राज्य हड़प नीति का सिद्धांत
लॉर्ड वेलेजली	सहायक संधि
वारेन हेस्टिंग्स	बंगाल के द्वैध शासन का अंत किया
नाना फडनवीस	नारायण राव के शिशु का संरक्षक
दलीप सिंह	प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध
बालाजी राव द्वितीय	मराठों का पेशवा

4. सत्य और असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) असत्य (v) सत्य (vi) सत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) मैसूर व हैदराबाद के शासक और मराठे।

(ii) वारेन हेस्टिंग्स भारत के प्रथम गर्वनर जनरल थे।

(iii) 1750 ई. में।

(iv) प्रथम मैसूर युद्ध अंग्रेजों और हैदर अली तथा हैदराबाद के निजाम की संयुक्त सेनाओं के मध्य लड़ा गया।

(v) हैदर अली, मैसूर राज्य की सेना की एक इकाई के सेनापति फतेह मोहम्मद का पुत्र था।

(vi) टीपू सुल्तान, हैदर अली का पुत्र था।

(vii) श्रीरंगपट्टम की संधि पर 1792 ई. में हस्ताक्षर किए गए।

(viii) **सहायक संधि की एक शर्त :** जो शासक इस संधि से बँधे थे, उन्हें अपने खर्च पर अपने राज्य में कुछ निश्चित संख्या में अंग्रेजी सेनाओं को रखना पड़ेगा।

(ix) 1782 ई. में।

(x) अंग्रेज।

(xi) नागपुर, झाँसी, जैतपुर, उदयपुर, सम्भलपुर, सिक्किम।

2. पाँच पंक्तियों में उत्तर :

(i) **तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1790 - 1792 ई.) :** टीपू सुल्तान ने ट्रावनकोर पर आक्रमण कर दिया क्योंकि डचों ने मैसूर राज्य के

संरक्षित कोच्चि (कोचीन) को ट्रावनकोर के राजा को बेच दिया था। अंग्रेजों ने ट्रावनकोर के राजा की सहायता इसलिए की, क्योंकि टीपू ने 1790 ई. में उनके विरुद्ध युद्ध का बिगुल बजा दिया था। अंग्रेजों की सेना वेल्लोर तथा अम्बुर होती हई मंगलौर तक पहुँच गयी थी, जिसे उन्होंने 1791 ई. में अपने कब्जे में ले लिया था। अंग्रेज श्रीरंगपट्टम तक पहुँच गए तथा उन्होंने कोयम्बटूर को भी जीत लिया था, परंतु टीपू ने इन स्थानों को बहुत जल्दी ही अंग्रजों के हाथों से ले लिया। उधर कार्नवालिस के नेतृत्व में अंग्रेजी सेनाओं ने श्रीरंगपट्टम को अपने अधिकार में लेने के लिए टीपू पर फिर आक्रमण कर दिया, जिससे टीपू घबरा गया तथा उसने इस आक्रमण को दबाने का भरपूर प्रयास किया। परिस्थितिवश टीपू को 1792 ई. में अंग्रेजों से श्रीरंगपट्टम की संधि करनी पड़ी।

(iii) 1775 ई. में गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स के काल में प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध हुआ। मुगलों की कमजोरी का कायदा उठाकर नागपुर के भोंसलों, बड़ौदा के गायकवाड़ों, इंदौर के होल्करों और ग्वालियर के सिंधियाओं के मराठा गठजोड़ ने उत्तर भारत की ओर अपने राज्यों को विस्तार देना शुरू कर दिया परंतु इसी बीच मराठों को पानीपत के तृतीय युद्ध (1761 ई.) में अफगान शासक अहमद शाह अब्दाली ने हरा दिया। इस तरह से मराठों की बढ़ती हुई शक्ति पर विराम लग गया। मराठों के प्रमुख नेताओं ने पेशवा (प्रधानमंत्री) का पद प्राप्त करने की होड़ में अपना ध्यान पूना की ओर केंद्रित किया। परंतु अंग्रेजों ने इस संघर्ष का फायदा उठाया। इस तरह प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध अंग्रेजों और मराठों के मध्य हुआ।

(iii) सालबाई की संधि पर हस्ताक्षर 1782 ई. में हुए। इस संधि की मुख्य शर्तें निम्नलिखित थीं–

(1) अंग्रेजों का सालसेट पर नियंत्रण बना रहेगा।

(2) वे रघुनाथ राव को किसी तरह की मदद नहीं देंगे तथा उसे 25,000 रुपये प्रतिमाह पेंशन के रूप में मिलेंगे।

(3) अंग्रेज मराठों को युद्ध के दौरान कब्जाई गई जागीरें वापस कर देंगे।

(iv) **द्वितीय आंग्ल-सिक्ख युद्ध (1848-1849 ई.) :** अंग्रेजों ने मुलतान में सिक्खों के किले पर कब्जा कर लिया। उन्होंने झिन्दन पर अंग्रेज विरोधी गतिविधियों में संलग्न होने का आरोप लगाया और उसे लाहौर की गद्दी से बेदखल कर दिया तथा चुनार के किले में बंदी बना लिया। यह सिक्खों का सीधा अपमान और नारी सम्मान का भी अपमान था। 20 अप्रैल 1848 ई. को सिक्खों ने मुल्तान में दो अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी। इसके अतिरिक्त लॉर्ड डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति आदि द्वितीय आंग्ल-सिक्ख युद्ध के प्रमुख कारण बने। 21 जनवरी 1849 ई. को गुजरात में अंग्रेजों और सिक्खों के मध्य युद्ध हुआ। सिक्खों ने अंग्रेजों का वीरतापूर्वक सामना किया, परंतु वे युद्ध हार गए। अंग्रेजों का पूरे पंजाब पर अधिकार हो गया। दलीप सिंह को 5 लाख रुपये की सालाना पेंशन दी गई। मुल्तान के गवर्नर मूलराज को मृत्युदंड दिया गया।

(v) **सहायक संधि की शर्तें :** जो राजा इस संधि से बंधे थे, उन्हें निम्नलिखित शर्तों का पालन करना पड़ा–

(1) उन्हें अपने खर्च पर अपने राज्य में कुछ निश्चित संख्या में अंग्रेजी सेनाओं को रखना पड़ेगा।

(2) वे इस शर्त को भी स्वीकार करेंगे कि अपनी सेना में ब्रिटिश के अतिरिक्त किसी भी यूरोपीय को नहीं रखेंगे।

(3) वे अपने राज्य में एक अंग्रेज रेजिडेंट को राज्य का शासन चलाने के लिए परादर्शक के रूप में रखेंगे।

(4) वे किसी संधि पर हस्ताक्षर करने या अन्य किसी भारतीय

शासक से युद्ध की घोषणा करने से पूर्व अंग्रेजी सरकार की अनुमति लेंगे।

(5) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी भारतीय शासकों और उनके राज्यों पर होने वाली बाह्य और आंतरिक आक्रमणों से उनकी रक्षा करेगी।

(6) तंजौर, सूरत और कर्नाटक के शासकों ने सहायक संधि को स्वीकार कर लिया।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-1784 ई.) :** पांडिचेरी, कालीकट, चंद्रनगर तथा फ्रांसीसी स्थापनों पर अधिकार करने के पश्चात् अंग्रेजों ने माहे पर आक्रमण करने का निर्णय लिया। माहे हैदर अली की सीमाओं में स्थित था और उन्होंने इस पर कब्जा कर लिया। इसको लेकर हैदर अली बहुत बेचैन था। उसने मराठों और निजाम से हाथ मिला लिया तथा जुलाई 1780 ई. में कर्नाटक पर आक्रमण किया, जिसमें अंग्रेजों की हार हुई और उसने कर्नाटक की राजधानी अकार्ट पर अधिकार कर लिया।

इसके कुछ समय बाद अंग्रेज हैदर अली से निजाम और मराठों को अलग करने में सफल हो गए और उन्होंने 1781 ई. में हैदर अली को परास्त कर दिया, परंतु अगले वर्ष 1782 ई. में हैदर अली ने अंग्रेजों को हरा दिया। दुर्भाग्य से 6 दिसंबर 1782 ई. को कैंसर से उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र टीपू सुल्तान मैसूर की गद्दी पर बैठा तथा उसने अंग्रेजों का मुकाबला किया क्योंकि उसने सहायक संधि को अस्वीकार कर दिया था। टीपू एक वर्ष तक युद्ध करता रहा, परंतु दोनों ही पक्ष युद्धों से ऊब चुके थे और उन्होंने लड़ाई को बंद करने का निर्णय लिया। 17 मार्च 1784 ई. को उनके बीच मंगलौर की संधि हुई, जिसके अनुसार दोनों युद्धबंदियों को रिहा कर देंगे तथा विजित भागों को एक-दूसरे को

लौटा देंगे।

(ii) लॉर्ड डलहौजी राज्य हड़प नीति सिद्धांत के प्रतिपादक थे। इस सिद्धांत के अनुसार-प्राकृतिक उत्तराधिकारी की अनुपस्थिति में भारतीय राज्यों की प्रभुसत्ता अंग्रेजों के हाथों में चली जाएगी तथा ऐसे शासकों को पुत्र गोद लेने का अधिकार नहीं होगा। इस नीति का शिकार सर्वप्रथम सतारा राज्य बना। इसके अतिरिक्त नागपुर व झाँसी भी इस नीति के तहत हड़पे गए। बरार तथा अवध को कुशासन के आधार पर हड़पा गया क्योंकि वे ईस्ट इंडिया कम्पनी के संरक्षण में थे। उसने इस नीति के तहत जैतपुर, उदयपुर, सम्भलपुर को भी हड़प लिया। 1850 ई. में उसने सिक्किम को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया क्योंकि सिक्किम के राजा ने दो अंग्रेजी एजेंटों को गिरफ्तार कर लिया था।

4. निम्नलिखित घटनाओं को सही क्रम में लिखिए :

(i) वारेन हेस्टिंग्स का बंगाल का गवर्नर बनना।

(ii) बंगाल में द्वैध शासन का अंत।

(iii) तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध।

(iv) श्रीरंगपट्टम की संधि।

(v) सालबाई की संधि।

(vi) लॉर्ड वेलेजली का भारत का गवर्नर जनरल बनना।

(vii) द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध।

(viii) प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध।

(ix) राज्य हड़प नीति का सिद्धांत।

4 भारत में कम्पनी का शासन का प्रभाव

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) 1769 ई. में (ii) (b) 1772 ई. में

(iii) (c) कलकता (कोलकाता)

(iv) (a) पिट्स इंडिया एक्ट (1784)

(v) (a) लॉर्ड कार्नवालिस (vi) (a) फोर्ट विलियम कॉलिज

(vii) (a) सूबेदार (viii) (a) लॉर्ड कार्नवालिस

(ix) (a) विलियम जोन्स (x) (b) रानी विक्टोरिया

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
द्वैध शासन व्यवस्था	लॉर्ड क्लाइव
रैयतवाड़ी व्यवस्था	थॉमस मुनरो
सदर दीवानी अदालत	वारेन हेस्टिंग्स
महलवाड़ी व्यवस्था	हॉल्ट मेकेन्जी
एशियेटिक सोसायटी	विलियम जोन्स

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) ईस्ट इंडिया कम्पनी ने।

(ii) बंगाल में।

(iii) क्योंकि ब्रिटिश सरकार इस एक्ट के माध्यम से ईस्ट इंडिया कम्पनी की शक्तियों पर नियंत्रण रखना चाहती थी।

(iv) कम्पनी के संचालकों का कार्यकाल चार वर्ष होगा। प्रत्येक वर्ष एक-चौथाई संचालक अवकाश ग्रहण करेंगे।

(v) पिट का इंडिया एक्ट 1784 ई.।

(vi) 1801 ई. में लॉर्ड कार्नवालिस ने फोर्ट विलियम कॉलेज (कलकत्ता) की स्थापना की।

(vii) लॉर्ड कार्नवालिस ने।

(viii) भूमि जोतने वाले को रैयत कहते हैं।

(ix) महल गाँवों का समूह था, जिससे राजस्व वसूल किया जाता था।

(x) लॉर्ड मैकाले ही वह व्यक्ति था, जिसने अपनी अध्यक्षता में भारत में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी घोषित किया था।

2. पाँच या छह पंक्तियों में उत्तर :

(i) **द्वैध शासन :** क्लाइव ने बंगाल में द्वैध शासन लागू किया। इसके अंतर्गत ईस्ट इंडिया कम्पनी को राज्य में राजस्व और अन्य कर इकट्ठा करने का अधिकार दिया गया, जिसे प्रशासन चलाने पर खर्च किया जाता था। इसके अतिरिक्त कम्पनी को राजस्व संबंधी मुकदमे सुनने का भी अधिकार प्रदान किया गया। दूसरी ओर नवाब को आपराधिक मुकदमों को सुनने तथा निर्णय करने का अधिकार तथा सेना को व्यवस्थित करने के अतिरिक्त कानून व्यवस्था को बनाए रखने की शक्तियाँ दी गईं। कम्पनी को शक्तियाँ तो दी गई परंतु कोई जिम्मेदारी नहीं दी गई। इसके विपरीत नवाब को जिम्मेदारियाँ तो दी गईं परंतु कोई शक्ति नहीं दी गई। अत: सब शक्तियाँ कम्पनी के हाथों में चली गईं जबकि नवाब और उसके अधिकारियों के हाथ में नाममात्र की शक्तियाँ रह गईं। इस तरह की व्यवस्था या सरकार को द्वैध सरकार या द्वैध शासन कहा गया।

(ii) 1772 ई. में ब्रिटिश संसद ने कम्पनी के विधान में कुछ परिवर्तन

करने के लिए नया कानून बनाया, जिसे रेग्यूलेटिंग एक्ट कहते हैं। ब्रिटिश संसद इस एक्ट के माध्यम से ईस्ट इंडिया कम्पनी की शक्तियों पर नियंत्रण रखना चाहती थी।

रेग्युलेटिंग एक्ट की मुख्य धाराएँ :

(1) कम्पनी के संचालकों को यह निर्देश जारी किए गए कि वे कम्पनी से संबंधित राजनीतिक, व्यापारिक, रक्षा, सिविल, राजस्व आदि मामलों को ब्रिटिश संसद के सामने रखें।

(2) कम्पनी के संचालकों का कार्यकाल चार वर्ष हो गया। प्रत्येक वर्ष एक-चौथाई संचालक अवकाश ग्रहण करेंगे।

(3) बंगाल का गनर्वर भारत में सभी अंग्रेजी अधिकार वाले क्षेत्रों का गवर्नर जनरल होगा और वह वेतन के रूप में 25,000 पाउंड प्राप्त करेगा।

(4) कम्पनी का कोई भी कर्मचारी सरकार से लाइसेंस प्राप्त किए बगैर व्यापारिक गतिविधियों में भाग नहीं लेगा।

(iii) **पिट का इंडिया एक्ट (1784 ई.) :** ब्रिटिश संसद ने इंग्लैंड के नियंत्रण बोर्ड के द्वारा कम्पनी के रक्षा, सिविल तथा राजस्व मामलों पर नियंत्रण रखने के लिए एक एक्ट पास किया, जिसे पिट का इंडिया एक्ट कहते हैं। गवर्नर जनरल को भारत स्थित ब्रिटिश फौजों का कमांडर-इन-चीफ बना दिया गया। अंग्रेजों ने भारत में प्रशासन को केंद्रित कर दिया। गर्वनर जनरल की परिषद के सदस्यों की संख्या घटाकर चार से तीन कर दी गयी। गवर्नर जनरल को बंगाल, मुम्बई तथा चेन्नई के गवर्नरों की निगरानी तथा नियंत्रण का अधिकार प्रदान किया गया।

(iv) **1833 ई. का चार्टर एक्ट :** भारत में कम्पनी चाय के व्यापारिक अधिकारों या एकाधिकार से वंचित रहेगी। ईस्ट इंडिया कम्पनी भारत में ब्रिटिश सरकार के अनुसार शासन करेगी।

बम्बई और मद्रास की सरकारें कानून बनाने से वंचित रहेगी। बंगाल

का गवर्नर पूरे भारतवर्ष का गवर्नर जनरल होगा तथा वह अपनी परिषद की मदद से कानूनों का निर्माण करेगा।

(v) भारत में कम्पनी के शासन में किए गए सैनिक सुधारों का वर्णन निम्नलिखित है–

(1) सैनिकों की संख्या में बढ़ोतरी की गयी।

(2) सेना की भर्ती इंग्लैंड से की जाने लगी।

(3) सैनिकों को यूरोपीय शैली में प्रशिक्षित किया गया।

(4) भारतीयों को सूबेदार स्तर के पदों तक नियुक्त किया जाता था, जबकि अधिकारियों के पदों पर केवल अंग्रेज ही नियुक्त हो सकते थे। भारतीय सैनिक को सिपाही कहते थे।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **कम्पनी के शासन के अंतर्गत नागरिक सेवाएँ :** जिस तरह कम्पनी ने अपने राज्य की सीमाओं को विस्तृत किया, उसी तरह उसकी प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ भी बढ़ गयीं। इसी के साथ इस बात को भी महसूस किया गया कि प्रशासनिक अधिकारियों को भारत के रीति-रिवाजों, भाषाओं, सामाजिक दशाओं तथा प्रशासनिक व्यवस्था का ज्ञान होना चाहिए। इसलिए लॉर्ड कार्नवालिस ने कम्पनी की नागरिक सेवाओं की ओर युवाओं को आकर्षित करने के लिए उनमें सुधार किया। उसने अधिकारियों के वेतन-भत्तों तथा अन्य सुविधाओं की बढ़ोत्तरी की। उसने कम्पनी के प्रशासनिक अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए 1801 ई. में कलकत्ता (कोलकाता) में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की। इसके काफी समय बाद 1853 ई. में भारतीयों को नागरिक सेवाओं में चयनित करने के लिए नागरिक सेवा प्रतियोगिता परीक्षाओं का आयोजन प्रारंभ हो गया। कोई भी व्यक्ति, जिसकी आयु 23 वर्ष हो, इस सेवा परीक्षा में सम्मिलित हो सकता था। लेकिन 1863 ई. में आयु को 23 से घटाकर 21 वर्ष कर दिया गया तथा 1876 ई. में

21 से घटाकर 19 वर्ष कर दिया गया। इसी के साथ परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी होने के कारण भारतीयों का इस परीक्षा में पास होना कठिन हो गया। नागरिक सेवाओं के लिए परीक्षा का माध्यम केवल अंग्रेजी ही था।

(ii) **(अ) स्थायी भूमि बंदोबस्त :** लॉर्ड कार्नवालिस ने 1793 ई. में स्थायी बंदोबस्त व्यवस्था लागू की, जिसके अंतर्गत बंगाल, ओडिशा और अवध में भू-राजस्व इकट्ठा किया गया। जमींदारों को भूमि का स्वामी घोषित किया गया, जो स्थायी रूप से प्रतिवर्ष उक्त जमीन पर किसानों से निश्चित भू-राज्स्व इकट्ठा करके सरकार को चुकाएँगे। अपने द्वारा वसूली रकम का 9/11 से 2/11 भाग सरकार के पास जमा कराएँगे। जमींदारो के लिए यह व्यवस्था सोने का अंडा देने वाली मुर्गी सिद्ध हुई और वे धनी बन गए। उन्होंने अपनी असामियों (किसानों) का शोषण किया तथा उनसे ऊँची दर पर लगान वसूल किया। सरकार को केवल लगान की निश्चित रकम मिली और इसी कारण से उसकी आर्थिक दशा में कोई सुधार नहीं हो पाया।

(ब) रैयवतवाड़ी व्यवस्था : लॉर्ड हेस्टिंग्स के शासनकाल में भू-राजस्व इकट्ठा करने के लिए रैयतवाड़ी व्यवस्था को लागू किया गया। भूमि जोतने वालों को रैयत कहा जाता था। यह व्यवस्था काश्तकारों और सरकार के बीच भूमि बंदोबस्त थी। भू-राजस्व 30 वर्षों की अवधि के लिए निश्चित कर दिया गया था। काश्तकार सरकार को भू-राजस्व के रूप में उपज का आधा भाग देते थे। इस व्यवस्था को 1820 ई. में थॉमस मुनरो ने लागू किया। इसलिए इसे मुनरो सिद्धांत के नाम से भी जानते हैं। यह व्यवस्था काश्तकारों के नारकीय जीवन का कारण बनी, परंतु वे जमींदारों की जगह भू-स्वामी बन गए।

(स) हलवाड़ी व्यवस्था : पंजाब, दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में गाँवों के समूहों को महल कहते थे। महल के मुखिया को असामियों (किसानों) से भू-राजस्व इकट्ठा करना पड़ता था। इस व्यवस्था को महलवाड़ी व्यवस्था कहते थे। 1822 ई. में इसे हॉल्ट मैकेंजी नामक अंग्रेज ने लागू किया था। यह भी एक दोहरा बंदोबस्त था क्योंकि इसे पूरे गाँव के समुदायों के साथ सामूहिक तौर पर तथा निजी तौर पर भी किया जाता था। इसने किसानों की दशा बिगाड़ दी तथा गाँव के मुखिया को सम्पन्न कर दिया।

(iii) **कम्पनी के शासन में न्याय व्यवस्था :** ईस्ट इंडिया कम्पनी के अस्तित्व से पूर्व न्याय व्यवस्था भारतीय रीति-रिवाजों पर आधारित थी। हिंदुओं को धर्मशास्त्रों के आधार पर न्याय दिलाया जाता था तथा मुसलमानों के न्यायाधीश को काजी कहते थे। अंग्रेजों ने गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स के समय में एक नयी न्यायिक व्यवस्था लागू की। हेस्टिंग्स ने दो अपीलीय अदालतों की स्थापना की—सदर दीवानी अदालत तथा सदर निजामत अदालत; जिन्हें जिला न्यायालय के निर्णयों के विरुद्ध की गई अपीलों को सुनने का अधिकार था। हिंदुओं और मुसलमानों के मुकदमों को संगृही प्रथा विधि निर्मित कानूनों के आधार पर तय किया जाता था। लॉर्ड कार्नवालिस ने बड़े न्यायिक सुधारों को लागू किया। उसने प्रत्येक जिले में दो अदालतों का गठन किया—फौजदारी अदालत और दीवानी अदालत। अंग्रेज जिलाधीश दीवानी अदालतों के मुखिया होते थे। अपीलीय अदालतों (सदर तथा निजामत अदालतों) के अतिरिक्त 1774 ई. में कलकत्ता में एक सुप्रीम कोर्ट (उच्चतम न्यायालय) की स्थापना की गयी। मजिस्ट्रेटों को छोटे आपराधिक मुकदमों को सुनने का अधिकार दिया गया। 1781 ई. के एक्ट के अनुसार अंग्रेजों के मुकदमों का निपटारा अंग्रेजी कानूनों तथा भारतीयों के मुकदमों का निपटारा उनके अपने वैधानिक कानूनों के

अनुसार होगा।

(iv) **नील की खेती :** नील की खेती करने के लिए फैक्ट्रियों के नजदीक बड़े आकार के उपजाऊ खेत होने चाहिए थे। इसकी बुवाई और कटाई के लिए बड़ी संख्या में श्रमिकों की आवश्यकता होती थी। भारत में दो प्रकार की खेती प्रचलित थी–निज कृषि तथा रैयत कृषि। निज कृषि अपनी जमीन के स्वामी, कृषक करते थे, जबकि रैयत कृषि गाँव के मुखिया द्वारा ठेके पर ली गयी जमीन पर की जाती थी। अधिकतर बागवान यूरोपीय थे। कृषकों में श्रमिकों के न मिलने से बेचैनी व्याप्त रहती थी क्योंकि उसी समय धान की रोपाई शुरू हो जाती थी। जमींदार (बागवान) भी उन किसानों का शोषण करते थे जो इस शर्त पर ऋण लिया करते थे कि वे अपनी जोत की कुल भूमि के 25% भाग पर नील की खेती करेंगे। उनकी उपज का मूल्य बहुत कम होता था, इसीलिए वे कभी ऋण मुक्त नहीं हो पाते थे। जमींदार किसानों को उपजाऊ भूमि में नील की खेती करने के लिए निवेश करते थे, जिससे नील की गहरी जड़ों के कारण मिट्टी बंजर हो जाती थी। इसी के कारण उस भूमि में धान की खेती नहीं की जा सकती थी और किसानों को खाद्य समस्या का सामना करना पड़ता था। मार्च 1859 ई. में किसानों और रैयत के नील की खेती करने से मना कर दिया, परंतु जमींदारों ने अपने लाभ के लिए उन्हें नील उगाने के लिए मजबूर किया। इसका परिणाम यह हुआ कि रैयत को जमींदारों का सामना करने के लिए हथियार उठाने पड़े। वे विद्रोही हो गए और यह घटना नील क्रांति के नाम से जानी गई।

4. निम्नलिखित शब्दों को समझाइए :

(i) **द्वैध शासन व्यवस्था :** द्वैध शासन व्यवस्था के अंतर्गत ईस्ट इंडिया कम्पनी को राज्य में राजस्व और अन्य कर इकट्ठा करने का अधिकार दिया गया, जिसे प्रशासन चलाने पर खर्च किया जाता था।

इसके अतिरिक्त कम्पनी को राजस्व संबंधी मुकदमें सुनने का भी अधिकार प्रदान किया गया।

(ii) **सूखा (अकाल) :** बिना वर्षा की दशा सूखा (अकाल) कहलाती है।

(iii) **राजस्व :** सरकार अथवा कंपनी आदि की नियमित आय राजस्व कहलाती है।

(iv) **एकाधिकार :** किसी उद्योग या सेवा-क्षेत्र पर केवल एक कंपनी का नियंत्रण एकाधिकार कहलाता है।

5. कारण बताइए :

(i) ब्रिटिश संसद ने ईस्ट इंडिया कम्पनी के विधान में कुछ परिवर्तन करने के लिए रेग्यूलेटिंग एक्ट 1773 ई. पारित किया था।

(ii) लॉर्ड कार्नवालिस ने कम्पनी के प्रशासनिक अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए 1801 ई. में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।

(iii) बंगाल में स्थायी भूमि बंदोबस्त व्यवस्था बंगाल, उड़ीसा और अवध में भू-राजस्व इकट्ठा करने के लिए लागू की गई।

(iv) विलियम जोन्स ने लोगों को प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति की शिक्षा देने के लिए एशियेटिक सोसाइटी की स्थापना की।

(v) क्योंकि जमींदार किसानों को उपजाऊ भूमि में नील की खेती करने के लिए निवेश करते थे।

5 कृषक तथा जनजातीय आंदोलन

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) उड़ीसा के (ii) (b) बिहार में

(iii) (c) 1855 ई. में (iv) (a) खासी विद्रोह से

(v) (c) हिंदू और मुसलमान (vi) (a) बाहरी व्यक्ति

(vii) (a) 1897 ई. में (viii) (c) मुसलमान किसान

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) शोषित (ii) आदिवासी (iii) संथाल

(iv) तीन (v) चम्पारण जिला

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) असत्य (v) असत्य

4. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
संथाल विद्रोह	1855 इ-56 ई.
मुण्डा विद्रोह	1897-1900 ई.
खासी विद्रोह	1829-1832 ई.
मोपला विद्रोह	1921 ई.
चंपारण आंदोलन	1717 ई.

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) जनजातीय समुदायों को आदिवासी कहते थे।

(ii) खोंड, बेगास, वनगूजर, लबादी, गद्दी, बकरवाल, मुण्डा, गोंड,

संथाल।

(iii) बिरसा मुण्डा, राँची (बिहार) के उलीहाटू के एक निर्धन परिवार में पैदा हुआ था, जिसने अपने समुदाय की जमीनों को अंग्रेजों से छुड़ाने के लिए विद्रोह कर दिया था।

(v) भैरो, सिधु और कान्हू।

2. पाँच पंक्तियों में उत्तर :

(i) **खेड़ा आंदोलन (1919 ई.) :** महाराष्ट्र में खेड़ा के किसानों ने सरकार को भू-राजस्व देने के लिए मना कर दिया क्योंकि उनकी फसलें सूखे के कारण नष्ट हो गयी थीं। परंतु ब्रिटिश सरकार इस बात पर राजी नहीं हुई और उन्होंने किसानों से भू-राजस्व को बलपूर्वक वसूलना चाहा। गांधीजी ने किसान आंदोलन का नेतृत्व किया और सरकार को पीछे हटना पड़ा।

(ii) **मोपला विद्रोह :** मालाबार तट पर रहने वाले मुसलमान किसानों को मोपला कहा जाता था। उनमें से अधिकांश मजदूर थे, जो कॉफी और चाय बागानों में काम करते थे। इन बागानों के मालिक हिंदू जमींदार और साहूकार थे। अंग्रेज और जमींदार इन किसानों का कई तरह से शोषण किया करते थे। इसलिए इन किसानों ने बागानों के मालिकों और साहूकारों के विरुद्ध विद्रोह खड़ा कर दिया। किसानों ने कृषि व्यवस्था सुधारने तथा भू-राजस्व में कमी करने की माँग की परंतु जमींदारों और साहूकारों ने इसका विरोध किया। इसके प्रत्युत्तर में मोपलाओं ने पुलिस थानों पर हमला बोल दिया और अदालतों के अभिलेखों तथा तहसीलों को जला दिया। परंतु ब्रिटिश सरकार ने इसका दमन किया, जिसमें 3000 मोपला विद्रोही मारे गए तथा कई हजार घायल हुए।

(iii) **संथाल विद्रोह के कारण :** संथाल जनजाति बिहार में निवास करती थी। उन्होंने बिहार की राजमहल पहाड़ियों की पथरीली जमीन को अपने कठिन परिश्रम से उपजाऊ भूमि में बदल दिया।

साहूकारों, व्यापारियों, जमींदारों तथा सरकारी अधिकारियों ने संथालों की जमीन छीनकर उन्हें निर्धन बना दिया। इन सभी शोषकों को डिकुओं या बाह्य निवासियों के नाम से जाना जाता था। परंतु संथाल नेता; जैसे–भैरो, सिंधु और कान्हू ठाकुर (देवता) में विश्वास करते थे। उनका विश्वास था कि ठाकुर उन्हें डिकुओं से उनकी जमीनें वापस दिलाने में मदद करेंगे। इसलिए उन्होंने डिकुओं पर आक्रमण कर दिया तथा बड़ी बहादुरी से उनके साथ लड़े। परंतु उनको हरा दिया गया। सिधु और कान्हू को कैद कर लिया गया और बाद में उन्हें फाँसी दे दी गई।

(iv) त्रिभागा आंदोलन त्रिपुरा के हश्नाबाद में प्रारंभ हुआ था। किसानों ने यह घोषित कर दिया था कि वे कुल उपज का 2/3 भाग अपने पास रखेंगे तथा जमींदारों को शेष 1/3 भाग मिलेगा। उपज को तीन भागों में बाँटा जाएगा। इसलिए इस आंदोलन को त्रिभागा आंदोलन कहा जाता था। यह आंदोलन त्रिपुरा से बंगाल तक फैल गया और लगभग 50 लाख लोगों ने इस आंदोलन में भाग लिया था।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **नील विद्रोह :** अनेक अवकाश प्राप्त यूरोपीय अधिकारियों ने स्वयं को बिहार और बंगाल में नील की खेती से जोड़ लिया था। उनमें से कुछ तो अपनी जमीन पर नील की खेती करते थे तथा कुछ ठेके पर दूसरों की जमीन लेकर उसमें नील की खेती करते थे। यदि पैदावार उनके मनमाफिक नहीं होती थी तो वे किसानों के घरों को फूँक देते थे या उनकी स्त्रियों का अपमान करते थे। पहली बार इस प्रकार की घटनाओं को हिंदू पैट्रायट नामक अखबार ने प्रकाशित किया। दूसरे, दीनबंधु मित्र के नाटक नील दर्पण ने इसे चरितार्थ किया; परंतु ब्रिटिश सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। इसके पश्चात् विष्णुचरण विश्वास और दिगम्बर विश्वास नामक दो सगे भाइयों ने किसानों को संगठित किया और बंगाल के किसानों को नील की खेती न करने के लिए तैयार करने हेतु एक आंदोलन चलाया।

नील विद्रोह के परिणाम : इस आंदोलन का परिणाम यह हुआ कि नील की खेती का बंगाल से अंत हो गया तथा किसानों ने स्वयं को अंग्रेजों और ठेकेदारों की दासता से मुक्त कर लिया।

(ii) **अंग्रेज और जनजातियाँ :** अंग्रेजों के भारत में आने से पूर्व अनेक आदिवासी नेता अपने-अपने कबीलों के मुखिया बन चुके थे और वे विभिन्न प्रकार के अधिकारों का प्रयोग करते थे। वे छोटे राजाओं की तरह शासन करते थे। जब अंग्रेज भारत आए तो उन्होंने स्वयं को वहाँ बसाकर शक्तिशाली व्यापारी और प्रशंसकों के रूप में स्थापित कर लिया। फिर उनकी नजर इन जनजातीय मुखियाओं पर पड़ी तथा उन्होंने उन्हें अपने कानूनों का पालन करने के लिए विवश किया। इसके अलावा उन्हें अंग्रेजों को भेंट भी देनी पड़ती थी। अंग्रेज उनसे भूमि बंदोबस्त के माध्यम से उनकी उपजों पर नियंत्रण रखकर हमेशा प्राप्त होने वाले राजस्व को वसूलना चाहते थे। उन्होंने किसानों को जमींदारों और उन सामियों में वर्गीकृत कर दिया। परंतु झूम या स्थानान्तरित कृषि करने वाले आदिवासियों ने अंग्रेजी नियमों और कानूनों को बिना मन के पालन किया। इसी बीच अंग्रेजों ने वन सम्पदा को सरकारी सम्पत्ति घोषित कर दिया तथा आदिवासियों को जंगल छोड़कर अन्य स्थानों पर निकलने के लिए मजबूर कर दिया। इसके परिणामस्वरूप अनेक जनजातीय विद्रोहों और आंदोलनों का जन्म हुआ।

(iii) **चम्पारण आंदोलन के कारण :** चम्पारण जिला उत्तरी बिहार में है। यहाँ यूरोपीय लोग किसानों से जबरन नील की खेती कराते थे तथा उन्हें कम मजदूरी देकर कई तरीकों से उनका अपमान किया करते थे। किसानों से उनकी कुल जमीन के 3/20 भाग पर नील की खेती कराई जाती थी। परंतु असहनीय अवस्था तक पहुँचने पर किसान अपने शोषण और अपमान के लिए तैयार नहीं थे। इसी बीच महात्मा गांधी ने किसानों के साथ मिलकर 1917 ई. में चम्पारण आंदोलन प्रारंभ किया। किसानों ने नील की खेती करना रोक दिया। अंग्रेजों ने किसानों को गिरफ्तार कर लिया और

भू-राजस्व में 22% की वृद्धि कर दी। बाद में सरदार पटेल ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया तथा कम्पनी को किसानों के सामने झुकना पड़ा।

चम्पारण आंदोलन में अपना योगदान देने वाले नेता : महात्मा गांधी, सरदार पटेल।

4. निम्नलिखित शब्दों की संक्षेप में व्याख्या कीजिए :

(i) **आदिवासी :** जनजातीय समुदायों को आदिवासी कहते थे।

(ii) **जमींदार :** ब्रिटिश काल में प्रचलित एक राजनैतिक-सामाजिक कुरीति जमींदारी थी, जिसमें भूमि का स्वामित्व उस पर काम करने वालों का न होकर किसी और का होता था। इस भूमि का स्वामी जमींदार कहलाता था।

(iii) **खानाबदोश :** भोजन और काम-धंधे की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह जाकर बसने वाली जनजातियाँ खानाबदोश कहलाती हैं।

(iv) **जादू-टोना :** जादू-टोना कुछ किए जाने वाले बुरे उपाय हैं, जिनके द्वारा किसी का अहित किया जाता है।

(v) **ठाकुर :** कई भारतीय समुदायों द्वारा सामंतों को दिया गया नाम ठाकुर कहलाता है।

6 शिल्पकलाएँ तथा औद्योगिक विकास

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) 1849 ई. (ii) (b) 1853 ई.

(iii) (c) लॉर्ड डलहौजी (iv) (c) 1843 ई. में

(v) (a) जमशेद जी नोशेरवान टाटा

(vi) (a) कलकत्ता के पास घुसरी में (vii) (b) कलकत्ता

(viii) (d) बिहार में

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
लॉर्ड डलहौजी	सार्वजनिक निर्माण विभाग
जमशेदजी टाटा	टाटा स्टील एंड आयरन कंपनी
जॉर्ज आकलैंड	जूट मिल
श्री कांजी डाबर	दूसरी सूती वस्त्र मिल की बम्बई में स्थापना
सुंदरसेन	जॉर्ज आकलैंड को जूट मिल लगाने में सहयोग दिया

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य (v) सत्य

4. निम्नलिखित की पूर्ति कीजिए :

(i) राज्य हड़प नीति (ii) 1744 ई.

(iii) 1808 ई. (iv) बम्बई

(v) चीनी उत्पादन

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) ब्रिटिश शासनकाल में ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि उत्पादों तथा उन शिल्पकारों पर निर्भर करती थी, जो किसानों तथा व्यापारियों के मददगार थे।

(ii) जमशेदजी टाटा ने 1907 ई. बिहार (अब झारखंड) के साकची गाँव में टिस्को की नींव रखने वाले व्यक्ति थे।

(iii) 1849 ई. में

(iv) सार्वजनिक निर्माण विभाग की स्थापना सड़कों, पुलों और सरकारी इमारतों को बनाने के लिए की गयी।

(v) ब्रिटिश सरकार के समय सर्वप्रथम फारक्यूहर तथा मोट्टी ने इस्पात और लोहा उद्योग स्थापित करने का प्रयास किया।

2. चार या पाँच पंक्तियों में उत्तर :

(i) भारत में कोयले का खनन 1744 ई. में रानीगंज (बंगाल) से शुरू हुआ। बंगाल कोल कम्पनी की स्थापना 1843 ई. में हुई थी। कोयला खनिज में गोंडवाना क्षेत्र समृद्ध था, परंतु भाप के इंजन के आविष्कार से पूर्व अंग्रेजों ने इसके खनन पर धन का निवेश नहीं किया। जैसे ही भारत में रेल सेवा प्रारंभ हुई, अंग्रेजों ने तभी से कोयले का खनन शुरू कर दिया। प्रारंभ में कोयले का खनन बिना मशीनी सहायता के मानव श्रम पर निर्भर करता था।

(ii) लॉर्ड डलहौजी भारत का गवर्नर जनरल था। उसने भारत में कुछ महत्त्वपूर्ण सुधार किए, जो निम्नलिखित हैं–

(1) उसने रेलवे, डाक तथा टेलीग्राफ विभागों की स्थापना की।

(2) उसने ग्रांड ट्रंक रोड का पुनर्निर्माण कराया।

(3) भारत में प्रथम रेलवे लाइन उसी के शासनकाल में बिछाई गयी।

(4) देश में टेलीग्राफ लाइनों को बिछाकर भारत में संचार क्रांति का श्रीगणेश हुआ।

(5) रेल लाइनों का जाल देश में यातायात के द्रुतगामी साधनों के संचालन में मददगार साबित हुआ। इसके द्वारा सामान की एक जगह से अन्य जगहों को ढुलाई आसान और सस्ती हो गयी।

(6) इसके अतिरिक्त उसने भारत में पेनी पोस्टेज प्रणाली लागू की, जिसके द्वारा खबरें और पत्र देश में एक जगह से दूसरी जगह आसानी से पहुँचाए जा सकते थे।

(7) उसने सार्वजनिक निर्माण विभाग की स्थापना भी की।

(iv) सूती वस्त्र उद्योग भारत का प्राचीनतम उद्योग है। भारत में प्रथम सूती कपड़ा मिल की स्थापना 1818 ई. में बंगाल में कलकत्ता

(कोलकाता) के पास धुसरी नामक स्थान पर की गई थी, परंतु यह उत्पादन करने में असफल रही। दूसरी सूती कपड़ा मिल 1854 ई. में श्री कांजी डाबर ने बम्बई (मुम्बई) में स्थापित की, परंतु इसकी उत्पादन दर बहुत मंदी थी। 1879 ई. तक भारत में कुल मिलाकर 56 सूती कपड़ा मिलें स्थापित हो चुकी थीं। यह देश का एकमात्र ऐसा मशीनी उद्योग था, जिसने 43,000 लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया था। इसके उपरांत अहमदाबाद (गुजरात) में भी कई सूती वस्त्र मिलों की स्थापना की गयी। 1914 ई. तक भारत में 264 सूती वस्त्र मिलें स्थापित हो चुकी थीं, जिनमें लगभग 3 लाख लोगों को रोजगार मुहैया कराया गया। प्रथम विश्व युद्ध (1914 ई.) के बाद भारत में जापान तथा अमेरिका के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण सूती वस्त्र उद्योग का उत्पादन गिर गया था। भारतीय सूती वस्त्रों की निर्माण लागत जापान की निर्माण लागत से 60% अधिक थी।

1911 ई. में भारत में सूती वस्त्र मिलों की संख्या 1951 ई. की अपेक्षा 261 से 445 रह गयी थी। अन्य मिलों की स्थापना कानपुर, शोलापुर, मद्रास, इंदौर आदि में की गयी।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) जूट उद्योग भारत का सूती वस्त्र उद्योग के बाद दूसरा सबसे बड़ा उद्योग है। प्रारंभ में यह हमारे देश का एक कुटीर उद्योग था। भारत की पहली जूट मिल 1855 ई. में बंगाल के सुंदरसेन नामक सौदागर के सहयोग से जॉर्ज आकलैंड ने कलकत्ता के पास रिसरा में स्थापित की। पहली पावरलूम जूट वस्त्र मिल कलकत्ता के पास बारानगर में स्थापित की गयी थी। देश की अधिकांश जूट मिलें बंगाल में स्थापित की गयी थीं क्योंकि बंगाल भारत का सर्वाधिक जूट पैदा करने वाला राज्य रहा है और साथ ही यहाँ की मिलों को जल की अबाध आपूर्ति यहाँ बहने वाली नदियों से होती रहती है।

बंगाल में बहने वाली प्रमुख नदियाँ गंगा, ब्रह्मपुत्र हौर हुगली हैं। 1879 ई. तथा 1884 ई. के बीच की अवधि की अपेक्षा भारत में जूट मिलों की संख्या 1945–46 ई. की अवधि में 21 से बढ़कर 111 हो गयी थी।

ब्रिटिश शासनकाल में इंडोनेशिया, घाना और नाइजीरिया के प्रतिस्पर्धात्मक विकास के कारण जूट का निर्यात लगातार घटता गया।

(ii) अंग्रेजों ने न केवल भारतीय किसानों का दमन किया बल्कि शिल्पकारों का भी दमन किया और अपने अत्याचारों का शिकार बनाया। उन्होंने विभिन्न गैर–कानूनी उपायों से अनेक उत्पादों पर अपना नियंत्रण स्थापित करके उन्हें गुलाम बना दिया। भारत की शिल्पकलाओं और उद्योगों को नष्ट कर दिया गया तथा भारतीय बाजारों में ब्रिटिश सामान की बाढ़ आ गई। इस बात का सर्वाधिक प्रभाव बुनकरों पर पड़ा और उनका बड़े स्तर पर शोषण किया गया तथा लघु एवं कुटीर उद्योगों में लगे कारीगरों और श्रमिकों की दशा अति शोचनीय हो गयी और वे निर्धनता के शिकार हो गए। ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि उत्पादों तथा उन शिल्पकारों पर निर्भर करती थी, जो किसानों तथा व्यापारियों के मददगार थे। नील, जूट, अफीम, चीनी, तेल आदि वे कृषि उत्पाद थे, जो कारखानों में तैयार किए जाते थे। इनमें से अधिकतर पदार्थों को विदेशी बाजारों के लिए निर्यात कर दिया जाता था। परंतु अंग्रेजों ने यह सब अधिक मुनाफा कमाने के लिए किया। उन्होंने कृषि उद्योगों तथा शिल्पकारों के विकास के लिए लेशमात्र भी प्रयास नहीं किए। इसका नतीजा यह हुआ कि भारत उद्योगों, शिल्पकलाओं और कृषि के क्षेत्र में दिवालिया हो गया। भारत में शिल्पकलाओं के नष्ट होने का प्रमुख कारण उत्पादों पर उच्च निर्यात था, जिसके कारण विदेशी बाजारों में भारतीय हस्तकला और शिल्पकला के द्वारा बनाए गए सामानों

की माँग घट गयी। इसके कारण अनेक शिल्पकारों ने अपनी परंपरागत कलाओं को छोड़ दिया और वे कृषि, मत्स्यपालन, मजदूरी आदि जैसे व्यवसायों को करने लगे।

4. निम्नलिखित के कारण समझाइए :

(i) क्योंकि अंग्रेजों ने विभिन्न और गैर–कानूनी उपायों से अनेक भारतीय उत्पादों पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया तथा भारतीय शिल्पकलाओं, कृषि और उद्योगों को नष्ट कर दिया गया एवं भारतीय बाजारों में ब्रिटिश सामानों की बाढ़ आ गई।

(ii) क्योंकि विदेशी बाजारों में भारतीय हस्तकला तथा शिल्पकला के द्वारा बनाए गए सामानों की माँग घट गयी थी।

(iii) प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारत में जापान तथा अमेरिका के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण सूती वस्त्र उद्योग का उत्पादन गिर गया था।

(iv) ब्रिटिश शासनकाल में इंडोनेशिया, घाना और नाइजीरिया के प्रतिस्पर्धात्मक विकास के कारण जूट वस्त्रों के निर्यात में लगातार कमी आती गई।

7 1857 ई. का विद्रोह

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) मेरठ में (ii) () क

(iii) (c) तांत्या टोपे (iv) (d) नाना साहब

(v) (a) 1862 ई. में

2. सत्य या असत्य :

(i) असत्य (ii) सत्य (iii) सत्य

(iv) सत्य (v) सत्य (vi) असत्य

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
मंगल पाण्डे	बैरकपुर
रानी लक्ष्मीबाई	झाँसी
कुँवर सिंह	जगदीशपुर
बेगम हजरत महल	लखनऊ
रानी अवन्ती बाई	मध्य प्रदेश
नाना साहब	कानपुर
खान बहादुर खान	बरेली
मौलवी अहमदुल्लाह	फैजाबाद

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) 1857 ई. का विद्रोह 10 मई 1857 ई. को मेरठ कैंट से शुरू हुआ।

(ii) क्रांतिकारी विधि।

(iii) मंगल पाण्डे बंगाल रेजिमेंट का ब्राह्मण सिपाही था।

(iv) कारतूस सूअर और गाय की चर्बी के बने थे।

(v) कुँवर सिंह।

(vi) बहादुरशाह जफर।

(vii) **1857 की क्रांति के दो कारण :**

(1) इस विद्रोह का एक मुख्य कारण उन कारतूसों को दाँत से काटना था, जिन पर सूअर और गाय की चर्बी लगी होती थी। मुसलमान और हिंदू सैनिकों का ऐसा विश्वास था कि इन कारतूसों का प्रयोग करने से उनका धर्म नष्ट हो जाएगा।

(2) अंग्रेजों ने ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए अनेक ईसाई मिशनरियों, उपदेशकों और पादरियों को धर्म-प्रचार के कार्य में लगाया, जिससे भारतीयों को यह विश्वास हो गया कि अंग्रेज उनका धर्म परिवर्तन करना चाहते हैं।

(viii) 1857 के विद्रोह ने भारतीयों में राष्ट्रीयता का संचार किया, जिसने देश के नेताओं को पूर्ण स्वराज प्राप्ति के लिए प्रेरित किया।

2. छह पंक्तियों में उत्तर :

(i) **राजनीतिक कारण :** लॉर्ड वेलेजली ने सहायक संधि को लागू किया, जिन राज्यों में इसे स्वीकार किया गया था, उन्हें अंग्रेज रेजिडेंट को रखना पड़ा तथा उन्होंने सेनाओं पर आने वाले खर्च को भी वहन किया। यदि उन्होंने संधि का पालन नहीं किया तो उनके राज्यों को कम्पनी ने छीनकर अपने राज्य की सीमाओं में विलीन कर दिया। अवध और हैदराबाद ऐसे ही राज्य थे, जो इस नीति का शिकार हुए और यह 1857 ई. के विद्रोह का कारण बना।

आर्थिक कारण : अंग्रेजों की भू-राजस्व की दरों में वृद्धि और उसे वसूल करने के उनके अमानवीय तरीकों ने भारतीय किसानों और जमींदारों में अपार असंतोष उत्पन्न कर दिया था। दूसरी ओर अंग्रेजों ने शिल्पकारों का अनेक प्रकार से शोषण किया था। इसी तरह से अंग्रेजों द्वारा किसानों, जमींदारों और शिल्पकारों का आर्थिक शोषण जारी रहा और 1857 ई. के विद्रोह का कारण बना।

(ii) लक्ष्मीबाई झाँसी की युवा रानी थी। रानी लक्ष्मीबाई का राज्य हड़प नीति के सिद्धांत के आधार पर छीन लिया था, जिससे रानी अंग्रेजों से बहुत नाराज थी और उसने क्रांतिकारियों से मिलकर अंग्रेजों से झाँसी वापस लेने के लिए संघर्ष किया। रानी ने तात्या टोपे की सहायता से ग्वालियर पर अधिकार कर सिंधिया नरेश को वहाँ से बाहर भगा दिया। सिंधिया अंग्रेजों का साथ देते थे। जनरल ह्यूरेज के नेतृत्व में अंग्रेजी सेनाओं ने रानी को लड़ाई छोड़कर भागने को

विवश कर दिया। परंतु रानी हार मानने वाली न थी, वह युद्ध कला में निपुण थी। वह अंतिम क्षण तक लड़ी और 17 जून 1858 ई. को उसने लड़ते हुए अपने प्राण त्याग दिए।

(iii) 24 अप्रैल 1857 ई. को इस खबर को सुनकर मेरठ छावनी के सिपाहियों ने भी चर्बी लगे कारतूसों का प्रयोग करने से मना कर दिया जिसके कारण उन्हें पाँच वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई गयी जिस पर अन्य सैनिकों में रोष उत्पन्न हो गया। 10 मई को मेरठ छावनी के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और कई अंग्रेज अधिकारियों को मारा तथा अपने साथी सैनिकों को कैद से रिहा करके दिल्ली की ओर चल दिए। सैनिकों ने दिल्ली चलो का नारा दिया।

(iv) इस विद्रोह का तत्कालीन कारण उन कारतूसों को दाँतों से काटना था जिन पर सूअर और गाय की चर्बी लगी होती थी। सेना में मुसलमान और हिंदू दोनों ही धर्म जातियों के सैनिक थे, जिनका विश्वास था कि ऐसा करने से उनका धर्म नष्ट हो जाएगा। इसी कारण से दोनों धर्मों के लोगों के मन में अंग्रेजों के प्रति घृणा उत्पन्न हो गयी जो 1857 ई. के विद्रोह का मुख्य कारण बनी।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **1857 ई. के विद्रोह के कारण :**

(1) राजनीतिक कारण : लॉर्ड वेलेजली ने सहायक संधि को लागू किया, जिन राज्यों में इसे स्वीकार किया गया था, उन्हें अंग्रेज रेजिडेंट को रखना पड़ा तथा उन्होंने सेनाओं पर आने वाले खर्च को भी वहन किया। यदि उन्होंने संधि का पालन नहीं किया तो उनके राज्यों को कम्पनी ने छीनकर अपने राज्य की सीमाओं में विलीन कर दिया। अवध और हैदराबाद ऐसे ही राज्य थे, जो इस नीति का शिकार हुए और यह 1857 ई. के विद्रोह का कारण बना।

(2) आर्थिक कारण : अंग्रेजों की भू-राजस्व की दरों में वृद्धि

और उसे वसूल करने के उनके अमानवीय तरीकों ने भारतीय किसानों और जमींदारों में अपार असंतोष उत्पन्न कर दिया था। दूसरी ओर अंग्रेजों ने शिल्पकारों का अनेक प्रकार से शोषण किया था। इसी तरह से अंग्रेजों द्वारा किसानों, जमींदारों और शिल्पकारों का आर्थिक शोषण जारी रहा और 1857 ई. के विद्रोह का कारण बना।

(3) धार्मिक कारण : अंग्रेजों ने ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए अनेक ईसाई मिशनरियों, उपदेशकों और पादरियों को धर्म प्रचार के कार्य में लगाया, जिससे भारतीयों को यह विश्वास हो गया कि अंग्रेज उनका धर्म परिवर्तन कराना चाहते हैं। अंग्रेज इस्लाम और वैदिक धर्म तथा उनके रीति-रिवाजों का सम्मान नहीं करते थे। उधर भारतीय सैनिकों के मन में यह बात बैठ गयी थी कि समुद्र पार करना धार्मिक कुकृत्य होगा क्योंकि कम्पनी ने भारतीय सिपाहियों को अंग्रेजी सेनाओं की मदद के लिए बर्मा (म्यांमार) भेजा था।

अंग्रेजों ने एनफील्ड बंदूकों में गाय और सूअर की चर्बी से बने कारतूसों का प्रयोग करना शुरू कर दिया। बंदूक में लगाने से पहले सैनिकों को इन्हें अपने मुँह से काटना पड़ता था। सैनिकों को यह विश्वास हो गया कि अंग्रेज इन कारतूसों का प्रयोग कराकर उनका धर्म नष्ट करना चाहते हैं, जिससे सैनिक विद्रोह पर उतर आए।

(4) सामाजिक कारण : कम्पनी के शासनकाल में अंग्रेजों ने भारतीयों के सामाजिक ढाँचे, रीति-रिवाजों और संगठनों में दखल देना शुरू कर दिया था। अंग्रेज चाहते थे कि भारतीय पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण करने लगे परंतु भारतीय इसको आसानी से सहन न कर सके, जो इस विद्रोह का कारण बना।

(5) सैनिक कारण : ईस्ट इंडिया कम्पनी ने देश के अंदर और अक्सर बाहर युद्धों और लड़ाइयों में सैनिकों को भेजने के लिए

भारतीयों को सेना में भर्ती कर रखा था, जिनके साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता था तथा उन्हें परेशान भी किया जाता था। उन्हें अंग्रेज सैनिकों की अपेक्षा कम वेतन दिया जाता था तथा उन्हें ऊँचे पदों पर पदोन्नत नहीं किया जाता था। सभी ऊँचे पद अंग्रेजों से भर दिए जाते थे। भारतीय सैनिकों को अपने मुँह से चर्बी लगे कारतूसों को काटकर एनफील्ड नामक बंदूकों में लगाना पड़ता था। ये सभी कारण 1857 ई. के विद्रोह के लिए उत्तरदायी थे।

(6) तत्कालीन कारण : इस विद्रोह का तत्कालीन कारण उन कारतूसों को दाँतों से काटना था जिन पर सूअर और गाय की चर्बी लगी होती थी। सेना में मुसलमान और हिंदू दोनों ही धर्म जातियों के सैनिक थे, जिनका विश्वास था कि ऐसा करने से उनका धर्म नष्ट हो जाएगा। इसी कारण से दोनों धर्मों के लोगों के मन में अंग्रेजों के प्रति घृणा उत्पन्न हो गयी जो 1857 ई. के विद्रोह का मुख्य कारण बनी।

(ii) **1857 ई. के विद्रोह के परिणाम :**

(1) इसने भारत में कम्पनी के शासन का अंत कर दिया और अब भारत की सत्ता सीधे तौर पर ब्रिटिश सरकार के हाथों में आ गयी।

(2) भारत के कैबिनेट मंत्री के समकक्ष राज्य सचिव के पद का सृजन किया गया तथा भारत परिषद् नामक संस्था की स्थापना की गयी।

(3) ब्रिटिश शासन के अंतर्गत लॉर्ड कैनिंग भारत का वायसराय बनकर भारत आया तथा उसने भारतीयों को यह विश्वास दिलाया कि किसी भी सिद्धांत एवं परिस्थितियों के अंतर्गत उनके राज्यों को नहीं हड़पा जाएगा। महारानी विक्टोरिया ने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि उनके सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाजों में अंग्रेजी सरकार कोई दखल नहीं देगी।

(4) इस विद्रोह ने भारतीयों में राष्ट्रीयता का संचार किया, जिसने

देश के नेताओं को पूर्ण स्वराज प्राप्ति के लिए प्रेरित किया।

(iii) **1857 ई. के विद्रोह के दो नेताओं की भूमिका :**

(1) मंगल पाण्डे (बैरकपुर) : लॉर्ड कैनिंग ने बलपूर्वक भारतीय सेनाओं को चर्बी लगे कारतूसों को बंदूक में प्रयोग करने के लिए आदेश दिया। बंगाल रेजिमेंट के ब्राह्मण सिपाही मंगल पाण्डे ने 29 मार्च 1857 ई. को उसका आदेश मानने से इंकार कर दिया। यह खबर देश के कई भागों में फैल गयी जिससे भारतीय सिपाहियों ने अनेक अंग्रेज सैनिक और अधिकारियों को मौत के घाट उतार दिया। मंगल पाण्डे को 8 अप्रैल 1857 ई. को फाँसी की सजा दे दी गयी।

(2) कुँवर सिंह (बिहार) : कुँवर सिंह बिहार के आरा जिले के जगदीशपुर रियासत का जमींदार था और वह अंग्रेजों से असंतुष्ट था इसीलिए उसने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोहियों की एक टुकड़ी का गठन किया। उसने ब्रिटिश सेनाओं को बुरी तरह परास्त किया परंतु आक्रमण में घायल हो जाने के कारण 27 अप्रैल 1857 ई. को उसकी मृत्यु हो गयी।

4. निम्नलिखित शब्दों का वर्णन :

(i) **विद्रोह :** किसी कार्य के विरुद्ध हुए आंदोलन या क्रांति को विद्रोह कहते हैं।

(iii) **पेंशन :** सेवानिवृत्त हो जाने के बाद मिलने वाली तनख्वाह को पेंशन कहते हैं।

(iv) **मोक्ष :** संसार में जन्म और मृत्यु मुक्त हो जाना मोक्ष कहलाता है।

(v) **रेजीमेंट :** किसी कर्नल के नेतृत्व में काम करने वाली सेना की टुकड़ी रेजीमेंट कहलाती है।

8 ब्रिटिश शासनकाल में शिक्षा का विकास

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (b) उच्च शिक्षा के (ii) (a) युवा पादरी

(iii) (c) राजा राममोहन राय ने (iv) (a) 1867 ई. में

(v) (c) आर्य समाज (vi) (a) श्रीमती ऐनी बेसेंट ने

(vii) (b) अलीगढ़ में (viii) (b) महाराजा सयाजीराव

(ix) (a) 1844 ई. में

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) मदरसों (ii) मिशनरी (iii) अलैक्जेण्डर डफ

(iv) हिंदू कॉलेज (v) कला भवन टेक्निकल इंस्टिट्यूट

3. सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
आर्य समाज	दयानंद सरस्वती
प्रार्थना समाज	डॉ. आत्माराम पाण्डुरंग
थियोसोफिकल सोसाइटी	श्रीमती ऐनी बेसेन्ट
शारदा सदन आश्रम	रमाबाई पंडिता
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय	सर सैय्यद अहमद खाँ
सत्यशोधक समाज	ज्योतिराव फुले

4. सत्य या असत्य बताइए :

(i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) असत्य (v) असत्य

5. सही शब्द पर (✓) का चिह्न लगाइए :

(i) ईसाई धर्म (ii) कलकत्ता (iii) आर्य समाज

(iv) वाराणसी (v) महादेव गोविंद रानाडे (vi) 1857 ई.

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) राजा राममोहन राय महान समाज सुधारक थे। उन्होंने हिंदू कॉलेज की स्थापना की।

(ii) बेप्टिस्ट मिशनरी ने बंगाल में सेरमपुर कॉलेज की स्थापना की।

(iii) ईसाई मिशनरियों ने ईसाई धर्म और शिक्षा के प्रचार के लिए देश में अंग्रेजी स्कूलों की स्थापना की।

(iv) श्रीमती ऐनी बेसेंट आयरलैंड की रहने वाली एक समाज सुधारक थीं, जो 1892 ई. में भारत आईं थीं।

(v) दयानंद सरस्वती ने।

(vi) इंग्लैंड के चर्च के सदस्यों ने।

(vii) शिक्षा का माध्यम वर्नाकुलर (स्थानीय भाषाएँ होनी चाहिए।)

2. छह पंक्तियों में उत्तर :

(i) अंग्रेज भारतीयों को पाश्चात्य पद्धति पर शिक्षित करना चाहते थे क्योंकि वे चाहते थे कि भारतीय उनकी कार्य प्रणाली को समझें और कम्पनी को अंग्रेजी पढ़े-लिखे क्लर्क मिल सकें।

(ii) लॉर्ड मैकाले गर्वनर जनरल की परिषद् का सदस्य बनकर भारत आया था, जिसे बंगाल की पब्लिक एजुकेशन सोसाइटी का सदस्य नियुक्त किया गया। उसे 1813 ई. के चार्टर के अनुसार शिक्षा के मद में एक लाख रुपये के वार्षिक फंड को स्वीकृति के सापेक्ष यह परामर्श देने के लिए कहा गया कि उक्त फंड को उचित तरीके से शिक्षा के विकास पर खर्च किया जाए। भारत में उस समय इस फंड को खर्च करने में दो अलग-अलग विचारधाराओं वाले समूह थे। देशी विचारधारा वाले लोग इस फंड का उपयोग भारतीय परंपरागत विधाओं, विज्ञान और वर्नाकुलर भाषाओं के विकास पर खर्च करना चाहते थे। दूसरा समूह पश्चिमी ढाँचे पर आधारित अंग्रेजी माध्यम

से शिक्षा दिलाने के पक्ष में था। मैकाले ने दोनों समूहों के विचारों का गहनता से अध्ययन किया और अपना निष्कर्ष और परामर्श 1935 ई. में लॉर्ड विलियम बैंटिक को भेजा, जिसे मैकाले का प्रपत्र 1935 ई. का नाम दिया गया।

(iii) महाराज सयाजीराव बड़ौदा के राजा थे। इन्होंने अपने राज्य की शैक्षणिक दशाओं को सुधारने के लिए बहुत सहयोग किया। उन्होंने 1880 ई. में बड़ौदा कॉलेज और कला भवन टेक्निकल इंस्टिट्यूट की स्थापना की जो मानविकी, विज्ञान, ललित कला और इंजीनियरिंग के क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **वुड का प्रपत्र :** ब्रिटिश संसद ने भारतीय शिक्षा में सुधार करने के लिए संसदीय समिति का गठन किया। समिति में सर चार्ल्स वुड की अध्यक्षता ने अपने सुझाव दिए, जिन्हें वुड का प्रपत्र कहा जाता है। इसके मुख्य सुझाव निम्न प्रकार थे–

(1) शिक्षा का मुख्य ध्येय व्यक्ति का मानसिक और नैतिक विकास होना चाहिए और यह कम्पनी के लिए वफादार नौकर तथा शिक्षित मानव संसाधन जुटा सके।

(2) यूरोपीय साहित्य और विज्ञान के अतिरिक्त पाठ्यक्रम में संस्कृत, अरबी और फारसी भाषाओं को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

(3) भारत के प्रत्येक राज्य में सार्वजनिक निर्देशों के विभाग की स्थापना की जानी चाहिए, जिसमें निदेशक, उपनिदेशक तथा विद्यालय निरीक्षकों की नियुक्ति होनी चाहिए।

(4) शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होना चाहिए परंतु जो लोग अंग्रेजी नहीं जानते, उन्हें वर्नाकुलर भाषाओं के माध्यम से शिक्षा देनी चाहिए।

(5) मद्रास (चेन्नई), बम्बई (मुम्बई) तथा कलकत्ता

(कोलकाता) में विश्वविद्यालयों की स्थापना की जानी चाहिए।

(6) शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों, अभियांत्रिक विद्यालयों आदि की स्थापना की जानी चाहिए।

(ii) **हण्टर आयोग :** भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड रिपन ने 3 फरवरी, 1882 ई. को सर विलियम हण्टर की अध्यक्षता में भारतीय शिक्षा आयोग की स्थापना की, जिसे हण्टर कमीशन का नाम दिया गया। इस आयोग का मुख्य उद्देश्य देश में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा की स्थिति का आकंलन करना था।

आयोग की सिफारिशें :

(1) पाठ्यक्रम में कृषि, गणित, चिकित्सा विज्ञान, औद्योगिक कलाएँ तथा इसमें राष्ट्रीय स्तर पर समानता होनी चाहिए।

(2) शिक्षा का माध्यम वर्नाकुलर (स्थानीय) भाषाएँ होनी चाहिए।

(3) प्राइमरी शिक्षा की व्यवस्था जिला परिषद् तथा नगर पालिका जैसी स्थानीय संस्थाओं के द्वारा की जानी चाहिए।

(4) सरकार द्वारा इन संस्थाओं को अनुदान उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

(5) प्राइमरी तथा मिडिल स्कूलों के शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए जनपद स्तर पर नॉर्मल स्कूल की स्थापना की जानी चाहिए।

(6) माध्यमिक शिक्षा निजी हाथों में सौंप दी जानी चाहिए तथा अध्यापकों के वेतन, स्कूल की इमारत के रख-रखाव, फर्नीचर, पुस्तकालय तथा अध्यापन में सहायक सामग्री हेतु विद्यालयों को अनुदान दिया जाना चाहिए।

(7) प्राइमरी तथा माध्यमिक शिक्षा के लिए अलग से फंड स्वीकृत किया जाना चाहिए।

4. कारण स्पष्ट कीजिए :

(i) क्योंकि वे चाहते थे कि भारतीय उनकी कार्य प्रणाली को समझें और कम्पनी को अंग्रेजी पढ़े-लिखे क्लर्क मिल सकें।

(ii) क्योंकि इसके माध्यम से वे भारत के विभिन्न भागों में ईसाई धर्म का प्रचार करना चाहते थे।

9 महिलाएँ, जातीयता और सुधार

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (b) लॉर्ड विलियम बैंटिक (ii) (a) 1872 ई. में

(iii) 1850 ई. में (iv) (a) ईश्वरचंद्र विद्यासागर

(v) (b) बम्बई में (vi) (a) पंडिता रमाबाई

(vii) (c) कादिम्बिनी बसु (viii) (b) ताराबाई शिंदे

(ix) (a) श्री नारायण गुरु

2. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) सत्य (v) सत्य

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) राजा राममोहन राय (ii) कन्या-शिशु वध

(iii) छोटी आयु के बच्चों (iv) महादेव गोविंद रानाडे

(v) ईश्वरचंद्र विद्यासागर

4. सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
सती प्रथा एक्ट	1829 ई.
हिंदू विधवा पुनर्विवाह एक्ट	1850 ई.
ब्रह्म समाज	1828 ई.
आर्य समाज	1875 ई.

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) सती प्रथा, कन्या-शिशु वध, बाल विवाह।

(ii) सती प्रथा के अनुसार किसी पुरुष की मृत्यु हो जाने पर उसकी पत्नी जीवित अवस्था में उसकी चिता पर बैठकर स्वयं भी उसके साथ जल जाती थी।

(iii) छोटी आयु के बच्चों के किए जाने वाले विवाह को बाल विवाह कहते हैं।

(iv) लॉर्ड विलियम बैंटिक।

(v) कन्या-शिशु वध एक कुप्रथा थी, जिसके अंतर्गत कन्या-शिशु को जन्म के तुरंत बाद या बचपन में ही मार देते थे।

(vi) 1930 ई. में।

(vii) ईश्वरचंद्र विद्यासागर संस्कृत कॉलिज के प्रधानाचार्य थे।

2. छह पंक्तियों में उत्तर :

(i) सती प्रथा के अनुसार किसी पुरुष की मृत्यु हो जाने पर उसकी पत्नी जीवित अवस्था में उसकी चिता पर बैठकर स्वयं भी उसके साथ जल जाती थी।

ब्रिटिश शासनकाल में बंगाल इस प्रथा से सर्वाधिक प्रभावित होने वाला राज्य था। हिंदू समाज में प्राचीनकाल से ही सती प्रथा प्रचलन में थी। प्रसिद्ध समाज सुधारक राजा राममोहन राय ने इस कुप्रथा की ओर अपना ध्यान दिया, इसीलिए 1828 ई. में उन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना की, जिसने भारतीय नारी को सम्मान दिलाने के लिए सभी संभव प्रयास किए।

(ii) समाज सुधारकों ने बाल विवाह का डटकर विरोध किया। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती और अंग्रेजों ने इस कुप्रथा

का खुलकर विरोध किया और इसको रोकने के लिए ब्रिटिश सरकार ने 1872 ई. में 'नेटिव मैरिज एक्ट' पास किया। इसके अनुसार 14 वर्ष से कम आयु की कन्याओं के विवाह पर रोक लगा दी गई। 1930 ई. में बात विवाह को रोकने के लिए शारदा एक्ट पास कराया गया। इसके अनुसार 14 वर्ष से कम कन्या तथा 18 वर्ष से कम बालक (लड़का) के विवाह पर रोक लगा दी गई और इसका उल्लंघन करने वाले को सजा का प्रावधान था।

(iii) ज्योतिराव फुले निम्न जातियों के नेता बन गए। उन्होंने इस बात की वकालत की कि सवर्णों को दलितों की भूमि लेने का अधिकार नहीं है। उन्होंने जातिगत भेदभाव के विरुद्ध आंदोलन चलाया तथा दलितों के लोगों को ब्राह्मणों का विरोध करने के लिए एकजुट होने का आह्वान किया। ब्राह्मण स्वयं को आर्य कहकर पुकारते थे। उन्होंने सवर्णों द्वारा दलितों से किए जाने वाले दुर्व्यवहार और शोषण का विरोध किया। उन्होंने सत्यशोधक समाज की स्थापना की, जिसने जातिवाद का विरोध किया और 1873 ई. में गुलामगिरि नामक पुस्तक की रचना की, जिसमें उन्होंने दलित जाति से संबंधित लोगों को जागरूक करने का वर्णन किया है।

(iv) डॉ. भीमराव अंबेडकर ने 1927 ई. तथा 1935 ई. के मध्य अछूतों और दलितों के मंदिर प्रवेश हेतु तीन आंदोलन चलाए। अंग्रेजी राज्य में दलित या निम्न जाति के लोगों को हिंदुओं के मंदिर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी। ब्राह्मणों ने इनके मंदिरों के द्वारों के पास जाने तथा मंदिरों के तालाबों से जल लेने पर रोक लगा रखी थी। उनके प्रयासों से इस बुराई का अंत हो गया।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) अनेक भारतीय विद्वजनों ने नारी-शिक्षा के प्रसार के लिए सामाजिक सुधार किए। अंग्रेजों ने महिलाओं को शिक्षित करने के लिए 1819 ई. में 'कलकत्ता यंग वुमेन एसोसियेशन' का गठन

किया। 1849 ई. में शिक्षा परिषद अध्यक्ष जे.ई.डी. बेटन ने एक कन्या विद्यालय की स्थापना की।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने महिला शिक्षा के प्रसार के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की और अपने मार्गदर्शन में लगभग 35 कन्या विद्यालयों की स्थापना कराई। महिलाओं की उच्च शिक्षा के लिए देश का प्रथम महिला विश्वविद्यालय बम्बई (मुम्बई) में सन् 1906 ई. में स्थापित किया गया।

यद्यपि महिलाओं की शिक्षा के लिए पुरुषों ने प्रारंभ से ही प्रयास शुरू कर दिए थे परंतु 1920 ई. में महिलाओं ने इसकी कमान स्वयं अपने हाथों में ले ली तथा अनेक संगठन और संस्थाओं की स्थापना की। 1927 ई. में 'अखिल भारतीय महिला सभा' की स्थापना की गई तथा संस्कृत की प्रकांड विदुषी पंडिता रमाबाई ने पूना में विधवाओं के लिए एक सदन की स्थापना की ताकि वहाँ प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद वे समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर सकें तथा साथ ही अपने पैरों पर खड़ी हो सकें।

महाराष्ट्र में ज्योतिराव फुले ने दलित बालिकाओं के लिए एक विद्यालय शुरू कया। 19वीं शताब्दी के अंत में भोपाल की बेगम ने अलीगढ़ में प्राइमरी स्कूल की स्थापना की तथा बेगम रूकेया शेखावत हुसैन ने पटना और कलकत्ता में मुसलमान बालिकाओं के लिए स्कूल खुलवाए।

ताराबाई शिंदे ने 'स्त्री-पुरुष तुलना' नामक पुस्तक लिखी, जिसमें स्त्री-पुरुष के सामाजिक मतभेदों की आलोचना की गई। 1878 ई. में कलकत्ता में लड़कियों के लिए विथुन कॉलेज प्रारंभ किया गया तथा 1880 ई. में कादम्बिनी बसु भारत की प्रथम महिला स्नातक बनीं।

20वीं शताब्दी में जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचंद्र बोस, अब्दुल कलाम आजाद जैसे राजनेताओं ने महिलाओं की शिक्षा, समानता

और स्वतंत्रता के लिए उल्लेखनीय प्रयास किए।

(ii) विद्वजन भारतीयों द्वारा जाति प्रथा को समाप्त करने के लिए किए गए प्रयास :

(1) **डॉ. भीमराव अंबेडकर :** डॉ. भीमराव अंबेडकर ने 1927 ई. तथा 1935 ई. के मध्य अछूतों और दलितों के मंदिर प्रवेश हेतु तीन आंदोलन चलाए। अंग्रेजी राज्य में दलित या निम्न जाति के लोगों को हिंदुओं के मंदिर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी। ब्राह्मणों ने इनके मंदिरों के द्वारों के पास जाने तथा मंदिरों के तालाबों से जल लेने पर रोक लगा रखी थी। उनके प्रयासों से इस बुराई का अंत हो गया।

(2) **ज्योतिराव फुले :** ज्योतिराव फुले निम्न जातियों के नेता बन गए। उन्होंने इस बात की वकालत की कि सवर्णों को दलितों की भूमि लेने का अधिकार नहीं है। उन्होंने जातिगत भेदभाव के विरुद्ध आंदोलन चलाया तथा दलितों के लोगों को ब्राह्मणों का विरोध करने के लिए एकजुट होने का आह्वान किया। ब्राह्मण स्वयं को आर्य कहकर पुकारते थे। उन्होंने सवर्णों द्वारा दलितों से किए जाने वाले दुर्व्यवहार और शोषण का विरोध किया। उन्होंने सत्यशोधक समाज की स्थापना की, जिसने जातिवाद का विरोध किया और 1873 ई. में गुलामगिरि नामक पुस्तक की रचना की, जिसमें उन्होंने दलित जाति से संबंधित लोगों को जागरूक करने का वर्णन किया है।

(3) **स्वामी दयानंद सरस्वती :** स्वामी दयानंद ने 1875 ई. में आर्य समाज की स्थापना की, जिसके अनुसार वेद मानव जाति को जातियों और उपजातियों में विभाजित करने की भर्त्सना करते हैं। उन्होंने दलितों और अछूतों को वेदों का अध्ययन करने के लिए मार्ग प्रशस्त किया, जिन्हें कट्टरवादी ब्राह्मण पसंद नहीं करते थे।

(iii) पेरियार का जन्म तमिलनाडु में मध्यमवर्गीय ब्राह्मण परिवार में

हुआ था। वह नास्तिक और समाज सुधारक थे। वह हिंदू धर्म के बुरे रीति-रिवाजों के विरुद्ध थे। उन्होंने 'द्रविड़ कजगम' की स्थापना की तथा अपने राज्य में आत्मसम्मान आंदोलन चलाया। उन्होंने ब्राह्मणों की शक्ति को चेतावनी दी। वह जीवनभर जातिवाद, सामाजिक असमानता तथा अछूतों और दलितों के सम्मान (अस्मिता) के लिए संघर्षरत रहे। उन्होंने अछूतों के प्रति ब्राह्मणों की सर्वोच्चता के लिए मनुस्मृति, भागवद्गीता और रामायण जैसे ग्रंथों की आलोचना की। उन्होंने दलितों के लिए सरकारी नौकरी में आरक्षण की माँग के लिए आंदोलन चलाया। उनके प्रयासों से दलितों के हितों की रक्षा और भलाई के लिए भारतीय संविधान में प्रथम संशोधन हुआ।

10 उपनिवेशवाद और शहरी जीवन

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) उड़ीसा (ii) (d) ये सभी
(iii) (a) जूट (iv) (c) हिल स्टेशन
(v) (a) दिल्ली में (vi) (c) शाहजहाँ
(vii) (a) 1911 ई. में (viii) (d) बहादुरशाह जफर

2. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य
(iv) सत्य (v) असत्य

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) प्रेजिडेंसियाँ (ii) अंग्रेजों (iii) शाहजहाँ
(iv) पुरानी दिल्ली (v) 1947 ई.

4. **निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :**

'अ'	'ब'
मुगलसराय	रेलवे स्टेशन
डलहौजी	हिल स्टेशन
दानापुर	छावनी
भड़ौच	व्यापारिक केंद्र
पूना	प्रशासनिक केंद्र
कलकत्ता	भारत की पूर्व राजधानी

संकलित निर्धारण

1. **एक पंक्ति में उत्तर :**

(i) शहरीकरण का पतन वह प्रक्रिया है जिसमें लोग शहरों/कस्बों को छोड़कर जन्म स्थानों पर चले जाते हैं।

(ii) उपनिवेशवाद वह प्रक्रिया है, जिसमें अमीर व शक्तिशाली देश गरीब देश को अपना उपनिवेश बनाते हैं।

(iii) कलकत्ता, मद्रास तथा बम्बई।

(iv) नागपुर, बरार, मिर्जापुर, सूरत, भड़ौच, कलकत्ता आदि।

(v) एडविन लुटियन्स, हर्बर्ट बेकर।

(vi) शिमला, नैनीताल, अलमोड़ा, मसूरी, ऊटी, दार्जिलिंग, कुल्लू, मनाली, डलहौजी आदि।

(vii) चाँदनी चौक तथा फैज बाजार।

2. **छह पंक्तियों में उत्तर :**

(i) **ब्रिटिश शासनकाल में प्रशासनिक केंद्र :** देश के विभिन्न भागों में प्रशासन कार्य को आसान करने के लिए बम्बई, कलकत्ता और मद्रास में प्रेजिडेंसियों की स्थापना की गई। कई प्रमुख शहरों में अंग्रेजी सेनाओं को रखने के लिए तथा उस राज्य के स्थानीय शासक को नियंत्रित करने के लिए रेजिडेंसियों की स्थापना की गई

और वहाँ एक अंग्रेज रेजीडेंट की नियुक्ति कर दी गई। लखनऊ, पूना और हैदराबाद में अंग्रेजों ने रेजिडेंसियाँ स्थापित कीं।

ब्रिटिश शासनकाल में रेलवे : अंग्रेजों ने देश के विभिन्न भागों से कच्चा माल लाने और वहाँ तैयार माल पहुँचाने के लिए पूरे देश में रेलों का जाल बिछा दिया। देश के महत्त्वपूर्ण नगरों, कस्बों और बंदरगाहों को दिल्ली, मुगलसराय, लखनऊ आदि रेलवे जंकशनों से जोड़ा गया।

(ii) मैदानी नगरों में अंग्रेज गर्मी के मौसम में चिलचिलाती धूप और गर्मी से परेशानी महसूस करते थे, क्योंकि वे ठंडी जलवायु वाले देशों के निवासी थे। इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए उन्होंने हरे जंगलों से ढके हुए पर्वतीय स्थानों को खोजा और उन्हें सुंदर हिल स्टेशनों में परिवर्तित कर दिया, जहाँ उन्हें उमस भरी गर्मी और चिलचिलाती धूप से छुटकारा मिलने के अतिरिक्त शांतिपूर्ण वातावरण भी मिला।

(iii) भारत के अन्य भागों सहित बंगाल, बिहार और उड़ीसा में कपास, गन्ना, जूट, नील जैसी वाणिज्यिक (व्यापारिक) फसलें उगाई जाती थीं। अंग्रेज इन फसलों को किसानों और जमींदारों से सस्ते दाम पर खरीदते थे। इसके लिए उन्होंने नागपुर, बरार, मिर्जापुर, सूरत, भड़ौच, कलकत्ता आदि शहरों में अनेक व्यापारिक केंद्र स्थापित किए। इन नगरों को सड़कों और रेलों से जोड़ा गया था। नदियों के किनारे स्थित नगरों को नौवहन की सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई थीं। इसके अतिरिक्त इन केंद्रों के निकट व्यापार करने के लिए बाजारों और गोदामों को स्थापित किया गया था।

3. **10 पंक्तियों में उत्तर :**

(i) पुरानी दिल्ली का इतिहास 15वीं शताब्दी से प्रारंभ होता है। दिल्ली सल्तनत के सुलतानों ने इसे अपने शासनकाल में अपनी राजधानी बनाया। उन्होंने इसे अपनी सुंदर स्थापत्य कला और साहित्य से

समृद्ध बनाया। सिकंदर लोदी तथा अमीर खुसरो, निजामुद्दीन औलिया के मकबरें यहीं स्थित हैं। दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों ने यहाँ कुतुब मीनार, अलाई दरवाजा, कुव्वत-उल-इस्लाम मसजिद, सीरी फोर्ट, कोटला फिरोजाशाह किला आदि इमारतों का निर्माण कराया।

इसके बाद दिल्ली पर मुगल वंश के शासकों ने शासन किया। यहाँ शाहजहाँ ने पुराने किले के पास अपने पिता हुमायूँ का मकबरा बनवाया। शाहजहाँ ने दिल्ली को 1639 ई. में अपनी राजधानी बनाया जिसका नाम उसने शाहजहाँनाबाद रखा। उसने दिल्ली में यमुना नदी के किनारे लाल बलुआ पत्थर से लाल किला और जामा मसजिद बनवाई। शाहजहाँनाबाद शहर के 14 दरवाजे थे तथा उसमें चाँदनी चौक जैसे कई बाजार स्थित थे। शाही जुलूस चाँदनी चौक तथा फैज बाजारों से होकर गुजरता था।

(ii) अंग्रेज पुरानी दिल्ली को आधुनिक शैली पर बने शहर में परिवर्तित करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने नई दिल्ली में रायसीना हिल्स (वायसराय पैलेस) पर राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, इंडिया गेट, केंद्रीय सचिवालय का निर्माण एडविन लुटियन्स और हर्बटे बेकर नाम के वास्तुविदों के नेतृत्व में कराया। इसके अतिरिक्त नई दिल्ली की सड़कें तथा गलियाँ चौड़ी, साफ-सुथरी, जिनके दोनों किनारों पर लंबे हरे पेड़ लगे थे। पानी की आपूर्ति और निकासी की व्यवस्था उत्तम दशा में थी।

4. उचित कारण दीजिए :

(i) अंग्रेजों ने बाह्य और आंतरिक विद्रोहों को दबाने के लिए अपनी सेनाओं को रखने के लिए देश में अनेक छावनियाँ स्थापित की थीं।

(ii) अंग्रेजों ने देश के विभिन्न भागों से कच्चा माल लाने और वहाँ तैयार माल पहुँचाने के लिए पूरे देश में रेलों का जाल बिछा दिया।

(iii) अंग्रेजों ने भारतीयों को प्रभावित करने के लिए 1877 ई. में तथा 1911 ई. में दिल्ली दरबार आयोजित किए।

(iv) 1870 ई. में शाहजहाँनाबाद का पश्चिमी भाग रेलवे लाइन बिछाने के लिए ध्वस्त कर दिया गया था।

11 राष्ट्रीय कला और चित्रकला में परिवर्तन

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) पिक्चरस्कयू से (ii) फोटो चित्रकला

(iii) (a) कुम्हार (iv) (d) राजा रवि वर्मा ने

(v) (a) चेन्नई में

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) स्थापित (ii) दीवार पर बने चित्र (iii) चित्रों

(iv) पागल आदमी की कला (vi) देहाती

3. सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
बंगाल कला स्कूल	नन्दलाल बसु
मद्रास कला स्कूल	के.सी.एस. पन्नीकर
मुम्बई कला स्कूल	आर.बी. रावल
दिल्ली कला केन्द्र	सतीश गुजराल
जीसस क्राइस्ट	यामिनी राय

4. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) असत्य (v) सत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) रंगों से बने सुंदर और स्पष्ट दिखने में आकर्षक चित्रों को सुंदर चित्र कहते हैं।

(ii) दीवारों र बने चित्रों को भित्ति चित्र कहते हैं। भारतीय शासकों ने ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन के दौरान अपने महलों और किले की दीवारों को भित्ति चित्रों से सजाया था।

(iii) किसी व्यक्ति का फोटो (फोटोग्राफ), जिसमें उसका चेहरा और चेहरे का हाव-भाव महत्त्वपूर्ण होता है, फोटो चित्र कहलाता है।

(iv) कागज के बने लंबे रोल पर बना चित्र स्क्रॉल पेटिंग कहलाता है।

(v) भवन निर्माण कला को वास्तुकला कहते हैं।

(vi) गेटवे ऑफ इंडिया, प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम इमारतें मुम्बई में स्थित हैं।

(vii) फोर्ट सेंट जॉर्ज चेन्नई में स्थित है।

2. छह पंक्तियों में उत्तर :

(i) किसी व्यक्ति का फोटो (फोटोग्राफ), जिसमें उसका चेहरा और उसके चेहरे का हाव-भाव महत्त्वपूर्ण होता है, फोटो-चित्र कहलाता है। अमीर वर्ग में यह चित्रकला प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गया। अंग्रेजों ने ऐसे फोटो-चित्रों को बनाया, जिनमें भारतीयों के मुकाबले अंग्रेजों को ज्यादा अच्छा व प्रभाववशाली दर्शाया गया था।

(ii) **भित्ति चित्रों के उदाहरण :** भारतीय शासकों ने ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन के दौरान अपने महलों और किले की दीवारों को भित्ति-चित्रों से सजाया था, जिनमें स्थानीय कलाकारों ने उनकी विजय के जश्नों और युद्ध दृश्यों को दीवारों पर चित्रित किया। मैसूर में श्रीरंगपट्टम में टीपू सुल्तान के दरिया-दौलत महल की दीवारों को ऐसे ही चित्रों से सजाया गया था।

(iii) राजा रवि वर्मा का जन्म केरल में ट्रावनकौर के महाराजा परिवार में

हुआ था। उन्होने आधुनिक और राष्ट्रीय तकनीकी पर आधारित कला-शैली को प्रथम बार भारत में प्रचलित किया। वे तैलीय चित्रण तथा जीवन की वास्तविकताओं के चित्रण में निपुण था। उसके चित्रों के विषय पौराणिक कथाओं से होते थे। उन्होंने महाभारत तथा रामायण की कथाओं पर चित्र बनाए। 1880 ई. में उनके द्वारा बनाए गए चित्रों को कला प्रेमियों और राजकुमारों ने पसंद किया।

(iv) अमृता शेरगिल एक महान कलाकार थीं तथा उन्होंने पेरिस में कला का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। उनके चित्र कला पाश्चात्य शैली पर आधारित हैं। उन्होंने बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट की आलोचना की। उन्होंने बाघ और अजंता की गुफाओं का निरीक्षण किया और उन गुफाओं के भित्ति चित्रों को अपने चित्रों का विषय बनाया। उसने बसोली (पहाड़ी) कला के आधार पर भी चित्रों को बनाया तथा अपने चित्रों में रंगों की नई योजना को अपनाया। 'दुल्हन का शृंगार', 'गणेश पूजा', 'भिखमंगे', 'नीलवस ने उसकी कुछ प्रसिद्ध पेंटिंग हैं।

(v) मद्रास कला स्कूल की स्थापना डॉ. अलेक्जेण्डर हण्टर ने 1850 ई. में की थी। के.सी.पन्नीकर, ए.पी. संथानाराज एवं मुनुस्वामी आदि इसके निपुण कलाकार थे। उन्होंने आधुनिक शिल्पकला, रीति-रिवाजों और इतिहास पर आधारित चित्रों का निर्माण किया। चेन्नई के राष्ट्रीय संग्रहालय में इन कलाकारों के चित्रों का संग्रह देखा जा सकता है।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) अनवीन्द्रनाथ टैगोर बंगाल के राष्ट्रवादी विचारधारा वाले व्यक्तियों के समूह में से एक थे। उन्होंने राजा रवि वर्मा की कला को महत्त्व नहीं दिया। उनके चित्र चीनी , जापानी, यूरोपीय तथा भारतीय कला के मिश्रण हैं। उनके चित्रों के विषय भगवान कृष्ण की विभिन्न

कलाएँ हैं। इनमें कालिदास के मेघदूत, ख्यायाम की रूबाइयाँ तथा सामाजिक और ऐतिहासिक घटनाएँ हैं। वे कलकत्ता आर्ट स्कूल के प्रधनाचार्य ई. वी. हैवल के संपर्क में आए और शाहजहाँ की मृत्यु पर चित्र बनाए। उन्होंने केवल तैलीय पेंटिंग की परंपरागत तथा यथार्थ कला शैली का ही अनुकरण नहीं किया बल्कि लघुचित्रण और भित्ति चित्रण की मध्यकालीन भारतीय परंपराओं के लिए भी प्रेरित किया। उन्होंने जलीय रंगों का प्रयोग किया। डॉ. आनंद स्वामी उनकी इन कला शैली से बहुत प्रभावित थे।

(ii) 18वीं और 19वीं शताब्दियों के उत्तरार्द्ध में कलाकारों ने ब्रिटिश साम्राज्यवादी इतिहास के विषयों पर चित्र बनाए। इन चित्रों में अंग्रेजों द्वारा भारतीय शासकों के साथ किए गए युद्ध दृश्यों, जिनमें वे विजयी रहे थे, को उनकी राजनीतिक शक्ति और श्रेष्ठता के साथ विभिन्न रंगों के माध्यम से दिखाया गया था। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि इन चित्रों के विषय ब्रिटिश भारत की ऐतिहासिक घटनाएँ थीं। उदाहरण के लिए, प्लासी के युद्ध का दृश्य तथा टीपू सुल्तान का वध ऐसे ही चित्र थे। अंग्रेज इन चित्रों के माध्यम से स्वयं को भारत और इंग्लैंड में शक्तिशाली दिखाना चाहते थे।

(iii) इमारतों के डिजाइनों और संरचनाओं की कला को वास्तुकला कहा जाता है। अंग्रेजों ने अपने शासनकला में अनेक बड़ी इमारतों का निर्माण कराया। ये इमारतें हिंदू, मुसलमानी तथा यूरोपीय शैलियों से निर्मित की गई थीं।

अंग्रेजों ने मुम्बई में विक्टोरिया टर्मिनल तथा कलकत्ता में विक्टोरिया मेमोरियल हॉल का निर्माण कराया। इसके अलावा उन्होंने देश में अनेक चर्चों को भी बनवाया। दिल्ली का सेंट जेम्स चर्च, कलकत्ता का सेंट जॉन चर्च इन चर्चों के कुछ अच्छे उदाहरण हैं।

अंग्रेजों ने भारतीय भवन निर्माण कला शैली को बदलकर रख दिया

था। शहरों और इमारतों के निर्माण के लिए, नई शैली का आविष्कार कर इसे भारत में भवन निर्माण में अपनाया गया। बम्बई में निर्मित इमारतों में गोथिक शैली का प्रयोग किया गया, जिसमें नुकीली मेहराबों का प्रयोग किया गया था। कलकत्ता में बनी इमारतों में गोल मेहराबों और स्तंभों को वास्तुकला की शास्त्रीय शैली में बनाया गया। यह शैली इटली और यूनान से ली गई थी। इसके उदाहरणों में जी. विटेट द्वारा निर्मित मुम्बई का गेटवे ऑफ इंडिया तथा प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम हैं।

अंग्रेजों ने मुम्बई, चेन्नई और कोलकाता में प्रेजिडेंसियाँ स्थापित कीं, इसीलिए उन्होंने इन स्थानों पर आधुनिक शैली पर बनी इमारतों में नए अंग्रेजी स्कूल, कॉलेज, अस्पताल आदि को स्थापित किया।

12 स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम चरण

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) दादाभाई नौरोजी (ii) (b) आनन्द मठ

(iii) (a) ए.ओ. ह्यूम (iv) (b) 1885 ई. में

(v) (a) मुम्बई में (vi) (c) बालगंगाधर तिलक

(vii) () गोपालकृष्ण गोखले, दादाभाई नौरोजी, मदनमोहन मालवीय

(viii) (b) 1906 ई. में (ix) (d) (a) तथा (c)

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) ए.ओ. ह्यूम (ii) सर व्योमेश चंद्र बनर्जी

(iii) बाल गंगाधर तिलक (iv) 1898 ई.

(v) मत

3. सुमेल कीजिए :

'अ'	**'ब'**
ए.ओ. ह्यूम	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
लाला हरदयाल	गदर पार्टी
ऐनी बेसेंट	होम रूल आंदोलन
सलीमुल्लाह खान	मुसलिम लीग
गोखले	बहिष्कार एवं स्वदेशी आंदोलन
मोहम्मद अली जिन्ना	लखनऊ समझौता

4. सत्य और असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) सत्य (v) सत्य

5. व्यक्ति का नाम लिखिए :

(i) बंकिमचंद्र चटर्जी (ii) ए.ओ. ह्यूम

(iii) व्योमेश चंद्र बनर्जी (iv) लाला लाजपत राय

(v) नवाब सलीम मुल्लाह खान

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) दादा भाई नौरोजी ने लिखी।

(ii) ए.ओ. ह्यूम एक अवकाश प्राप्त सिविल सेवा के अधिकारी थे।

(iii) 16 अक्टूबर 1905 ई. को लॉर्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन किया।

(iv) नवाब सलीम मुल्लाह खान तथा नवाब मोइसिन-उल-मुल्क ने आल इंडिया मुस्लिम लीग पार्टी की स्थापना की।

(v) लाला हरदयाल ने।

(vi) लाला लालपत राय, बाल गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल।

(vii) श्रीमती ऐनी बेसेंट आयरलैंड निवासी थीं, जिन्होंने होमरूल आंदोलन शुरू किया।

(viii) गोपाल कृष्ण गोखले, मदन मोहन मालवीय, दादाभाई नौरोजी।

2. छह पंक्तियों में उत्तर :

(i) **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना :** ए.ओ. ह्यूम नामक एक अवकाश प्राप्त सिविल सेवा के अधिकारी ने 1884 ई. में भारतीय राष्ट्रीय राष्ट्रीय संघ का निर्माण किया। उसने भारतीय नेताओं के साथ 27 दिसंबर 1885 ई. को बम्बई (मुम्बई) में एक सभा का आयोजन किया तथा पूर्व में निर्मित भारतीय राष्ट्रीय संघ को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नाम दिया।

(ii) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के निम्नलिखित उद्देश्य थे :

(1) भारतीयों में पारस्परिक संबंध स्थापित करना।

(2) सामाजिक समस्याओं पर प्रेरणायुक्त लेख लिखना।

(3) देशवासियों में राष्ट्रीय भावनाओं का विकास करना।

(4) जनता की भलाई से संबंधित उन सभी राजनीतिक महत्त्व के प्रश्नों पर विचार-विमर्श करना जो जनहित से संबंधित थे तथा अखिल भारतीय स्तर के राष्ट्रीय नेताओं को संगठित करना।

(iii) **लखनऊ समझौता 1916 ई. :** इस समझौते को लीग-कांग्रेस पैक्ट भी कहा जाता है। 1916 ई. में कांग्रेस और मुसलिम लीग दोनों का संयुक्त अधिवेशन लखनऊ में आयोजित किया गया, जिसमें 'स्वराज' प्राप्ति के लिए एक संयुक्त योजना बनाई गई। हिन्दू मुसलिम एकता ने अंग्रेजों के प्रयासों को विफल कर दिया तथा सरकार को भविष्य की नीति की घोषणा करने के लिए विवश कर दिया गया। इस अधिवेशन में मोहम्मद अली जिन्ना और बाल गंगाधर तिलक ने भाग लिया था।

(iv) लॉर्ड कर्जन के द्वारा 1905 ई. में बंगाल के विभाजन का विरोध करने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने ब्रिटिश सामानों का बहिष्कार करने और स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करने हेतु बहिष्कार

और स्वदेशी आंदोलन चलाया। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य भारत के लघु और मझोले आकार के उद्योगों को बढ़ावा देना था। भारत के अनेक शहरों और कस्बों में बड़े पैमाने पर विदेशी कपड़ों और सामानों की होली जलाई गई।

(v) 1909 ई. में ब्रिटिश सरकार ने भारत में भारतीयों को संतुष्ट करने के लिए लॉर्ड मिन्टो के शासनकाल में मिन्टो-मार्ले सुधार लागू किए, जिसमें मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचन की व्यवस्था का प्रावधान किया गया, जिसमें मुसलमान मतदाता केवल मुसलमान उम्मीदवार को मत दे सकते थे। इस सुधार का उद्देश्य यह बताना था कि मुसलमानों और हिंदुओं के आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक हित अलग-अलग हैं, न कि साझा।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **उदारवादी (नरमपंथी) नेता :** 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ ही भारत की स्वतंत्रता के लिए छोटे स्तर पर संघर्ष प्रारंभ हो गया परंतु यह एक संगठित शांत और हिचक भरा प्रयास था। दादा भाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, मदन मोहन मालवीय, सच्चिदानंद सिन्हा आदि नेता शांतिपूर्ण और वैधानिक तरीकों से स्वतंत्रता प्राप्ति के पक्षधर थे और इसलिए इन नेताओं को उदारवादी नेता कहा गया। वे लोग ब्रिटिश सरकार के सामने जनमत, प्रार्थना-पत्रों, सभा प्रस्तावों और भाषणों के माध्यम से स्वतंत्रता की माँग रखना चाहते थे।

उग्रवादी (गरमपंथी) : 19वीं शताब्दी के अंत में कांग्रेस के नेताओं के मिजाज में एक निश्चित बदलाव आया। कांग्रेस के जन्म के समय के नेता, जिन्होंने 1885 ई. से 1905 ई. के बीच भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्यों को महत्त्व दिया, गरमपंथी कहलाए। उनमें से अधिकांश नेता ब्रिटिश सरकार के दमनकारी और अत्याचारी रवैये से गरमपंथी विचारधारा वाले बन गए थे। लाला लालपत राय,

विपिन चन्द्र पाल, बाल गंगाधर तिलक, जिन्हें लाल-बाल-पाल के नाम से जाना जाता था। उदारवादियों की विचारधारा के बिलकुल विपरीत थे। जो हिंसा के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्ति के पक्षधर थे।

(ii) **गदर पार्टी :** अमेरिका और कनाडा जैसे देशों में रहने वाले भारतीयों ने 1913 ई. में गदर पार्टी का गठन किया। इस पार्टी के मुख्य नेता लाला हरदयाल तथा रासबिहारी बोस; राजा महेन्द्र प्रताप, बरकत उल्ला, उबेद उल्ला सिंधी, भगवान सिंह, सोहना सिंह, भारवाना इसके सदस्य थे। इस पार्टी ने 'गदर' नामक समाचार-पत्र का प्रकाशन किया। इसके मुख पृष्ठ पर ब्रिटिश सरकार का दुश्मन छपा था। इस समाचार-पत्र का मुख्य उद्देश्य भारत की आजादी के लिए देश के बाहर से आंदोलन और संघर्ष जारी रखकर भारत के आंतरिक स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूत करना था। विदेश में रहने वाले भारतीय इस अखबार को क्रांतिकारी लेखों के माध्यम से क्रांतिकारी बन गए थे।

(iii) **होम रूम आंदोलन :** ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध अखबार में लेख लिखने के कारण तिलक को माण्डले जेल भेज दिया गया था। 1914 ई. में उन्हें वहाँ से रिहा कर दिया गया। उन्होंने आयरलैंड निवासी श्रीमती ऐनी बेसेंट के साथ मिलकर होम रूल आंदोलन शुरू किया। श्रीमती ऐनी बेसेंट ने गरमपंथियों को कांग्रेस में पुनः मिलने के लिए तैयार किया और वह अपने इस उद्देश्य में सफल हो गईं। उधर मुस्लिम लीग और कांग्रेस ने लखनऊ में एक समझौता किया जिसमें तिलक ने अपना सहयोग प्रदान किया। तिलक ने इस बात को स्पष्ट किया कि होम रूल आंदोलन का उद्देश्य नौकरशाही की जगह एक स्वराज शासन प्रणाली स्थापित करना है जो जनता के प्रति उत्तरदायी होगी। इस आंदोलन की दो उपलब्धियाँ थी। पहली, इसने आजादी की ज्योति को बुझने नहीं दिया बल्कि, उसने सोते हुए भारतीय और कांग्रेस में नई जागृति,

विचारों और स्फूर्ति का संचार किया। दूसरे, इस आंदोलन ने स्वशासन, स्वदेशी तथा राष्ट्रीय शिक्षा संबंधी विचारों का प्रसार करके गांधीजी के नेतृत्व में चलाए गए आंदोलनों की पृष्ठभूमि तैयार की। इसके अतिरिक्त इस आंदोलन ने तिलक को पूरे देश में एक अलग पहचान दिलाई।

उद्देश्य :

(1) शांतिपूर्ण तरीकों से स्वतंत्रता प्राप्त करना।

(2) ब्रिटिश सरकार को स्वतंत्रता के लिए तैयार करना।

(3) उदारवादियों और गरमपंथियों को एक करना।

(4) स्थानीय स्वशासन स्थापित करना।

(5) संसद में क्रांतिकारी प्रतिनिधियों को भेजना।

(6) भारतीयों के दिलों में राष्ट्रीय भावनाओं को जागृत करना।

13 स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रीय आंदोलन का द्वितीय चरण

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (c) अमृतसर में

(ii) (a) जलियाँवाला बाग हत्याकांड के कारण

(iii) (b) 1920 ई. (iv) (b) गोरखपुर के निकट

(v) (d) ये सभी (vi) (a) काकोरी घटना (1925 ई.)

(vii) (a) 3 फरवरी 1927 ई. (viii) (d) सरदार भगत सिंह

(ix) (a) पं. जवाहरलाल नेहरू (x) (c) खान अब्दुल गफ्फार खान

(xi) (a) 1930 ई. (xii) (b) 1931 ई.

(xiii) (a) मोहम्मद अली जिन्ना (xiv) (b) क्लीमेण्ट एटली

2. सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
भारत का प्रथम गवर्नर जनरल	माउण्ट बेटेन
स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल	राजगोपालाचारी
सामुदायिक पारितोषिक	रेम्जे मैक्डोनाल्ड
पूना पैक्ट	डॉ. बी.आर. अंबेडकर
साइमन कमीशन	तेजबहादुर सप्रू

3. निम्नलिखित नारे किसने दिए :

(i) महात्मा गांधी (ii) सुभाषचंद्र बोस

(iii) भगत सिंह (iv) सुभाषचंद्र बोस

(v) सुभाषचंद्र बोस (vi) सुभाषचंद्र बोस

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) 13 अप्रैल 1919 ई. को।

(ii) चोरी–चौरा में 22 पुलिस के सिपाही मारे गए। इसे सुनकर गांधीजी बहुत दुखी हुए और इसलिए गांधीजी ने असहयोग आंदोलन समाप्त कर दिया।

(iii) चितरंजनदास, एन.सी. केलकर और मोती लाल नेहरू जैसे कांग्रेसी नेताओ ने।

(iv) पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, रोशनसिंह, राजेन्द्र साहिडी और अशफाक उल्ला खान।

(v) क्रांतिकारियों ने साइमन कमीशन का बहिष्कार इसलिए किया क्योंकि इसके सब सदस्य अंग्रेज थे। इसमें किसी भी भारतीय को सदस्य नहीं बनाया गया था।

(vi) लाला लाजपत राय को।

(vii) सरदार भगत सिंह को।

(viii) क्रांतिकारी युवाओं ने।

(ix) 6 अप्रैल 1930 ई. को गांधीजी ने समुद्र के पानी से नमक बनाकर कानून तोड़ा। यह घटना 'डांडी मार्च' कहलायी।

(x) संघ सरकार की स्थापना की गई।

(xi) श्रीमती अरुणा आसिफ अली, सुचेता कृपलानी, नीतू पाण्डेय।

(xii) चौधरी रहमत अली ने।

(xiii) लॉर्ड लॉरेन्स, स्टेफोर्ड क्रिप्स और ए.वी. अलेकजण्डर।

2. छह पंक्तियों में उत्तर :

(i) **जलियाँवाला बाग हत्याकांड :** अमृतसर (पंजाब) में डॉ. सतपाल और डॉ. किचल की गिरफ्तारी के विरोध में लोग जलियाँवाला बाग में इकट्ठे हो गए। इसलिए 13 अप्रैल 1919 ई. को एक सभा का आयोजन किया गया था, जिसमें उक्त नेताओं की गिरफ्तारी पर विचार-विमर्श चल रहा था। जनरल डायर ने निहत्थी भीड़ पर एकाएक ब्रिटिश सेना से गोलियाँ चलवा दीं। हजारों पुरुष, स्त्रियाँ और मासूम बच्चों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा और अनेक घायल हो गए।

(ii) **काकोरी कांड :** अक्टूबर 1924 ई. में क्रांतिकारी युवाओं ने कानपुर में एक सभा का आयोजन किया तथा हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का गठन किया। जिसमें अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालकर देश को आजाद कराने का निर्णय लिया गया। युवाओं के पास अपनी योजनाओं को साकार रूप देने के लिए कोई आर्थिक साधन नहीं था। इसलिए धन का प्रबंध करने के लिए इन युवा क्रांतिकारियों ने रेलगाड़ी द्वारा ले जाए जा रहे सरकारी खजाने को लूट लिया। पुलिस ने अनेक क्रांतिकारियों को गिरफ्तार किया और 70 को अपराधी ठहराकर लंबा कारावास दे दिया तथा पंडित रामप्रसाद बिस्मल, रोशन सिंह, राजेंद्र लाहिड़ी और अशफाक उल्ला खान को फाँसी पर लटका दिया। चंद्रशेखर आजाद बचकर भाग निकले।

(iii) **गांधी-इरविन समझौता :** 5 मई, 1931 ई. को गांधीजी और भारत के वायसराय लॉर्ड इरविन के बीच एक समझौते पर हस्ताक्षर हुए। कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आंदोलन समाप्त किया तथा द्वितीय गोल मेज सम्मेलन लंदन में उपस्थित होने के लिए सहमत हो गई। इसमें यह सहमति बनी कि सभी राजनीतिक कैदियों को जेल से रिहा कर दिया जाए तथा हिंसा के लिए अपराधी न ठहराया जाए।

(iv) **डांडी मार्च (1930 ई.) :** सविनय अवज्ञा आंदोलन के अंतर्गत गांधीजी 79 कांग्रेसी नेताओं के साथ साबरमती आश्रम से गुजरात के डांडी नामक समुद्रतटीय गाँव में नमक कानून तोड़ने के लिए 12 मार्च 1930 को पहुँचे। यह यात्रा पैदल मार्च के रूप में जानी गई। 6 अप्रैल 1930 को गांधीजी ने समुद्र के पानी से नमक बनाकर कानून तोड़ा। यह घटना डांडी मार्च कहलायी।

(v) **भारत छोड़ो आंदोलन :** क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 8 अगस्त 1942 ई. को बम्बई में आयोजित अधिवेशन में भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव पारित किया। उन्होंने ब्रिटिश शासन से भारत को आजाद कराने के लिए भारत छोड़ो का नारा दिया। 9 अगस्त 1942 ई. को गांधीजी ने करो या मरो का नारा दिया। इसके विरोध में अंग्रेजी सरकार ने गांधीजी और अन्य महत्त्वपूर्ण नेताओं को जेलों में ठूँस दिया। कुछ कांग्रेसी नेताओं ने स्वयं को क्रांतिकारी गतिविधियों में लगा दिया। लोगों की भीड़ ने देश में जगह-जगह पर जुलूस निकाले, धरने दिए और हड़तालें कीं। ब्रिटिश सरकार ने प्रेस पर नियंत्रण रखने के लिए बड़े अखबारों के प्रकाशन पर रोक लगा दी। महिलाओं ने भी इस आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

(vi) **आई.एन.ए. :** 1943 ई. में रासबिहारी बोस ने सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज का गठन किया। सुभाषचंद्र बोस ने भी भारत को ब्रिटिश सरकार से आजाद कराने के लिए बहुत सहयोग किया। इस सेना ने इम्फाल और कोहिमा के रास्ते से भारत पर आक्रमण करना चाहा

परंतु असफल रही। सुभाष ने नारे दिए– 'दिल्ली चलो', 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा'। 'जय हिन्द'। उन्होंने एक महिला रेजीमेंट 'रानी झाँसी रेजीमेंट' का भी गठन किया। इंडियन नेशनल आर्मी में आम नागरिकों को भी भर्ती किया गया। लोग उन्हें नेताजी कहकर पुकारते थे। द्वितीय विश्व युद्ध 1944–45 ई. में जापान की हार के कारण आई.एन.ए. को अपना अभियान रोकना पड़ा।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **असहयोग आंदोलन (1920 ई.) :** गांधीजी ने भारतीयों को गैर–ब्रिटिश भावनाओं का लाभ उठाया और पूरे देश में असहयोग आंदोलन शुरू कर दिया। इसका उद्देश्य भारत में अंग्रेजों का सहयोग न करना था तथा इसका एकमात्र लक्ष्य स्वराज की प्राप्ति बताया।

आंदोलन की मुख्य घटनाएँ :

(1) सरकारी कर्मचारियों ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया।

(2) लोगों ने अपनी उपाधियों और अवैतनिक कार्यालयों को छोड़ दिया।

(3) वकीलों ने अंग्रेजी अदालतों का बहिष्कार किया।

(4) हजारों विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल–कॉलिजों को छोड़ दिया तथा देशी विद्यालयों और कॉलिजों में दाखिला ले लिया।

(5) विदेशी सामानों की जगह देश में निर्मित सामानों का उपयोग करना शुरू कर दिया गया।

(6) कुछ स्थानों पर लोगों ने परिषदीय चुनावों का बहिष्कार किया।

(7) गांधीजी ने ग्रामीण भारत में कुटीर उद्योगों को पुनर्जीवित करने के लिए चरखे पर सूत कातने का आह्वान किया।

(8) लोगों ने प्रिंस ऑफ वेल्स (इंग्लैंड) का 17 नवंबर 1921 ई. को भारत पहुँचने पर स्वागत नहीं किया।

(9) गांधीजी ने पूरे देश का भ्रमण किया और सैकड़ों सभाओं को संबोधित किया।

(10) किसानों, मजदूरों और आदिवासियों ने भी इस आंदोलन में हिस्सा लिया और सभी गांधीजी के स्वराज का सपना देखने लगे।

(ii) **लाहौर षड्यंत्र केस (1929 ई.) :** भगत सिंह और राजगुरु ने उच्च अंग्रेज पुलिस अधिकारी सांडर्स, जिसने लाहौर में दिसंबर 1928 में साइमन कमीशन का विरोध कर रहे लाला लाजपत राय के जुलूस पर लाठियों का प्रहार करने का आदेश दिया था, की हत्या कर दी। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने 8 अप्रैल 1929 ई. को दिल्ली के केन्द्रीय विधायी सभा कक्ष में बम फेंका। वे इसके माध्यम से ब्रिटिश सरकार का ध्यान दमनात्मक कानूनों की ओर दिलाना चाहते थे, जिसे सार्वजनिक सुरक्षा बिल के नाम से जाना जाता था। इस बिल ने भारतीयों को सिविल स्वतंत्रताओं में कमी कर दी थी। इस दुर्घटना में किसी भी व्यक्ति को कोई नुकसान नहीं पहुँचा था। भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त वहाँ से बचकर नहीं भागे और पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उन पर सांडर्स की हत्या और एसेम्बली बम कांड पर लाहौर की अदालत में मुकदमा चलाया गया। भगत सिंह, राजगुरु और बटुकेश्वर दत्त को 7 अक्टूबर 1930 ई. को मौत की सजा सुनाई गई। उन्होंने 'इन्कलाब जिंदाबाद' के नारे लगाए। उन सभी वीर क्रांतिकारियों को 23 मार्च 1931 ई. में फाँसी पर लटका दिया गया।

(iii) **भारत सरकार का अधिनियम (1935 ई.) :** इस अधिनियम का आधार साइमन कमीशन की रिपोर्ट बनी। इसके अलावा लंदन में आयोजित तृतीय गोलमेज सम्मेलन में लिए गए निर्णयों पर ब्रिटिश सरकार ने श्वेत पत्र जारी किया। यह श्वेत पत्र भारत सरकार अधिनियम 1935 ई. का आधार बना। यह भारतीयों को खुश करने और आंदोलनों को रोकने के लिए पास किया गया। इस अधिनियम की प्रमुख विशेषताएँ अग्रलिखित थीं–

(1) संघ सरकार की स्थापना की गई।

(2) द्वैत शासन व्यवस्था की जगह प्रांतीय स्वायत्ता की व्यवस्था को लागू किया गया।

(3) मंत्री केन्द्र में विधानमंडल और संघ के प्रति उत्तरदायी थे।

(4) विदेशी मामलों और रक्षा विभागों के अतिरिक्त तीन सूचियाँ बनाई गई। संघ सूची, समवर्ती सूची तथा राज्य सूची।

(5) भारत परिषद् को समाप्त कर दिया गया।

(6) भारतीय संविधान में संशोधन करने के लिए ब्रिटिश संसद को अधिकृत कर दिया गया।

(7) सामुदायिक निर्वाचन प्रणाली का विस्तार किया गया।

(8) 98% विवेकाधिकार गवर्नर जनरल को और मंत्रियों को केवल 2% अधिकार प्रदान किए गए।

कांग्रेस ने इस अधिनियम का विरोध किया और स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माण के लिए संवैधानिक विधायिका व्यस्क मताधिकार के आधार पर निर्वाचन हेतु माँग की।

(iv) **भारत विभाजन के कारण :**

(1) अंग्रेजों की 'फूट डालो राज करो' की नीति ने मुसलमानों और हिंदुओं को विभाजित कर दिया।

(2) मिंटों-मार्ले सुधारों और मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचक मण्डल की माँग ने भारत के विभाजन का मार्ग प्रशस्त कर दिया। इसके अतिरिक्त विभाजन में कवि मोहम्मद इकबाल तथा मोहम्मद अली जिन्ना की नीति ने आग में घी का काम किया।

(3) हिंदू और मुसलमानों में परस्पर अविश्वास का उत्पन्न होना।

(4) वीर सावरकर के हिंदू समुदाय को प्रोत्साहित करने का बुरा प्रभाव।

(5) मोहम्मद अली जिन्ना की द्विराष्ट्र सिद्धांत पर हठधर्मिता तथा आंतरिक सरकार का विफल होना भी इस विभाजन के लिए

जिम्मेदार माना गया।

(6) सांप्रदायिक दंगों ने भी इस विभजान की पिशातय की।

(7) अंग्रेजों की दो राष्ट्रों में विभाजन की षड्यंत्रकारी नीति भी इसके लिए जिम्मेदार थी।

(8) लॉर्ड माउण्टबेटन योजना में पाकिस्तान और भारत में भारतीय उपमहाद्वीप का विभाजन निहित था।

4. पूर्ण कीजिए :

(i) 1919 ई. (ii) 1930 ई. (iii) 1922 ई.

(iv) 1940 ई. (v) 1947 ई. (vi) 1945 ई.

(vii) 1940 ई. (viii) 1931 ई.

5. कारण बताइए :

(i) ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस और क्रांतिकारियों की बढ़ती हुई शक्ति दबाने के लिए रोलेट एक्ट 1919 ई. में पास किया।

(ii) रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ब्रिटिश सरकार को 'सर' की उपाधि जलियाँवाला बाग हत्याकांड के बाद वापस कर दी।

(iii) चोरी-चौरा में 22 पुलिस के सिपाही मारे गए। इसे सुनकर गांधीजी बहुत दुखी हुए और इसलिए गांधीजी ने 22 फरवरी 1922 ई. को असहयोग आंदोलन वापस ले लिया।

(iv) भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली की एसेम्बली के सैन्ट्रल हॉल मे बम फेंका था क्योंकि वे इसके माध्यम से ब्रिटिश सरकार का ध्यान दमनात्मक कानूनों की ओर दिलाना चाहते थे।

14 स्वतंत्रता के बाद भारत

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) 1957 ई. (ii) (b) पंजाब

(iii) (c) कश्मीर में (iv) (d) 1949 ई. में

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) 80 लाख (ii) 562

(iii) योजनाओं का निर्माण (iv) 1950 ई.

(v) 1951 ई. में

3. सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
राज्य पुनर्गठन आयोग	फजल अली
आंध्र प्रदेश का निर्माण	पौट्टी श्रीरामूलू
बांग्लादेश का निर्माण	शेख मुजीबुईरमान
चीन का भूतपूर्व प्रधानमंत्री	चाऊ-उन-लाइ
योजनाओं का बड़ा समर्थक	जवाहरलाल नेहरू

4. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य (v) असत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) देशी राज्यों का भारत संघ में विलय, पाकिस्तान का आक्रमण, शरणार्थियों का पुनर्वास, विदेशी उपनिवेशों का विलय, राज्यों और संविधान का निर्माण आदि।

(ii) तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल।

(iii) गोवा, दमन, दीव और दादा एवं नगर हवेली।

(iv) 1971 ई. में।

(v) एन. ए. एम. (गुटनिरपेक्षता) भारत की विदेश नीति का मुख्य सिद्धांत है। यह उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद की कड़ी भर्त्सना करता है।

(vi) पंचशील के संस्थापक यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो, इंडोनेशिया के राष्ट्रपति डॉ. सुकर्णो तथा मिस्र के कर्नल नासिर थे।

(vi) 1998 ई. में।

2. छह पंक्तियों में उत्तर :

(i) स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत में लगभग 562 देशी रियासतें थीं और उनके शासकों को भारतीय संघ में विलीन करने के लिए राजी करना था। साथ ही देश की एकता के लिए इस समस्या का समाधान अति आवश्यक था। भारत के तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने उनको अपनी समझदारीपूर्ण प्रयासों से भारतीय संघ में अपनी रियासतों को विलीन करने के लिए राजी कर लिया। परंतु जूनागढ़, हैदराबाद और जम्मू एवं कश्मीर के शासक इसके लिए तैयार नहीं हुए, जो बाद में क्रमश जनमत संग्रह, पुलिस कार्यवाही और स्वेच्छा से भारत संघ में मिल गए।

(ii) ब्रिटिश शासनकाल में भारतीय कृषि की दशा किसानों और मजदूरों के शोषण के कारण अति दयनीय हो गई थी। बढ़ती हुई जनसंख्या की खाद्य आपूर्ति के लिए अन्न उत्पादन अपर्याप्त था। विभाजन के समय गेहूँ और जूट उत्पादन का एक बड़ा क्षेत्र पाकिस्तान के हिस्से में चला गया था।

(iii) 1971 ई. से पूर्व बांग्लादेश को पूर्वी पाकिस्तान कहा जाता था तथा इसका शासन पाकिस्तान के द्वारा किया जाता था। परंतु 1970 ई. में सीमा विवाद को लेकर 12 दिन तक भारत के साथ पाकिस्तान का युद्ध चला। भारतीय सेनाओं ने शीघ्र ही पूर्वी पाकिस्तान को अपने अधिकार में कर लिया और बाद में इसे बांग्लादेश के नाम से

एक स्वतंत्र राष्ट्र की पहचान मिली। पूर्वी पाकिस्तान के क्रांतिकारी नेता शेख मुजीबुर्रहमान ने अपने देश को स्वतंत्र कराने के लिए इस लड़ाई में भारतीयों का सहयोग लिया और वह अपने मिशन में सफल रहे। 1970 ई. में उनकी पार्टी अवामी लीग ने आम चुनावों में जीत हासिल की थी। इस प्रकार बांग्लादेश का निर्माण हुआ।

(iv) गुटनिरपेक्षता भारत की विदेश नीति का मुख्य सिद्धांत है। यह उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद की कड़ी भर्त्सना करता है। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने गुटनिरपेक्षता के विचार को जन्म दिया। पंचशील (1954 ई.) के सिद्धांतों पर आधारित है।

सिद्धांत :

(1) एक-दूसरे की राज्य सीमा तथा प्रभुसत्ता की परस्पर मान्यता।
(2) एक-दूसरे पर आक्रमण न करना।
(3) एक-दूसरे के आपसी मामलों में हस्तक्षेप न करना।
(4) समानता और आपसी सहयोग।
(5) शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **राज्यों का निर्माण :** 1920 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने स्वतंत्र भारत में राज्यों के निर्माण का आधार भाषा को बनाने का निर्णय लिया परंतु स्वतंत्रता के बाद प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू और उपप्रधानमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कांग्रेसी नेताओं के द्वारा लिए गए निर्णय का पालन नहीं किया परंतु कन्नड, मलयालम, मराठी और तेलुगू बोलने वाले लोग इस बात से सहमत नहीं हुए और उन्होंने अपने राज्यों का निर्माण अपनी भाषाओं के आधार पर करने के लिए प्रदर्शन किए। गांधीवादी नेता पौट्टी श्रीरामूलू तेलुगू भाषी लोगों के लिए अलग राज्य के निर्माण की माँग करते हुए उपवास अवस्था में स्वर्ग सिधार गए। 1952 ई. के आम चुनावी अभियान के दौरान पं. जवाहरलाल नेहरू को इन लोगों के द्वारा दिखाए गए काले झंडों का सामना करना पड़ा। 1 अक्टूबर 1953 ई. को नए राज्य आंध्र प्रदेश का निर्माण हुआ। 1953 ई. में फजल

अली की अध्यक्षता में 'राज्य पुनर्गठन आयोग' की स्थापना की गई। इस आयोग की रिपोर्ट के आधार पर 1956 ई. में 14 राज्यों और 6 केन्द्रशासित प्रदेशों का निर्माण हुआ। केरल, तमिलनाडु, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, असम, बंगाल, उड़ीसा आदि राज्यों का निर्माण भाषा के आधार पर किया गया। वर्तमान में भारत में 28 राज्य और 8 संघशासित प्रदेश हैं।

(ii) **विकासशील कार्यक्रम :** भारत की आर्थिक दशा सुधारने के लिए निर्वाचित सरकार ने विकास की ओर कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाए। इसके लिए 1950 ई. में पंचवर्षीय योजनाओं के निर्माण के लिए योजना आयोग की स्थापना की गई। गरीबी मिटाने और देश का उत्थान करने के लिए कृषि और उद्योगों को वैज्ञानिक आधार पर सुधारा गया। उत्पादन बढ़ाने और रोजगार के अवसरों का सृजन करने के लिए मिश्रित अर्थव्यवस्था का ढाँचा तैयार किया गया। इस कार्य में निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू योजनाओं के पक्के समर्थक थे। देश में कृषि के विकास को वरीयता देते हुए 1951 ई. में प्रथम पंचवर्षीय योजना लागू की गई। दूसरी पंचवर्षीय योजना में भारी उद्योगों और बाँधों के निर्माण के लिए सर्वाधिक ध्यान दिया गया। 1956 ई. में दुर्गापुर और राउरकेला के इस्पात कारखानों के अतिरिक्त रूस के सहयोग से भिलाई इस्पात कारखाना लगाया गया। पंजाब में सतलज नदी पर भाखड़ा-नांगल बाँध तथा उड़ीसा में महानदी पर हीराकुण्ड बाँध बनाए गए। इन बहुउद्देशीय योजनाओं से देश में उद्योगों के लिए विद्युत तथा फसलों की सिंचाई के लिए जल उपलब्ध कराया गया।

वर्तमान में देश में 17वीं पंचवर्षीय योजना चल रही है। विद्युत उत्पादन बढ़ाने के लिए 1957 ई. में बम्बई के समीप भाभा परमाणवीय अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की गई। अब तक देश में 6 परमाणु ऊर्जा केन्द्रों की स्थापना की जा चुकी है। इसके अलावा माण्डला (मध्य प्रदेश) में देश का 7वां परमाणु केन्द्र स्थापित होने जा रहा है।

(iii) **भारत और पाकिस्तान :** स्वतंत्रता प्राप्ति के ठीक बाद से दोनों देशों के संबंध अनेक समस्याओं को लेकर अच्छे नहीं रह सके। 1947 ई. से लेकर आज तक कश्मीर समस्या हल नहीं हो सकी। कश्मीर के मामलों को लेकर प्रथम भारत-पाक युद्ध 1965 ई. में हुआ, जिसका अंत संयुक्त राष्ट्र संघ के हस्तक्षेप के कारण हो सका। दूसरा युद्ध 1971 ई. में पूर्वी पाकिस्तान को लेकर हुआ जो बांग्लादेश के निर्माण का कारण बना। 1972 ई. में कश्मीर सीमा विवाद और नियंत्रण रेखा संबंधी विवाद को लेकर जुल्फिकार अली भुट्टो और श्रीमती इंदिरा गांधी के मध्य द्विपक्षीय वार्ता शांतिपूर्वक शिमला में हुई, जिसे शिमला समझौता के नाम से जानते हैं परंतु सारे प्रयास विफल रहे। 1999 ई. में कारगिल युद्ध लड़ा गया, जिसमें पाकिस्तानी घुसपैठियों को पीछे हटना पड़ा और इसमें भारत विजयी रहा। यद्यपि भारत को इस लड़ाई में बहुत हानि उठानी पड़ी। उसके कई सौ सैनिक युद्ध में मारे गए। पाकिस्तान अपने बहुत-से घुसपैठियों और आतंकवादियों को कश्मीर घाटी में भेज रहा है जो भारत ने गिरफ्तार किए और मारे भी गए। दिसंबर 2001 ई. में पाकिस्तानी आतंकवादियों ने भारत की संसद (दिल्ली) पर हमला कर दिया, जिससे दोनों देशों के बीच संबंध और बिगड़ गए। नवंबर 2008 ई> में पाकिस्तानी आतंकवादियों ने मुम्बई के ताज होटल पर बमों से हमला किया, जिससे कई विदेशी मेहमान और भारतीय मारे गए। इनमें से कसाब नामक एक अपराधी मुम्बई की सैंट्रल जेल में आज भी बंद है।

इसके अतिरिक्त पाकिस्तान सीमा पार से नशीले पदार्थों की तस्करी को बढ़ावा दे रहा है तथा भारत के नकली नोटों की खेप भी पाकिस्तान से भारत में पहुँचकर यहाँ की अर्थव्यवस्था को ध्वस्त करने का प्रयास कर रही है।

4. व्याख्या कीजिए :

(i) **शरणार्थी :** दूसरे देश में शरण लेने वाला।

(ii) **उपनिवेश :** उपनिवेश किसी राज्य के बाहर की उस दूरस्थ बस्ती को कहते हैं, जहाँ उस राज्य की जनता निवास करती है।

(iii) **योजना आयोग :** योजनाओं के सफल कार्यान्वयन के लिए भारत सरकार की एक संस्था, जिसका प्रमुख कार्य पंचवर्षीय योजनाएँ बनाना है, योजना आयोग कहलाता है।

(iv) **नाम :** एन. ए. एम. (गुटनिरपेक्षता) भारत की विदेश नीति का मुख्य सिद्धांत है। यह उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद की कड़ी भर्त्सना करता है।

(v) **सार्क :** दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (ै।त्ब)। दक्षिण एशिया के आठ देशों का आर्थिक और राजनीतिक संगठन है।

इकाई III : सामाजिक और राजनीतिक जीवन

1 हमारा संविधान और कानून

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) 26 जनवरी 1950 ई. में (ii) (c) 395

(iii) (b) 1955 ई. (iv) (a) 1989 ई.

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति :

(i) कानूनों (ii) 395 (iii) संविधान

(iv) सामान्य (v) सामान्य नियमों

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) असत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) नियम-कानून, जो देश की सरकार को चलाते हैं, संविधान कहलाते हैं।

(ii) 26 जनवरी 1950 ई. को।

(iii) व्यवस्थापिका।

(iv) कभी-कभी सरकार द्वारा बनाए गए नियम समाज की भलाई और रुचि विरोधी होते हैं। इसके परिणामस्वरूप लोग इसका विभिन्न प्रकार की राय या मतों से विरोध करते हैं, जिसे मतभेद कहते हैं।

(v) 12 मार्च 1930 ई. को।

2. छह पंक्तियों में उत्तर :

(i) हमारा संविधान देश में कानून के शासन की माँग करता है। कानून लोगों की बुराइयों और अन्यायो से सुरक्षा प्रदान करके उनकी भलाई का कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए, विवाह के अवसर पर लड़की वाले लड़के वालों को दहेज के रूप में पैसा, सोना, चाँदी, कीमती सामान उपहार आदि भेंट करते हैं। परंतु यदि निषेध कानून दहेज लेने वाले और देने वाले दोनों को ही दंडित करने का प्रावधान करता है। बहुत-से कानून जनता की बुरी प्रथाओं से सुरक्षा करने के लिए बनाए गए हैं। ये बुरी प्रथाएँ केवल मानव का अपमान ही नहीं करती बल्कि उसकी आर्थिक उन्नति में भी रूकावट बनती हैं। कानून कार्यवाही के सामान्य नियम हैं। हमने कानूनों का निर्माण अपनी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दशा को बेहतर बनाने के लिए किया है।

(ii) निम्नलिखित कारणों से हमें संविधान की आवश्यकता पड़ती है–

(1) यह नागरिकों के मूल अधिकारों और कर्तव्यों की व्याख्या करता है।

(2) यह केन्द्र और राज्य स्तर पर सरकार के निर्माण और कार्यों

का महत्व बताता है।

(3) यह कार्यकारिणी, व्यवस्थापिका और न्यायपालिका के कार्यों का विभाजन करता है।

(4) यह महत्त्वपूर्ण सरकारी संस्थाओं; जैसे–संघ लोक सेवा आयोग, महालेखा परीक्षक तथा महान्यायवादी भारत सरकार आदि के महत्त्व और कार्यों की व्याख्या करता है।

(iii) **सामान्य नियम :** राज्यों के कानूनों को सामान्य कानून कहा जाता है। वे नियम या कानून जनता के लिए प्रयोग हेतु आम है परंतु संवैधानिक कानून इनसे ज्यादा प्रभावी हैं। यदि राज्यों के कानूनों को लेकर कोई विवाद उत्पन्न हो जाता है तब संवैधाानिक कानूनों के समक्ष ये बौने साबित होते हैं और इनका महत्त्व स्वत: ही समाप्त हो जाता है। सामान्य नियमों को संवैधानिक कानूनों की अपेक्षा बिना किसी विशेष प्रक्रिया के आसानी से बदला जा सकता है।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **कानून और मतभेद :** कभी-कभी सरकार द्वारा बनाए गए नियम समाज की भलाई और रुचि विरोधी होते हैं। इसके परिणामस्वरूप लोग इसका विभिन्न प्रकार की राय या मतों से विरोध करते हैं, जिसे मतभेद कहते हैं। ब्रिटिश शासनकाल में होने वाल विभिन्न घटनाएँ इसके उदाहरण हैं। इस प्रकार के अनेक मतभेद वर्तमान में भी अपने देश में देखे जा सकते हैं। साइमन कमीशन का भारतीयों ने विरोध किया तथा बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलन भी मतभेद का एक अच्छा उदाहरण है। इसके अतिरिक्त कानून तोड़ने के लिए गांधीजी की डांडी यात्रा आदि भी इसके अच्छे उदाहरण हैं।

(ii) साइमन कमीशन का भारतीयों ने विरोध किया तथा बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलन भी मतभेद का एक अच्छा उदाहरण है। इसके अतिरिक्त कानून तोड़ने के लिए गांधीजी की डांडी यात्रा आदि भी इसके अच्छे उदाहरण हैं।

4. **निम्नलिखित का क्या कारण है?**

(i) मतभेद प्रकट करने के लिए साइमन कमीशन का भारतीयों ने विरोध किया।

(ii) 1930 ई. में महात्मा गांधी के नेतृत्व में पूर्ण स्वराज प्राप्त करने के लिए सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया गया।

(iii) उत्तराखण्ड की महिलाएँ अकसर प्रशासन और राज्य सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए शराब विरोधी आंदोलन छेड़ती हैं।

(iv) गांधीजी ने गुजरात के डांडी नामक स्थान पर नमक कानून तोड़कर नमक बनाया। इस प्रकार नमक कानून तोड़कर उन्होंने अंग्रेजों को चेताया कि उनके द्वारा नमक पर लगाया कर उन्हें वापस लेना पड़ेगा।

2 मूल अधिकार एवं कर्त्तव्य

रचनात्मक निर्धारण

1. **सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :**

(i) (a) 12–35 (ii) (b) 6

(iii) (a) 10

(iv) (c) संवैधानिक उपचारों का अधिकार

(v) (c) संपत्ति का अधिकार

2. **रिक्त स्थानों की पूर्ति :**

(i) विभिन्न जातियाँ (ii) 35

(iii) समान (iv) 14

3. **सत्य या असत्य बताइए :**

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य

4. **मूल अधिकारों को पहचानिए :**

(i) स्वतंत्रता का अधिकार।

(ii) समानता का अधिकार।

(iii) संवैधानिक उपचारों का अधिकार।

(iv) संवैधानिक उपचारों का अधिकार।

(v) सांस्कृतिक एवं शैक्षिक अधिकार।

(vi) धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार।

संकलित निर्धारण

1. **एक पंक्ति में उत्तर :**

(i) स्वतंत्रता का अधिकार, समानता का अधिकार, संवैधानिक उपचारों का अधिकार, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार।

(ii) संपत्ति का अधिकार।

(iii) सांस्कृतिक एवं शैक्षिक अधिकार।

(iv) पूरे देश में कहीं भी बसने और घर बनाने की स्वतंत्रता।

2. **छह पंक्तियों में उत्तर :**

(i) **(क) समानता का अधिकार :** कानून की दृष्टि में सब समान हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 15 के अनुसार किसी भी व्यक्ति से धर्म, वंश, लिंग, जाति, जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता। सरकारी नौकरियों में सबको समान अवसर उपलब्ध कराए गए परंतु अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और समाज के पिछड़े वर्गों के लोगों को नौकरियों में आरक्षण प्रदान किया जाएगा। इसके द्वारा छुआछूत और उपाधियों का अंत कराया गया है। परंतु शैक्षिक ओर सैनिक उपाधियों को छोड़ दिया गया है। इसी के साथ दूसरी और राज्य की महिलाओं, बच्चों, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़ी जातियों की भलाई के लिए कुछ विशेष नियम और कानून बनाने के लिए छूट प्रदान की गई है।

(ख) धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार : चूँकि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है, इसलिए यहाँ के प्रत्येक नागरिक को अपने धर्म के अनुसार पूजा-पाठ और प्रचार करने तथा धार्मिक व्याख्यान देने का अधिकार है। धर्म विशेष के उपासक अपने पूजा स्थानों की स्थापना करने के लिए स्वतंत्र हैं।

(ii) संवैधानिक उपचारों का अधिकार नागरिकों को दिए गए मूल अधिकारों की रक्षा की गारंटी देता है। यदि किसी मूलाधिकार का उल्लंघन किया जा रहा हो तो कोई भी व्यक्ति इनकी रक्षा के विरुद्ध उच्चतम न्यायालय की शरण में जा सकता है। परंतु यह अधिकार राष्ट्रपति द्वारा आपातकालीन घोषणा किए जाने के दौरान निलंबित हो जाता है।

उपरोक्त के अतिरिक्त 14 वर्ष की आयु के बच्चों को नि:शुल्क प्राथमिक शिक्षा का अधिकार दिया गया है। सरकार ने इसे कानून बनाकर अनिवार्य कर दिया है।

(iii) मूलाधिकार मूल स्वतंत्रताओं को सम्मिलित किए हुए है जो जीवन को महत्त्वपूर्ण और प्रजातंत्र को परिणामयुक्त बनाते हैं। इसके अतिरिक्त ये अधिकार नागरिकों की उचित नैतिक तथा भौतिक उन्नति के लिए आवश्यक हैं।

3. दस पंक्तियों में उत्तर :

(i) भारतीय संविधान में नागरिकों को छ: मूल अधिकार हैं। इनमें से किन्हीं चार का वर्णन निम्नलिखित है :

(1) समानता का अधिकार : कानून की दृष्टि में सब समान हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 15 के अनुसार किसी भी व्यक्ति से धर्म, वंश, लिंग, जाति, जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता। सरकारी नौकरियों में सबको समान अवसर उपलब्ध कराए जाएँगे।

(2) स्वतंत्रता का अधिकार : इस अधिकार के अंतर्गत नागरिकों

को छह प्रकार की स्वतंत्रताओं का प्रावधान किया गया है– (a) भाषण और विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता। (b) बिना हथियारों के शांतिपूर्वक इकट्ठा होने की स्वतंत्रता। (c) पूरे देश में घूमने की स्वतंत्रता। (d) पूरे देश में कहीं भी बसने और घर बनाने की स्वतंत्रता। (e) संघ और एसोसियेशन बनाने की स्वतंत्रता। (f) किसी भी व्यवसाय को करने की स्वतंत्रता।

(3) धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार : चूँकि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है इसलिए यहाँ के प्रत्येक नागरिक को अपने धर्म के अनुसार पूजा-पाठ और प्रचार करने तथा धार्मिक व्याख्यान देने का अधिकार है। धर्म निरपेक्ष के उपासक अपने पूजा स्थलों की स्थापना करने के लिए स्वतंत्र हैं।

(4) शोषण के विरुद्ध अधिकार : यह अधिकार महिलाओं, बच्चों, बड़ों, गरीबों, विकंलागों आदि का अनेक माध्यमों से होने वाले शोषण से बचाव करता है। हमारा संविधान 14 वर्ष से कम आयु के बालकों से होटलों, दुकानों, कारखानों, खेतों, खानों में काम लेने पर रोक लगाता है। इस अधिकार के द्वारा बलपूर्वक श्रम लेने पर रोक लगी है। यह एक शोषण है, जिस पर संविधान रोक लगाता है।

(ii) भारतीय संविधान में नागरिकों के 10 मूल कर्तव्य बताए गए हैं:

(1) भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह संविधान का पालन करे तथा उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें।

(2) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे तथा उसे बनाए रखे।

(3) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे।

(4) भारत के सभी लोगों में समरसता और भ्रातृत्व की भावना का विकास करे, जो धर्म भाषा, प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी प्रकार

के भेदभाव से परे हो।

(5) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार भावना का विकास करे।

(6) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे व हिंसा से दूर रहे।

(7) प्राकृतिक पर्यावरण, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी एव वन्य जीव भी सम्मिलित हैं, की रक्षा करे और प्राणीमात्र के प्रति दया का भाव रखे।

(8) स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को ह्दय में सजोये रखें तथा उनका पालन करे।

(9) हमारी समन्वित संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका संरक्षण करे।

(10) व्यक्तिगत एवं सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नवीन ऊँचाइयों का स्पर्श कर सके।

4. निम्नलिखित शब्दों की व्याख्या कीजिए :

(i) **संविधान :** सरकार को चलाने के लिए नियम तथा कानून।

(ii) **प्रजातंत्र :** जनता के द्वारा, जनता के लिए, जनता की सरकार का शासन प्रजातंत्र कहलाता है।

(iii) **खतरनाक काम :** ऐसे कार्य जिनसे किसी की जिंदगी को खतरा हो खतरनाक काम कहलाते हैं।

(iv) आपातकाल : ऐसी अवधि जिसके दौरान सामान्य राजनीतिक प्रक्रिया और मौलिक अधिकार निलंबित कर दिए जाएँ, आपातकाल कहलाता है।

(v) **मानव क्रय-विक्रय :** मानव की खरीद-ब्रिकी करना।

3 संसद एवं उसके कार्य

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) संसद (ii) (b) प्रधानमंत्री

(iii) (d) 12 (iv) (b) लोकसभा

(v) (a) लोकसभा के प्रति

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति :

(i) उच्च सदन, निम्न सदन (ii) स्पीकर

(iii) विधेयक (iv) तीन (v) 250

3. सही कथन पर (✓) का चिह्न :

(i) (✓) (ii) (✓) (iii) (×)

(iv) (✓) (v) (×)

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) निर्वाचित लोगों का समूह संसद कहलाता है।

(ii) उच्च सदन, निम्न सदन।

(iii) कानून बनाने के लिए लिखित प्रस्ताव विधेयक कहलाता है।

(iv) लोकसभा का पीठासीन अधिकारी स्पीकार होता है।

(v) एंग्लो इंडियन सदस्य।

(vi) भारत का राष्ट्रपति संसद के संयुक्त अधिवेशन की अध्यक्षता करता है।

(vii) लोकसभा (निम्न सदन) में।

(viii) तृतीय वाचन में।

(ix) लोकसभा में 543 सदस्य तथा राज्यसभा में 250 सदस्य हैं।

(xi) **शून्यकाल :** सभा की शुरूआत और प्रश्नकाल के मध्य का समय 'शून्यकाल' कहलाता है।

(x) संसद की प्रत्येक सभा का प्रथम घंटा प्रश्नकाल कहलाता है।

2. छह पंक्तियों में उत्तर :

(i) **लोकसभा के सदस्यों की योग्यताएँ :**

(1) वह भारत का नागरिक हो तथा 25 वर्ष से कम आयु का न हो।

(2) वह जिस स्थान पर निवास कर रहा है वहाँ के लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र की मतदाता सूची में उसका नाम पंजीकृत होना चाहिए।

(3) वह पागल, दिवालिया और सरकारी नौकरी में नहीं होना चाहिए।

(4) संसद द्वारा निर्मित कानून के अंतर्गत वह किसी भी प्रकार से अयोग्य नहीं होना चाहिए।

राज्यसभा के सदस्यों की योग्यताएँ :

(1) वह भारत का नागरिक हो उसकी आयु 30 वर्ष से कम न हो।

(2) वह सरकारी नौकरी पर नियुक्त नहीं होना चाहिए।

(3) उसका नाम उस राज्य की निर्वाचन नामावली में अंकित होना चाहिए, जिस राज्य से वह प्रत्याशी बनना चाहता है।

(4) वह दिवालिया, पागल या संसद द्वारा पारित कानून के अंतर्गत अयोग्य न ठहराया गया हो।

(ii) **लोकसभा के निर्वाचन की प्रक्रिया :** 18 वर्ष का कोई भी व्यक्ति लोकसभा के चुनाव में मत डाल सकता है। पूरा देश 543 संसदीय क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। अधिकतम मत प्राप्त करने वाला प्रत्येक प्रत्याशी लोकसभा का सदस्य निर्वाचित होता है, जिसे सांसद कहते हैं। लोकसभा के लिए चुनाव प्रत्यक्ष निर्वाचन

पद्धति पर आधारित होता है।

(iii) **राज्य सभा के कार्य :**

(1) संविधान सभा में संशोधन करने का अधिकार प्राप्त है।

(2) राज्य सभा में वित्तीय विधेयक को छोड़कर किसी भी विधेयक को पेश किया जा सकता है।

(3) राज्य सभा के निर्वाचन सदस्य राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनाव में भाग लेते हैं।

(4) राज्य सभा वित्तीय विधेयक को अपने पास विचार-विमर्श के लिए अधिकतम 14 दिनों तक रोक सकती है। यदि विधेयक 14 दिन तक पास नहीं किया जाता तो उसे पास मान लिया जाता है।

(5) राज्य सभा को लोकसभा के साथ मिलकर राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, उच्चतम तथा उच्च न्यायालयों के सदस्यों पर अभियोग चलाने का अधिकार प्राप्त है।

(6) राज्यसभा केंद्रीय सरकार को 2/3 सदस्यों के बहुमत से नई अखिल भारतीय सेवा का गठन करने का अधिकार प्रदान करती है।

(7) राज्यसभा के सदस्य मंत्रियों से प्रश्न पूछ सकते हैं और उसकी आलोचना भी कर सकते हैं।

(8) राज्यसभा राज्य सूची के किसी भी विषय को एक वर्ष के लिए राष्ट्रीय महत्त्व का घोषित कर सकती है।

(iv) **लोकसभा के कार्य :**

(1) लोकसभा, राज्यसभा के साथ मिलकर राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के चुनाव में भाग लेती है।

(2) यह संघ सूची तथा समवर्ती सूची के कुछ निश्चित विषयों पर कानून बना सकती है।

(3) इसे कुछ वित्तीय अधिकार भी प्रदान किए गए हैं, जिनके अंतर्गत बजट पास करना तथा केंद्रीय सरकार की आय और व्यय पर नियंत्रण रखना आदि आते हैं।

(4) यह कार्यपालिका पर भी नियंत्रण रखती है।

(5) इसे संविधान में संशोधन करने का भी अधिकार है। संशोधन विधेयक संसद के किसी भी सदन में पेश किया जा सकता है परंतु इसके 2/3 सदस्यों के बहुमत से राज्यसभा को इसे पास करना पड़ता है।

(6) यदि राज्यसभा किसी धन विधेयक को 14 दिन तक बिना पास किए अपने पास रोके रखती है तो लोकसभा इसे पास मान लेती है।

(7) धन विधेयक केवल लोकसभा में ही पेश किया जा सकता है। इसके पश्चात् यह राज्यसभा की संस्तुति के लिए राज्यसभा में भेजा जाता है।

(8) लोकसभा मंत्रिपरिषद से प्रश्न पूछकर उस पर नियंत्रण रखती है।

(v) **लोकसभा और राज्यसभा के अध्यक्ष :**

लोकसभा का अध्यक्ष : लोकसभा का पीठासीन अधिकारी स्पीकर होता है, जिसका चुनाव इसी के सदस्यों में से किया जाता है। अध्यक्ष उपाध्यक्ष का चुनाव करता है, जो उसकी अनुपस्थिति में कार्य करता है।

राज्यसभा का अध्यक्ष : राज्यसभा का अध्यक्ष भारत का उपराष्ट्रपति होता है। इसके उपाध्यक्ष का चुनाव इसके सदस्यों में से किया जाता है। अध्यक्ष इसके लिए मतदान नहीं कर सकता, क्योंकि वह इसका निर्वाचित सदस्य नहीं होता है।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) विधेयक को कानून बनाने के लिए निम्न प्रक्रिया प्रयोग की जाती है–

(1) प्रस्तुतीकरण तथा प्रथम वाचन : संसद में साधारण विधेयक किसी भी सदन में व्यक्तिगत सदस्य या मंत्री द्वारा प्रस्तुत

किए जा सकते हैं। सभापति विधेयक को सदन में रखने की तारीख निश्चित करता है और उस निश्चित तिथि पर इसे प्रस्तुत किया जाता है। संसद सदस्य विधेयक के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा करते हैं।

(2) द्वितीय वाचन : प्रथम वाचन के बाद निश्चित तिथि पर विधेयक को दूसरी बार पढ़ा जाता है। विधेयक के मूल सिद्धांतों और उद्देश्यों पर वाद-विवाद किया जाता है। सदस्य इस पर अपने विचार और मत प्रकट करता है। कुछ इसका विरोध करते हैं तो कुछ इसके पक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करते हैं तथा अपने तर्क देते हैं। इसके पश्चात् विधेयक एक समिति को भेज दिया जाता है। समिति विधेयक पर अपनी सिफारिशें देती है। अपनी सिफारिशों सहित समिति विधेयक को वापिस सदन में भेज देती है। समिति की रिर्पोट पर सदस्यों द्वारा गहन वाद-विवाद होता है। इसका प्रत्येक धारा पर गहनता से विचार होता है। इसके बाद विधेयक बहुमत से पारित कर दिया जाता है।

(3) तृतीय वाचन : सदन में विधेयक का यह अंतिम चरण होता है। इस अवस्था में विधेयक के सामान्य सिद्धांतों पर वाद-विवाद किया जाता है। तृतीय वाचन के दौरान इसमें केवल मौखिक संशोधन किए जाते हैं। मतदान के बाद इसे द्वितीय सदन में भेज दिया जाता है। इस सदन में प्रथम सदन की भाँति विधेयक पारित हो जाता है और इसे दोनों सदनों द्वारा पारित मान लिया जाता है। यदि दोनों सदनों के विचारों में विधेयक को लेकर कोई मतभेद है तो इसे संसद में संयुक्त अधिवेशन में प्रस्तुत किया जाता है और अंत में इसे पारित मान लिया जाता है।

(ii) **लोकसभा और राज्यसभा की तुलना :**

क्र.सं.	लोकसभा	राज्य सभा
1.	धन विधेयक केवल लोकसभा में ही प्रस्तुत किया जा सकता है।	धन विधेयक के अतिरिक्त कोई भी विधेयक राज्य सभा में प्रस्तुत किया जा सकता है।
2.	कानून निर्माण के मामलों में लोकसभा ज्यादा शक्तिशाली सदन है।	राज्यसभा कानून निर्माण के मामलों में ज्यादा शक्तिशाली सदन नहीं है।
3.	लोकसभा में सदस्यों की संख्या 543 है।	राज्यसभा में सदस्यों की संख्या 250 है।
4.	इस सदन को भंग किया जा सकता है, इसलिए यह एक अस्थाई सदन है। इसके लिए प्रत्येक 5 वर्ष के पश्चात् आम चुनाव होते हैं।	इसे भंग नहीं किया जा सकता, इसलिए यह एक स्थायी सदन है। इसके लिए प्रति दो वर्ष पश्चात् चुनाव होते हैं।
5.	इसके लिए प्रत्यक्ष चुनाव पद्धति का प्रयोग होता है।	इसके लिए अप्रत्यक्ष चुनाव पद्धति का प्रयोग होता है।
6.	लोकसभा का अध्यक्ष संसद के संयुक्त अधिवेशन की अध्यक्षता करता है।	राज्यसभा का अध्यक्ष संसद के संयुक्त अधिवेशन की अध्यक्षता नहीं कर सकते।
7.	मंत्रिपरिषद् सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होती है।	मंत्रिपरिषद् सामूहिक रूप से राज्यसभा के प्रति उत्तरदायी नहीं होती है।
8.	लोकसभा के सदस्य मंत्रियों को उनके विभागों से हटाने के लिए अविश्वास प्रस्ताव ला सकते हैं।	यह अधिकार राज्यसभा के सदस्यों को नहीं दिया गया है।

(iii) **लोकसभा :** देश के नागरिकों का प्रतिनिधि सदन लोकसभा कहलाता है, जो संसद का निम्न सदन है।

संगठन : संविधान में इस समय लोकसभा के 552 सदस्यों का प्रावधान है। इनमें 530 सदस्य राज्यों और 20 सदस्य केंद्रशासित प्रदेशों का प्रतिनिधित्व करते हैं। राष्ट्रपति 2 एंग्लोइंडियन सदस्यों की नियुक्ति करता है। वर्तमान में लोकसभा में 545 सदस्य हैं।

योग्यताएँ :

(1) वह भारत का नागरिक हो तथा 25 वर्ष से कम आयु का न हो।

(2) वह जिस स्थान पर निवास कर रहा है, वहाँ के लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र की मतदाता सूची में उसका नाम पंजीकृत होना चाहिए।

(3) वह पागल, दिवालिया और सरकारी नौकरी में नहीं होना चाहिए।

(4) संसद द्वारा निर्मित कानून के अंतर्गत वह किसी भी प्रकार से अयोग्य नहीं होना चाहिए।

अध्यक्ष : लोकसभा का पीठासीन अधिकारी स्पीकर होता है, जिसका चुनाव इसी के सदस्यों में से किया जाता है। अध्यक्ष उपाध्यक्ष का चुनाव करता है, जो उसकी अनुपस्थिति में कार्य करता है।

कार्यकाल : सामान्यतः लोकसभा का कार्यकाल 5 वर्ष होता है। परंतु संकटकाल में इसे बढ़ाया भी जा सकता है। प्रधानमंत्री की सिफारिश पर राष्ट्रपति इसे 5 वर्ष से पूर्व भी भंग कर सकता है। इसकी भंग होने की घोषणा के 6 माह के भीतर इसका चुनाव हो जाना चाहिए।

4 भारत की न्यायपालिका

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) नई दिल्ली में (ii) (a) 26

(iii) (c) 1,00,000 रुपये (iv) (a) राष्ट्रपति

2. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) असत्य (v) सत्य (vi) सत्य

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति :

(i) राष्ट्रपति (ii) 1,00,000 रुपये (iii) निर्णय

(iv) उच्च न्यायालय (v) सत्र न्यायाधीश।

4. निम्नलिखित के उचित कारण बताइए :

(i) न्यायाधीशों को पदच्युत करने की प्रक्रिया अति जटिल है क्योंकि न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है तथा उनके खेत्राधिकार काफी विस्तृत हैं।

(ii) क्योंकि उच्च अदालतों के पास अपीलीय क्षेत्राधिकार की शक्ति होती है तथा निचली अदालतों के क्षेत्राधिकार सीमित होते हैं।

(iii) भारत सरकार ने नागरिकों को भारतीय संविधान में प्रदत्त मूलाधिकारों तथा मानवाधिकारों की रक्षा के लिए निम्न स्तर से उच्च स्तर तक अदालतों की स्थापना की है।

(iv) सराकर ने लोक अदालतों की स्थापना की है क्योंकि इसमें न कोई वकील, न कोई फीस लगती है तथा समय भी बहुत कम लगता है।

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) नई दिल्ली में।

(ii) 25 न्यायाधीश।

(iii) राष्ट्रपति।

(iv) **उच्चतम न्यायालय के कार्य :** (1) उच्चतम न्यायालय में उच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध अपील की जा सकती है।

(2) उच्चतम न्यायालय संविधान में उल्लिखित मूल अधिकारों की रक्षा करता है।

(v) उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश 65 वर्ष तक तथा उच्च न्यायालय का न्यायाधीश 62 वर्ष की आयु तक अपने पद पर बने रह सकते हैं परंतु वह इससे पूर्व भी स्वेच्छा से त्यागपत्र दे सकते हैं।

(vi) 1988 ई. में मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में देश की प्रथम लोक अदालत स्थापित की गई थी।

(vii) राज्य का सबसे बड़ा न्यायालय – उच्च न्यायालय।

जिले का सबसे बड़ा न्यायालय – दीवानी अदालत।

(viii) राष्ट्रपति।

(ix) सत्र न्यायाधीश या अपर सत्र न्यायाधीश।

(x) उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश होने के लिए निम्नलिखित योग्यताएँ होनी चाहिए :

(1) वह भारत का नागरिक हो तथा उसकी आयु 65 वर्ष से कम हो।

(2) वह भारत के किसी भी राज्य के उच्च न्यायालय में 5 वर्ष तक न्यायाधीश रह चुका हो या उच्च न्यायालय में 10 वर्ष तक अधिवक्ता रहा हो, या राष्ट्रपति की राय में एक प्रसिद्ध न्यायाविद् रहा हो।

2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 7 पंक्तियों में दीजिए :

(i) उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश होने के लिए व्यक्ति में अग्रलिखित योग्यताएँ होनी चाहिए :

(1) वह भारत का नागरिक हो तथा उसकी आयु 65 वर्ष से कम हो।

(2) वह भारत के किसी भी राज्य के उच्च न्यायालय में 5 वर्ष तक न्यायाधीश रह चुका हो या उच्च न्यायालय में 10 वर्ष तक अधिवक्ता रहा हो।

या

राष्ट्रपति की राय में एक प्रसिद्ध न्यायविद् रहा हो।

(ii) लोक अदालत एक अस्थायी अदालत है, जहाँ विवाह, तलाक, किराया, मोटर-वाहन, चालान, बीमा, अवैध निर्माण, परिवार, समाज आदि से संबंधित मुकदमों का फैसला किया जाता है। इसमें न कोई वकील, न कोई फीस लगती है तथा समय भी बहुत कम लगता है। इन अदालतों में अवकाश प्राप्त जज, राजपत्रित अधिकारी और समाज के सम्मानित व्यक्ति परामर्शदाताओं के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करते हैं।

इसमें सामाजिक समझौते के आधार पर बिना किसी वकील के आपसी समझौता कर दिया जाता है। ये अदालते चेतावनी और दंड की घोषणा करती हैं।

(iii) अभिलेख न्यायालय अपने द्वारा दिए गए निर्णयों को संरक्षित करने के लिए उनका रिकॉर्ड रखता है ताकि अधीनस्थ न्यायालय उन्हें अपने फैसलों की नजीर बना सकें।

(iv) **उच्चतम न्यायालय का अपीलीय क्षेत्राधिकार :**

(1) उच्चतम न्याययलय में उच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध अपील की जा सकती है।

(2) यह अपील दीवानी, फौजदारी या वैधानिक निर्णयों के संदर्भ में की जा सकती है।

(3) संविधान की व्याख्या से संबंधित मुकदमें में किसी प्रश्न के संदर्भ में पुनर्विचार की प्रार्थना उच्चतम न्यायालय में की जा सकती है।

उच्च न्यायालय का अपीलीय क्षेत्राधिकार : अधीनस्थ

न्यायालयों के निर्णयों के विरूद्ध की गई अपीलों की सुनवाई करता है, जिसके अंतर्गत यह दीवानी, फौजदारी और राजस्व संबंधी मुकदमों की सुनवाई करता है। यह मुकदमों को एक न्यायालय से दूसरे न्यायालय में स्थानांतरित भी कर सकता है। यदि किसी निचली अदालत में अर्थात् जिला सत्र न्यायाधीश की अदालत में किसी व्यक्ति को मृत्युदंछ की सजा सुनाई गई हो तो इसका अनुमोदन उच्च-न्यायालय द्वारा होना आवश्यक है। दूसरे, यदि फौजदारी के मामलों में सेंशन कोर्ट ने मृत्युदंड दिया हो तो उच्च न्यायालय में अपील की जा सकती है।

(v) उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश का वेतन 1,00,000 रुपये तथा अन्य न्यायाधीशों का वेतन 90,000 रुपये प्रतिमाह है। इसके अतिरिक्त वह अन्य भत्ते, नि:शुल्क सुसज्जित आवास, कार, ड्राइवर, परिचर आदि की सुविधाएँ भी प्राप्त करता है। अवकाश प्राप्त होने के बाद उसे पेंशन आदि के लाभ आजीवन मिलते रहते हैं।

(vi) **उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की योग्यताएँ :** उच्च न्यायालय का न्यायाधीश होने के लिए व्यक्ति में निम्नलिखित योग्यताएँ होनी चाहिए–

(1) वह भारत का नागरिक हो तथा उसकी आयु 62 वर्ष से कम न हो।

(2) वह एक या एक से अधिक उच्च न्यायालयों में 10 वर्ष तक वकालत कर चुका हो या 10 वर्ष तक न्यायिक पद पर कार्य कर चुका हो।

(3) राष्ट्रपति की दृष्टि में वह एक प्रसिद्ध न्यायविद् रहा हो।

उच्च न्यायालय के न्यायाधीश का कार्यकाल : उच्च न्यायालय का न्यायाधीश 62 वर्ष तक की आयु पूरी होने तक अपने पद पर बना रह सकता है परंतु वह स्वेच्छा से भी इससे पूर्व त्यागपत्र दे सकता है। भारतीय संसद अयोग्तया के आधार पर उच्च न्यायालय के न्यायाधीश को हटाने के लिए राष्ट्रपति से सिफारिश कर सकती

है। परंतु अयोग्यता को सिद्ध करने के लिए संसद में दो-तिहाई बहुमत होना आवश्यक है।

(vii) **राजस्व न्यायालय :** भू-राजस्व से संबंधित सारे मुकदमे राजस्व न्यायालय में तय किए जाते हैं। इन मुकदमों का फैसला करने के लिए राजस्व परिषद, कमिश्नर (आयुक्त), जिला न्यायाधीश, एस. डी.एम., तहसीलदार, नायब तहसीलदार अपनी अदालतें लगाते हैं। ये सभी अदालतें उच्च न्यायालय के अधीन कार्य करते हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10 या 12 पंक्तियों में दीजिए :

(i) **उच्चतम न्यायालय का संगठन :** भारत के उच्चतम न्यायालय में 26 न्यायाधीश तथा एक मुख्य न्यायाधीश होता है परंतु वर्तमान में यहाँ 25 न्यायाधीश और एक मुख्य न्यायाधीश है। संसद को न्यायाधीशों की संख्या बढ़ाने का अधिकार है।

उच्चतम न्यायालय की शक्तियाँ :

(1) प्रारंभिक क्षेत्राधिकार : उच्चतम न्यायालय को निम्नलिखित क्षेत्राधिकार प्राप्त हैं–

(a) भारत सरकार तथा राज्य सरकार/सरकारों के बीच उत्पन्न विवाद।

(b) दो राज्यों या दो से अधिक राज्यों के बीच उत्पन्न विवाद।

(c) केंद्र सरकार और एक या अधिक राज्यों का पक्ष तथा दूसरी ओर एक या एक से अधिक राज्यों के मध्य उत्पन्न विवाद।

(2) अपीलीय क्षेत्राधिकार : (a) उच्चतम न्यायालय में उच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध अपील की जा सकती है।

(b) यह अपील दीवानी, फौजदारी या वैज्ञानिक निर्णयों के संदर्भ में की जा सकती है।

(c) संविधान की व्याख्या से संबंधित मुकदमे में किसी प्रश्न के संदर्भ में पुनर्विचार की प्रार्थना उच्चतम न्यायालय में की जा सकती है।

(3) मंत्रणा संबंधी अधिकार : यदि राष्ट्रपति चाहे तो सार्वजनिक

हित के मामलों के प्रश्न पर वह उच्चतम न्यायालय से मंत्रणा (परामर्श) ले सकता है परंतु राष्ट्रपति इसके लिए बाध्य नहीं है।

(4) संविधान और मूल अधिकारों का रक्षक : उच्चतम न्यायालय संविधान में उल्लिखित मूल अधिकारों की रक्षा करता है। यदि नागरिकों के इन अधिकारों का उल्लंघन किया जा रहा हो तो उच्चतम न्यायालय इसे अवैधानिक घोषित कर सकता है। यदि राज्य या संघ सरकार द्वारा पारित कानून संविधान विरोधी हो तो वह उन्हें समाप्त कर सकता है। यह संविधान की अंतिम रूप से व्याख्या करता है।

(ii) **उच्च न्यायालय की शक्तियाँ :** उच्च न्यायालय की शक्तियाँ और कार्य निम्न प्रकार हैं–

(1) प्रारंभिक क्षेत्राधिकार : यह अपने पास सीधे आए हुए मुकदमों की सुनवाई करता है। यह संसद या राज्य व्यवस्थापिका द्वारा परित उन कानूनों को, जो संविधान की अवहेलना या नागरिक के मूल अधिकारों की रक्षा के विरुद्ध हों अवैधानिक घोषित कर सकता है। यह अदालत की अवहेलना के मुकदमों को भी सुनता है तथा मूल अधिकारों की रक्षा के लिए याचिका दायर कर सकता है।

(2) अपीलीय क्षेत्राधिकार : यह अपने अधीनस्थ न्यायालयों के निर्णयों के विरुद्ध की गई अपीलों की सुनवाई करता है, जिसके अंतर्गत यह दीवानी, फौजदारी और राजस्व संबंधी मुकदमों की सुनवाई करता है। यह मुकदमों को एक न्यायालय से दूसरे न्यायालय में स्थानान्तरित भी कर सकता है। यदि किसी निचली अदालत में अर्थात् जिला सत्र न्यायाधीश की अदालत में किसी व्यक्ति को मृत्युदंड की सजा सुनाई गई हो तो इसका अनुमोदन उच्च न्यायालय द्वारा होना आवश्यक है। दूसरे, यदि फौजदारी के मामलों में सेंशन कोर्ट ने मृत्युदंड दिया हो तो उच्च न्यायालय में अपील की जा सकती है।

(3) प्रशासनिक क्षेत्राधिकार : उच्च न्यायालय अपने अधीनस्थ

न्यायालयों की कार्य प्रणाली की समीक्षा, देख-रेख करने के अतिरिक्त उनके लिए नियम बना सकता है। यह उन न्यायालयों को अभिलेखों की जाँच भी कर सकता है। यह न्यायालय नागरिकों की सुरक्षा हेतु बंदी प्रत्यक्षीकरण लेख, परमादेश (प्रतिषेध, अधिकार पृच्छा) आदि लेख जारी कर सकता है।

4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) **दीवानी न्यायालय :** जिला जज की अदालत जिले की सबसे बड़ी दीवानी अदालत होती है। मुख्य न्यायाधीश को जिला न्यायाधीश कहा जाता है। सत्र न्यायाधीश की अदालत भी उसके अधीन होती है। जिला जज 1 लाख रुपये की राशि के मुकदमों जो उसकी अधीनस्थ अदालतों के निर्णय के विरुद्ध बने हो, की अपील सुन सकता है। उसकी नियुक्ति उच्च न्यायालय द्वारा की जाती है।

(ii) **परिवार न्यायालय :** विवाह, तलाक, उत्तराधिकार, जीविका/भरण- पोषण, संपत्ति आदि से संबंधित मुकदमों को तय करने के लिए उत्तर प्रदेश में 2 अक्टूबर 1986 ई. को परिवार न्यायालय की स्थापना की गई थी।

5 संघीय कार्यपालिका

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (b) राष्ट्रपति (ii) (b) राष्ट्रपति

(iii) (b) 1.25 लाख रुपये (iv) (a) मंत्रिपरिषद्

(v) (b) राज्य विधानसभाओं के सदस्य

2. सुमेल कीजिए :

'अ'	**'ब'**
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	भारत के प्रथम राष्ट्रपति
डॉ. एस. राधाकृष्णन	भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति
जवाहर लाल नेहरू	भारत के प्रथम प्रधानमंत्री
श्रीमती इंदिरा गांधी	भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री
चौधरी चरण सिंह	प्रधानमंत्री जिसने कभी लोकसभा के अधिवेशन का नेतृत्व नहीं किया।

3. सत्य या असत्य :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) असत्य (v) असत्य

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) 5 (ii) गलत कार्य (iii) राज्यसभा

(iv) मत्रिमंडल (v) संघीय सरकार

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) राष्ट्रपति।

(ii) लोकसभा और राज्यसभा के निर्वाचित सदस्य तथा राज्य की विधानसभाओं के सदस्य मिलकर राष्ट्रपति का अप्रत्यक्ष रीति से चुनाव करते हैं तथा उपराष्ट्रपति का निर्वाचन लोकसभा और राज्यसभा के सदस्य अप्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली के माध्यम से करते हैं।

(iii) 5 वर्ष।

(iv) **प्रथम राष्ट्रपति**–डॉ. राजेंद्र प्रसाद, **प्रथम प्रधानमंत्री पं.** जवाहरलाल नेहरू।

(v) राष्ट्रपति

(vi) 1.5 लाख।

(vii) अध्यादेश, राष्ट्रपति द्वारा जारी आदेश है। जब संसद का अधिवेशन स्थगित किया गया हो। वह संसद का संयुक्त अधिवेशन बुलाता है।

(viii) **गठबंधन सरकार :** राष्ट्रपति लोकसभा चुनाव में बहुमत प्राप्त करने वाले दल के नेता को सरकार बनाने का न्यौता देता है। स्पष्ट बहुमत न मिलने की दशा में कई दल मिलकर मिली-जुली सरकार बनाते हैं। इसे गठबंधन वाली सरकार कहते हैं।

(ix) मंत्रिपरिषद्।

(x) मंत्रिपरिषद् में तीन प्रकार के मंत्री होते हैं-(1) मंत्रिमण्डल (2) राज्य मंत्री (3) उपराज्यमंत्री।

(xi) डॉ. एस. राधाकृष्ण।

2. छह पंक्तियों में उत्तर :

(i) **भारत के राष्ट्रपति की योग्यताएँ :** भारत का राष्ट्रपति निर्वाचित होने के लिए निम्नलिखित योग्यताएँ होनी चाहिए –

(1) वह भारत का नागरिक हो तथा उसकी आयु 35 वर्ष से कम न हो।

(2) वह लोकसभा का सदस्य होने की योग्यता रखता हो।

(3) वह सरकारी नौकरी या किसी लाभ के पद पर आसीन न हो।

निर्वाचन : संसद के दोनों सदनों अर्थात् लोकसभा और राज्यसभा के निर्वाचित सदस्यों तथा राज्यों की विधानसभाओं के सदस्य मिलकर राष्ट्रपति का अप्रत्यक्ष रीति से चुनाव करते हैं। इसके लिए उन्हें गुप्त मतदान प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है।

(ii) **प्रधानमंत्री की स्थिति :** सारी कार्यपालिका शक्तियाँ राष्ट्रपति में निहित होती हैं परंतु व्यवहार में उन शक्तियों का वास्तविक रूप से उपयोग करने वाला व्यक्ति प्रधानमंत्री है। वह केबिनेट का वास्तविक अध्यक्ष है तथा मंत्रियों की नियुक्ति राष्ट्रपति उसके परामर्श पर ही करता है। वह मंत्रियों को उनके विभागों को आवंटित करता है। उनके विभागों में फेर-बदल कर सकता है तथा मंत्रियों के इस्तीफे की माँग कर सकता है तथा अपना त्यागपत्र देकर संपूर्ण मंत्रिमंडल को भंग कर सकता है। वह सत्ताधारी पार्टी का नेता है तथा टीम का कैप्टन है। वह राष्ट्रपति और मंत्रिपरिषद्

के बीच की महत्वपूर्ण कड़ी है।

(iii) **उपराष्ट्रपति के दो कार्य :**

(1) भारत के राष्ट्रपति की अनुपस्थिति में उपराष्ट्रपति उसके कार्यों को करता है।

(2) यदि राष्ट्रपति का स्वर्गवास हो जाता है या वह अपने पद से त्यागपत्र दे देता है तो उपराष्ट्रपति नए राष्ट्रपति के पद ग्रहण करने तक उसके कार्यों को करता है।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **राष्ट्रपति के संकटकालीन अधिकार (शक्तियाँ) :** संविधान की धारा 352 के अनुसार राष्ट्रपति को संकटकालीन घोषणा करने का अधिकार भी प्रदान किया गया है। वह निम्नलिखित परिस्थितियों में संकटकाल की घोषणा कर सकता है–

(1) यदि मंत्रिपरिषद् राष्ट्रपति को आंतरिक विद्रोह, अशांति या सैनिक विद्रोह, बाह्य आक्रमण आदि की सूचना दे तो राष्ट्रपति संकटकाल की घोषणा कर सकता है। उदाहरण के लिए, 1962 ई. में अक्टूबर माह में चीन के आक्रमण के समय ऐसा किया गया था।

(2) यदि राज्य में संवैधानिक ढाँचा विफल हो गया हो तो ऐसी घोषण होगी। जम्मू एवं कश्मीर तथा पंजाब में इसी कारण से राष्ट्रपति शासन लागू किया गया।

(3) यदि आर्थिक संकट हो गया हो तो भी ऐसी घोषण होगी।

(ii) **प्रधानमंत्री के पद के लिए योग्यताएँ, निर्वाचन एवं कार्यकाल:**

योग्यताएँ : मंत्री संसद का सदस्य होना चाहिए। यदि किसी गैर सदस्य को प्रधानमंत्री कोई मंत्रालय आवंटित करता है तो उसे 6 माह के भीतर संसद का सदस्य निर्वाचित होना पड़ेगा।

निर्वाचन : राष्ट्रपति लोकसभा चुनाव में बहुमत प्राप्त करने वाले दन के नेता को सरकार बनाने का न्यौता देता है। स्पष्ट बहुमत न मिलने की दशा में कई दल मिलकर मिली-जुली सरकार बनाते हैं।

कार्यकाल : प्रधानमंत्री अपने पद पर 5 वर्ष तक कार्य करता है परंतु वह 5 वर्ष से पूर्व भी स्वेच्छा से त्यागपत्र दे सकता है। जब लोकसभा भंग कर दी जाती है तो राष्ट्रपति उससे निर्वाचित सरकार के बनने तक अपने पद पर बने रहने को कहता है।

(iii) **मंत्रिपरिषद् के कार्य :**

(1) मंत्रिपरिषद् देश के शासन को चलाने के लिए नीति बनाती है।

(2) मंत्रिपरिषद् संसद में सारे विधेयकों और प्रस्तावों को पेश करती है।

(3) यह वित्तमंत्री के माध्यम से देश के धार्मिक बजट को संसद में पेश करती है।

(4) यह राष्ट्रपति को देश में आपातकालीन घोषणा करने की सलाह देती है।

(5) यह देश की विदेश नीति को निर्धारित करती है।

(6) यह सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी है।

6 पुलिस और न्यायपालिका की भूमिका

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (d) (a) तथा (b) (ii) (a) 24

(iii) (b) तथा (c) (iv) (a) सरकारी वकील

(v) (c) पुलिस

2. सत्य या असत्य :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) सत्य (v) सत्य

3. निम्नलिखित को सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

(i) एफ.आई.आर. के रजिस्टर में दर्ज की जाती है।

(ii) एफ.आई.आर. में अपराध से संबंधित घटनाओं का वर्णन करना पड़ता है।

(iii) यदि आरोपी व्यक्तियों को पहचान लिया जाता है तो उनकी पहचान और गवाहों का जिक्र भी एफ.आई.आर. में किया जाता है।

(iv) एफ.आई.आर. पर शिकायतकर्ता को एफ.आई.आर. रजिस्टर पर हस्ताक्षर करने पड़ते हैं।

(v) एफ.आई.आर. की एक कॉपी (नकल) शिकायतकर्ता को दी जाती है।

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) पुलिस एवं कानून।

(ii) प्रभावित व्यक्ति की ओर से पुलिस थाने में दर्ज कराई गई प्राथमिकी को प्रथम सूचना रिर्पोट या एफ.आई.आर. कहते हैं।

(iii) अभियोजक एक सरकारी वकील होता है, जिसकी नियुक्ति राज्य सरकार लोक सेवा आयोग के माध्यम से करती है।

2. छह पंक्तियों में उत्तर :

(i) **पुलिस की भूमिका :** सरकार ने पुलिस को अपराधों पर नियंत्रण करने के अधिकार प्रदान किए हैं। इसलिए पुलिस समाज में अपराध करने वाले व्यक्ति/व्यक्तियों को गिरफ्तार करती है। पुलिस की मुख्य भूमिका अपराधियों के विरुद्ध उचित कार्यवाही करके अपराधों को रोकना है।

पुलिस अपराध के आधार पर अदालत में आरोप पत्र दाखिल करती है। पुलिस को यह अधिकार नहीं है कि वह इस बात का निर्णय करे कि गिरफ्तार व्यक्ति अपराधी है या नहीं। यह कार्य न्यायाधीश का है।

(ii) **अदालत में सरकारी वकील की भूमिका :** सरकारी वकील राज्य सरकार की ओर से अभियोजन का कार्य करता है। वह जज के सामने मुकदमे का निर्णय करने के लिए साक्ष्य, गवाह, प्रमाग और भौतिक तथ्यों को पेश करता है। उससे यह आशा की जाती है कि वह इन सभी को बिना किसी पक्षपात के अदालत में पेश करेगा। अभियोजक एक सरकारी वकील होता है, जिसकी नियुक्ति राज्य सरकार लोक सेवा आयोग के माध्यम से करती है। उसे कम से कम सात वर्ष तक अदालत में प्रेक्टिस करने का अनुभव होना चाहिए। वह न्यायाधीश को सच्चाई का पता लगाने में सहयोग प्रदान करता है।

(iii) **एफ.आई.आर. दर्ज कराने की प्रक्रिया :** थानाध्यक्ष का यह कर्तव्य है कि वह थाने के एफ.आई.आर. रजिस्टर में प्रभावी व्यक्ति की ओर की गई शिकायत को दर्ज करे, जिसके आधार पर पुलिस अपराध की जाँच-पड़ताल का कार्य प्रारंभ कर सके। सामान्यत: एफ.आई.आर. में अपराध का स्थान, समय, नुकसान का ब्यौरा आदि लिखा जाता है। यदि अपराधियों को पहचान लिया गया है तो उनकी पहचान और उन्हें पहचानने वाले व्यक्तियों का गवाहों के रूप में उल्लेख भी एफ.आई.आर. में किया जाता है। एफ.आई.आर. के रजिस्टर में शिकायतकर्ता के हस्ताक्षर, यदि गवाह है तो उनके हस्ताक्षर कराए जाते हैं। एफ.आई.आर. की एक प्रतिलिपि पुलिस द्वारा शिकायतकर्ता को भी सौंपने का नियम है।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) संविधान की धारा 22 तथा अपराधिक विधि पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए गए व्यक्ति को उसके निम्नलिखित मूलाधिकारों की गारंटी देते हैं–

(1) गिरफ्तार किए गए व्यक्ति को पुलिस उसकी गिरफ्तारी का कारण बताएगी।

(2) गिरफ्तार किए गए व्यक्ति को पुलिस 24 घंटे के भीतर मजिस्ट्रेट के सामने पेश करेगी।

(3) पुलिस की हिरासत (संरक्षण) में या गिरफ्तारी के दौरान व्यक्ति के साथ मारपीट या हिंसात्मक व्यवहार पुलिस द्वारा नहीं किया जाएगा।

(4) पुलिस हिरासत में व्यक्ति द्वारा दिए गए बयान को अपराधी के विरुद् साक्ष्य नहीं माना जाएगा।

(5) 15 वर्ष से कम आयु के लड़के या लड़की तथा महिला को केवल पूछताछ के लिए थाने में नहीं बुलाया जा सकता।

पुलिस अपराध के आधार पर अदालत में आरोप पत्र दाखिल करती है। पुलिस को यह अधिकार नहीं है कि वह इस बात का निर्णय करे कि गिरफ्तार व्यक्ति अपराधी है या नहीं। यह कार्य न्यायाधीश का है।

(ii) **मुकदमों का निर्णय करने में पुलिस की भूमिका :** सरकार ने पुलिस को अपराधों पर नियंत्रण करने के लिए अधिकार प्रदान किए हैं। इसलिए पुलिस समाज में अपराध करने वाले व्यक्ति/व्यक्तियों को गिरफ्तार करती है। पुलिस की मुख्य भूमिका अपराधियों के विरुद्ध उचित कार्यवाही करके अपराधों को रोकना है। संविधान की धारा 22 तथा अपराधिक विधि पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए गए व्यक्ति को उसके निम्नलिखित मूलाधिकारों की गारंटी देते हैं–

(1) गिरफ्तार किए गए व्यक्ति को पुलिस उसकी गिरफ्तारी का कारण बताएगी।

(2) गिरफ्तार किए गए व्यक्ति को पुलिस 24 घंटे के भीतर मजिस्ट्रेट के सामने पेश करेगी।

(3) पुलिस की हिरासत में या गिरफ्तारी के दौरान व्यक्ति के साथ मारपीट या हिंसात्मक व्यवहार पुलिस द्वारा नहीं किया जाएगा।

(4) पुलिस हिरासत में व्यक्ति द्वारा दिए गए बयान को अपराधी

के विरुद्ध साक्ष्य नहीं माना जाएगा।

(5) 15 वर्ष से कम आयु के लड़के या लड़की तथा महिला को केवल पूछताछ के लिए थाने में नहीं बुलाया जा सकता।

पुलिस अपराध के आधार पर अदालत में आरोप पत्र दाखिल करती है। पुलिस को यह अधिकार नहीं है कि वह इस बात का निर्णय करे कि गिरफ्तार व्यक्ति अपराधी है या नहीं। यह कार्य न्यायाधीश का है।

4. शब्दों की व्याख्या :

(i) **एफ.आई.आर. :** एफ.आई.आर. घटना का लिखित ब्यौरा है, जो पीड़ित पक्ष की ओर से थाने में लिखाई जाती है।

(ii) **चार्जशीट :** पुलिस द्वारा तैयार किया गया अपराधों का ब्यौरा चार्जशीट कहलाता है।

(iii) **अपराध :** कानून की दृष्टि में किया गया कोई भ गलत कार्य अपराध कहलाता है।

(iv) **गवाह :** यदि अपराधियों को पहचान लिया गया है तो उनकी पहचान और उन्हें पहचानने वाले व्यक्ति को गवाह कहते हैं।

(v) **साक्ष्य :** किसी आरोपी द्वारा स्वयं को बचाने के लिए दिए गए सबूत साक्ष्य कहलाते हैं।

(vi) **समन :** किसी व्यक्ति को न्यायालय में उपस्थित होने का आदेश समन कहलाता है।

7 पिछड़ापन और सामाजिक न्याय

निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) खटीक (ii) (b) अनुसूचित जनजाति

(iii) (c) अन्य पिछड़ा वर्ग (iv) (c) 1989 ई.

(v) (a) डॉ. बिन्देशवरी देसाई (vi) (c) 1993 ई

2. सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
अनुसूचित जाति	खटीक
अनुसूचित जनजाति	मीणा
भील	राजस्थान
अन्य पिछड़ा वर्ग	बढ़ई
पाखी	आंध्र प्रदेश
सिक्केलियार	तमिलनाडु

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) सत्य (v) सत्य

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति :

(i) समूह निर्णयों (ii) शौचालय (iii) 52%

(iv) शुष्क शौचालय (v) लैट्रीन

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) हाशिए पर पहुँचना या पिछड़ापन व्यक्तियों की वह अवस्था है, जिसमें वह समाज में अपने निम्न स्तर, निर्धनता, बेकार, शिक्षा, विभिन्न प्रकार की महत्त्वहीन रोजगार, भाषा, रीति-रिवाज और धर्मों के कारण समाज के हाशिए पर रहते हैं।

(ii) अनुसूचित जातियाँ, अनुसूचित जनजातियाँ, अन्य पिछड़े वर्ग के समूहों के लोग।

(iii) **अनुसूचित जातियाँ :** जाटव, बाल्मीकि, खटीक, धोबी, जुलाहे, कोरी आदि।

अनुसूचित जन-जातियाँ : गोंड, भील, मीणा, भोक्सा, जौनसार,

संथाल, मुण्डा आदि।

(iv) अनुसूचित जाति को 15 प्रतिशत, अनुसूचित जनजाति को 7.5 प्रतिशत और अन्य पिछड़ा वर्ग को 27 प्रतिशत आरक्षण।

(v) 1993 ई. में।

2. छह पंक्तियों में उत्तर :

(i) **अनुसूचित जाति तथा जनजाति :** एक्ट 1989 ई. देश की शक्तिशाली जातियों के लोगों द्वारा किए जाने वाले हिंसात्मक कार्यों और प्रभुत्व से इन जातियों की सुरक्षा के लिए पास किया गया था। यह एक्ट दलितों तथा जनजाति के लोगों की अत्याचारी और दमनकारी नीतियों से सुरक्षा करता है। इस एक्ट में अपराध के अनेक स्तरों को बताया गया है; जैसे–अपमान के रूप, तरीके, शारीरिक भय या नैतिक आरोप तथा उन लोगों को दंडित करने का प्रावधान है जो –

(1) अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों को किसी अपेय पदार्थ को पीने या आपराधिक पदार्थ को रखने के लिए बाध्य करते हैं।

(2) इन सदस्यों को गुलामी के कार्यों में धकेले।

(ii) सफाई कर्मचारी आंदोलन 1993 ई. में शुरू हुआ था। 1993 ई. में सरकार ने हस्त-सफाई व्यक्तियों के लिए रोजगार एवं शुष्क शौचालयों के निर्माण निषेध एक्ट पास किया जिसमें हाथ से मैल साफ करने वाले तथा सिर पर इसे ढोने वाले सफाई कर्मियों के कार्य पर तथा शुष्क शौचालयों के निर्माम पर रोक लगाई गई।

(iii) दलित सिक्कलियार तथा अन्य स्वर्ण जाति के लोगों को छू नहीं सकते थे और न ही उनके कुओं से पानी खींच सकते थे। इसके अतिरिक्त अछूत माने जाने वाले लोग स्वर्णों के घरों के पास अपने घर भी नहीं बना सकते थे और न ही वे मंदिर में पूजा के लिए प्रवेश कर सकते थे। इस तरह से वे अनेक सामाजिक विषमताओं और

भेदभावों का सामना करते थे। उन्हें दलितों या दबे-कुचलों के नाम से पुकारा जाता है। ये लोग श्रमिकों के रूप में कार्य करने के लिए मजबूर किए जाते थे तथा महत्त्वहीन समझे जाने वाले कार्यों में लगे थे। उनमें से बहुत-से लोग वर्तमान में भी इसी दिशा में जी रहे हैं।

(iv) **सुलभ शौचालय :** डॉ. बिन्देश्वरी ने सार्वजनिक शौचालय योजना शुरू की जिसे सुलभ शौचालय योजना कहते हैं। इसका प्रबंधन सुलभ अंतर्राष्ट्रीय संगठन ने किया। आधुनिक तकनीकी पर आधारित भारत के प्रत्येक कोने में अनेक शौचालयों का निर्माण किया गया। जनता इनका उपयोग नाममात्र का शुल्क चुकाकर कर सकती है। हाथ से मैला साफ करने के कार्य को हटाने में यह योजना महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। लैट्रीन एवं प्रसाधन की सुविधाओं के अतिरिक्त यह शौचालय स्नान करने के लिए भी उपयोग में लाए जाते हैं।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(ii) अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, अन्य पिछड़े वर्गों की उन्नति के लिए भारतीय संविधान में इन जातियों के लिए अधिकतर सरकारी नौकरियों, संसद तथा विधान सभाओं में आरक्षण की व्यवस्था की गई है। इसके अतिरिक्त इन लोगों को आयु, आवेदन शुल्क तथा साक्षात्कार प्रतियोगी परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए निःशुल्क रेलयात्रा टिकट का लाभ दिया जाता है। इन जातियों में प्रत्याशियों को प्रशिक्षण और पढ़ाई पूरी करने के लिए कम दर पर बैंक ऋण उपलब्ध कराया जाता है। उन्हें आई.ए.एस., पी.सी.एस., मेडिकल, इंजीनियरिंग आदि के लिए निःशुल्क कोचिंग, हॉस्टल तथा खाने आदि की व्यवस्था के साथ स्कॉलरशिप भी प्रदान किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें शैक्षणिक और प्रशिक्षण संस्थानों में प्रवेश में आरक्षण की भी व्यवस्था है। केन्द्र सरकार उन्हें सरकारी नौकरियों में पदों पर आरक्षण प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त उन्हें

सरकारी ठेकों, दुकानों, मण्डी समिति की आढ़तों, शराब की दुकानों, पेट्रोल पम्पों के आवंटन में भी आरक्षण का लाभ मिला है।

4. संक्षेप में वर्णन :

(i) **अट्ठावनवाँ संशोधन (1978) :** इस एक्ट के अर्थात् 58वें संशोधन–1978 ई. के अनुसार अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम और नागालैंड की विधानसभाओं में जनजातियों के लिए कुछ सीटों पर आरक्षण की व्यवस्था है।

(ii) **छियतरवाँ संशोधन (1974) :** 1994 तमिलनाडु में सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े हुए वर्गों को शिक्षा संस्थानों में प्रवेश के लिए तथा सरकारी नौकरियों में 69% आरक्षण का कोटा प्रदान किया गया है।

(iii) **नवासीवाँ संशोधन (2003) :** इस संशोधन के अनुसार अनुसूचित जनजातियों के लिए एक राष्ट्रीय आयोग की स्थापना की गई। इससे पूर्व अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के लिए एक संयुक्त राष्ट्रीय आयोग की व्यवस्था थी।

8 सरकार की आर्थिक नीतियाँ

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) प्रधानमंत्री (ii) (c) 1956 ई. में

(iii) (b) 1977 ई. में (iv) (a) 1980 ई. में

(v) (b) ट्राइसेम (vi) (b) मिश्रित परियोजना

2. सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
प्रथम पंचवर्षीय योजना	1851 ई.
द्वितीय पंचवर्षीय योजना	1956 ई.
आई.आर.डी.पी.	1980 ई.
एन.आर.ई.पी.	1980 ई.

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति :

(i) संसाधन (ii) बल (iii) सार्वजनिक

(iv) सामुदायिक विकास (v) उद्देश्य

4. कार्यक्रमों का नाम लिखिए :

(i) स्वरोजगार हेतु ग्रामीण युवा प्रशिक्षण।

(ii) नेहरू रोजगार योजना।

(iii) रोजगार आश्वासन योजना।

(iv) जवाहर रोजगार योजना।

(v) राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम।

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) 1950 ई. में।

(ii) प्रधानमंत्री।

(iii) 1951 ई. में।

(iv) सामुदायिक विकास कार्यक्रम को ग्रामीण क्षेत्रों में आवास, रोजगार, परिवार-नियोजन, सड़कों, स्वास्थ्य, शिक्षा और कृषि में सुधार करने के लिए लागू किया गया था।

(v) **सार्वजनिक क्षेत्र के भारी उद्योग :** भेल (भारत हैवी इलैक्ट्रिकल लिमिटेड, सेल (स्टील ऑथारिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड), टिस्को (टाटा आयरन एण्ड स्टइल कम्पनी), हॉल (हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड), हिन्दुस्तान शिपयार्ड्स

लिमिटेड, एन.टी.पी.सी. (नेशनल थर्मल पावर कार्पोरेशन), इफको (इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर्स कोऑपरेटिव) आदि भारी उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग हैं।

(vi) **निजी क्षेत्र के भारी उद्योग :** जिंदल स्टील लिमिटेड, हेवेल्स इंडिया लिमिटेड, इंडियन एक्सप्लोसिव्ज लिमिटेड, श्रीराम केमिकल्स, न्यू सेन्ट्रल जूट कम्पनी, मवाना शुगर लिमिटेड आदि सभी निजी क्षेत्र के उद्योग हैं।

(vii) गरीबी एक आर्थिक दशा है, जिसके अंतर्गत व्यक्ति स्वयं को अपने परिवार की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ पाता है।

(viii) **चकबंदी :** बिखरें हुए खेतों का जमीन की किस्म और मात्रा के अनुसार एक जगह उपलब्ध कराने की व्यवस्था चकबंदी कहलाती है।

2. छह पंक्तियों में उत्तर :

(i) **भारत में आर्थिक नियोजन :** हमारा देश प्राकृतिक और मानव संसाधनों से भरपूर है। इनका सदुपयोग करके यह संपन्न और समृद्ध हो सकता है। विडंबना इस बात की है कि दुर्भाग्य से अभी तक हम इस अवस्था में नहीं पहुँच सके क्योंकि हम आर्थिक विकास के लिए अभी तक अपने प्राकृतिक व मानव संसाधनों को ठीक प्रकार से उपयोग में नहीं ला सकते हैं। इसलिए हमारे लिए अति आवश्यक है कि इन संसाधनों का सुनियोजित ढंग से बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग किया जाए। भारत की जनसंख्या का एक बड़ा भाग बहुमूल्य समय को नष्ट करता है।

(ii) कृषि का विकास औद्योगिक विकास पर निर्भर करता है। इसलिए रसायन, उर्वरक, कृषि यंत्र आदि जो वसुएँ कृषि उत्पादन बढ़ाती हैं, को बनाने के लिए देश में उन उद्योगों की स्थापना की गई। कारखानों से बने उर्वरकों, ऊर्जा (विद्युत), कीटनाशक और कृषि

के यंत्र आदि कृषि उत्पादन बढ़ाने में बहुत आवश्यक हैं। इसके पश्चात् देश के विभिन्न हिस्सों में भारी उद्योग स्थापित किए गए। भेल (भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स लिमिटेड), सेल (स्टील ऑथारिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड), टिस्को (टाटा आयन एण्ड स्टील कम्पनी), हॉल (हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड), हिन्दुस्तान शिपयार्ड्स लिमिटेड, एन.टी.पी.सी. (नेशनल थर्मल पावर कार्पोरेशन), इफको (इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर्स कोऑपरेटिव) आदि भारी उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग हैं।

(iii) **आई.आर.डी.पी. (समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम) :** इस कार्यक्रम का मूल उद्देश्य ग्रामीण निर्धन परिवारों की पहचान करना और उन्हें रोजगार उपलब्ध कराना है। यह केंद्र द्वारा चलाया गया कार्यक्रम है। जिसमें धन की व्यवस्था राज्य सरकार और केंद्र सरकार 50 : 50 के अनुपात में करते हैं। इस योजना का लाभ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को हुआ था। यह योजना 1980 ई. में चलायी गई थी।

जे. आर. वाई (जवाहर रोजगार योजना : इस योजना को गरीब परिवार के कम-से-कम एक सदस्य को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए अप्रैल 1989 ई. में भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया। इस योजना का महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि इसे जिला, ब्लॉक तथा ग्राम स्तर पर पंचायतों के माध्यम से क्रमश: 70:15:15 के अनुपात में क्रियान्वित किया गया।

(iv) ग्रामीण क्षेत्रों में सरकार ने बेरोजगारी को समाप्त करने के लिए निम्नलिखित दो योजनाए चलाई हैं–

(1) स्वरोजगार हेतु ग्रामीण युवा प्रशिक्षण : भारत सरकार ने इस कार्यक्रम का शुभारंभ अक्टूबर 1979 ई. में ग्रामीण युवाओं को रोजगार हेतु प्रशिक्षित करने के लिए चलाया। इनमें ग्राम के कुशल और अर्द्धकुशल युवाओं को कृषि, कुटीर उद्योग, सेवा कार्यो

आदि के क्षेत्रों में स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराए गए। इसका लाभ अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के युवाओं और महिलाओं को पहुँचाया गया।

(2) नेहरू रोजगार योजना : यह योजना अक्टूबर 1989 ई. में ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी की रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले मौसमी बेरोजगारों, पूर्णकालीन बेरोजगारों के लिए रोजगार उपलब्ध कराने के लिए आरंभ की गई।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) भारत सरकार ने प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-56 ई.) लागू की जिसमें कृषि, सिंचाई, ऊर्जा और यातायात के विकास को प्राथमिकता दी गई। तृतीय पंचवर्षीय योजना (1961-66 ई.) में अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त की गई। प्रथम पंचवर्षीय योजना के लागू करने के तुरंत बाद कृषि, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़कें, परिवार नियोजन, रोजगार तथा ग्रामीण क्षेत्रों में आवास उपलब्ध कराने के लिए सामुदायिक विकास कार्यक्रम चलाया गया। कृषि और ग्रामीण विकास के लिए सहकारी समितियों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों ने किसानों को कृषि और उद्योगों को लगाने के लिए ऋण वितरित किए।

इसके अतिरिक्त सरकार ने चकबंदी कार्यक्रम को प्रयोजित किया जिसमें दूर-दूर बिखरे खेतों को एक जगह लाया गया ताकि किसान बिना अधिक समय तथा श्रम नष्ट किए अपनी खेती कर सके। इसके परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई। जमींदारी प्रथा को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया। उन्नत बीज उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय बीज निगम की स्थापना की गई। आधुनिक कृषि मशीनरी, उन्नत बीजों और उर्वरकों के प्रयोग से कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई।

(ii) गरीबी उन्मूलन के लिए भारत सरकार द्वारा चलाए गए कोई तीन

कार्यक्रम निम्नलिखित हैं :

(1) समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम : इस कार्यक्रम का मूल उद्देश्य ग्रामीण निर्धन परिवारों की पहचान करना और उन्हें रोजगार उपलब्ध कराना है। यह केन्द्र द्वारा चलाया गया कार्यक्रम है। धन की व्यवस्था राज्य सरकार और केंद्र 50 : 50 के अनुपात में करते हैं। इस योजना का लाभ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को हुआ था। यह योजना 1980 ई. में चलायी गयी थी।

(2) अतिरिक्त भूमि का आवंटन : ग्राम पंचायतों की अतिरिक्त भूमि का आवंटन भूमिहीन परिवारों को प्राथमिकता के आधार पर किया गया जिस पर उन्होंने अपने लिए अनाज तथा पशुओं के लिए चारा उगाया।

(3) बंधुआ मजदूर व्यवस्था का अंत : इस व्यवस्था के अंतर्गत लगभग 2 लाख बंधुआ मजदूरों को उनके शोषकों से मुक्त कराया गया तथा मार्च 1998 ई. के अंत तक पुर्नस्थापित किया गया।

आदर्श प्रश्न-पत्र-I

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) संभाव्य संसाधन (ii) (c) पहाड़ों में

(iii) (a) लॉर्ड डलहौजी (iv) (c) 1855 ई.

(v) (a) जमशेदजी नोशेरवान टाटा

(vi) (a) लोकसभा के प्रति

2. निम्नलिखित को सही मिलान कीजिए :

'अ'	'ब'
जैविक स्रोत	पेड़-पौधे
कान्हा राष्ट्रीय पार्क	मध्य प्रदेश
हरिजन	गांधीजी
प्लासी का युद्ध	1757 ई.
लॉर्ड डलहौजी	राज्य हड़प नीति का सिद्धांत

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) भूमि (ii) अपरदन (iii) संथाल

(iv) 14 वर्ष (v) 250

4. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य (v) असत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) प्रकृति प्रदत्त वे पदार्थ, जिनसे मानव की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, संसाधन कहलाते हैं।

(ii) आने वाली पीढ़ियों की परवाह करने के साथ वर्तमान जरूरतों की पूर्ति करने के लिए संसाधनों का उपयोग उत्साहवर्धक विकास

कहलाता है।

(iii) एक देश का दूसरे देश/देशों को राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के माध्यम से नियंत्रण या कब्जे में लेना, उपनिवेशीकरण कहलाता है।

(iv) टीपू सुल्तान हैदर अली का पुत्र था।

(v) 26 जनवरी, 1950 ई. को।

(vi) संपत्ति का अधिकार।

2. 6 पंक्तियों में उत्तर :

(i)

क्र.सं.	संभाव्य संसाधन	वास्तविक संसाधन
1.	संसाधन, जिनके किसी प्रदेश में पाए जाने की पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान होती हैं या जिन संसाधनों की मात्राओं के विषय में मानव अनभिज्ञ है और उन्हें अब तक उपयोग में नहीं ला सकता है, साथ ही वे भविष्य के उपयोग के लिए संरक्षित	मानव जिन संसाधनों की मात्राओं से भिज्ञ है तथा वर्तमान में उनका बड़े पैमाने पर उपयोग कर रहा है, वास्तविक संसाधन कहलाते हैं।

(ii) **तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1790 - 1792 ई.) :** टीपू सुल्तान ने ट्रावनकोर पर आक्रमण कर दिया क्योंकि डचों ने मैसूर राज्य के संरक्षित कोच्चि (कोचीन) को ट्रावनकोर के राजा को बेच दिया था। अंग्रेजों ने ट्रावनकोर के राजा की सहायता इसलिए की, क्योंकि टीपू ने 1790 ई. में उनके विरुद्ध युद्ध का बिगुल बजा दिया था। अंग्रेजों की सेना वेल्लोर तथा अम्बुर होती हई मंगलौर तक पहुँच गयी थी, जिसे उन्होंने 1791 ई. में अपने कब्जे में ले लिया था।

अंग्रेज श्रीरंगपट्टम तक पहुँच गए तथा उन्होंने कोयम्बटूर को भी जीत लिया था, परंतु टीपू ने इन स्थानों को बहुत जल्दी ही अंग्रजों के हाथों से ले लिया। उधर कार्नवालिस के नेतृत्व में अंग्रेजी सेनाओं ने श्रीरंगपट्टम को अपने अधिकार में लेने के लिए टीपू पर फिर आक्रमण कर दिया, जिससे टीपू घबरा गया तथा उसने इस आक्रमण को दबाने का भरपूर प्रयास किया। परिस्थितिवश टीपू को 1792 ई. में अंग्रेजों से श्रीरंगपट्टम की संधि करनी पड़ी।

(iii) 1772 ई. में ब्रिटिश संसद ने कम्पनी के विधान में कुछ परिवर्तन करने के लिए नया कानून बनाया, जिसे रेग्यूलेटिंग एक्ट कहते हैं। ब्रिटिश संसद इस एक्ट के माध्यम से ईस्ट इंडिया कम्पनी की शक्तियों पर नियंत्रण रखना चाहती थी।

रेग्युलेटिंग एक्ट की मुख्य धाराएँ :

(1) कम्पनी के संचालकों को यह निर्देश जारी किए गए कि वे कम्पनी से संबंधित राजनीतिक, व्यापारिक, रक्षा, सिविल, राजस्व आदि मामलों को ब्रिटिश संसद के सामने रखें।

(2) कम्पनी के संचालकों का कार्यकाल चार वर्ष हो गया। प्रत्येक वर्ष एक-चौथाई संचालक अवकाश ग्रहण करेंगे।

(3) बंगाल का गनर्वर भारत में सभी अंग्रेजी अधिकार वाले क्षेत्रों का गवर्नर जनरल होगा और वह वेतन के रूप में 25,000 पाउंड प्राप्त करेगा।

(4) कम्पनी का कोई भी कर्मचारी सरकार से लाइसेंस प्राप्त किए बगैर व्यापारिक गतिविधियों में भाग नहीं लेगा।

(iv) **(क) समानता का अधिकार :** कानून की दृष्टि में सब समान हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 15 के अनुसार किसी भी व्यक्ति से धर्म, वंश, लिंग, जाति, जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता। सरकारी नौकरियों में सबको समान अवसर उपलब्ध कराए गए परंतु अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और

समाज के पिछड़े वर्गों के लोगों को नौकरियों में आरक्षण प्रदान किया जाएगा। इसके द्वारा छुआछूत और उपाधियों का अंत कराया गया है। परंतु शैक्षिक ओर सैनिक उपाधियों को छोड़ दिया गया है। इसी के साथ दूसरी और राज्य की महिलाओं, बच्चों, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़ी जातियों की भलाई के लिए कुछ विशेष नियम और कानून बनाने के लिए छूट प्रदान की गई है।

(ख) धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार : चूँकि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है, इसलिए यहाँ के प्रत्येक नागरिक को अपने धर्म के अनुसार पूजा-पाठ और प्रचार करने तथा धार्मिक व्याख्यान देने का अधिकार है। धर्म विशेष के उपासक अपने पूजा स्थानों की स्थापना करने के लिए स्वतंत्र हैं।

(v) **लोकसभा के कार्य :**

(1) लोकसभा, राज्यसभा के साथ मिलकर राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के चुनाव में भाग लेती है।

(2) यह संघ सूची तथा समवर्ती सूची के कुछ निश्चित विषयों पर कानून बना सकती है।

(3) इसे कुछ वित्तीय अधिकार भी प्रदान किए गए हैं, जिनके अंतर्गत बजट पास करना तथा केंद्रीय सरकार की आय और व्यय पर नियंत्रण रखना आदि आते हैं।

(4) यह कार्यपालिका पर भी नियंत्रण रखती है।

(5) इसे संविधान में संशोधन करने का भी अधिकार है। संशोधन विधेयक संसद के किसी भी सदन में पेश किया जा सकता है परंतु इसके 2/3 सदस्यों के बहुमत से राज्यसभा को इसे पास करना पड़ता है।

(6) यदि राज्यसभा किसी धन विधेयक को 14 दिन तक बिना पास किए अपने पास रोके रखती है तो लोकसभा इसे पास मान

लेती है।

(7) धन विधेयक केवल लोकसभा में ही पेश किया जा सकता है। इसके पश्चात् यह राज्यसभा की संस्तुति के लिए राज्यसभा में भेजा जाता है।

(8) लोकसभा मंत्रिपरिषद से प्रश्न पूछकर उस पर नियंत्रण रखती है।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) भारत में विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ पायी जाती हैं। ये मिट्टियाँ निम्न प्रकार हैं–

(1) पर्वतीय मिट्टी : इस प्रकार की मिट्टी भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है। हिमालय में इस मिट्टी में अधिक विस्तार पाया जाता है। हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, उत्तराखंड, असम आदि पहाड़ी राज्यों में यह बड़ी मात्रा में पाई जाती है। इस मिट्टी का निर्माण नदियों द्वारा लाई गयी सिल्ट तथा जंगलों से प्राप्त कार्बनिक पदार्थों के जमाव से होता है।

(2) लेटराइट मिट्टी : इस मिट्टी का निर्माण चट्टानों के टूटने से होता है। इस मिट्टी में लोहे तथा पोटाश की मात्रा अत्यधिक होती है, जिससे यह कम उपजाऊ होती है। यह मिट्टी गहरे लाल तथा सफेद रंग की होती है। इसमें केवल घास और झाड़ियाँ उग पाती हैं। इसका विस्तार मध्य प्रदेश, पूर्वी और पश्चिमी घाटों, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, उड़ीसा के तटीय भागों, मेघालय, असम और राजमहल की पहाड़ियों में है।

(3) जलोढ़ मिट्टी : यह मिट्टी हिमालय की नदियों द्वारा मैदान में लायी जाती है। यह बहुत उपजाऊ मिट्टी है। कुल मिट्टी का 1/4 भाग जलोढ़ मिट्टी का बना है। गंगा का विशाल मैदान उत्तर भारत की नदियों द्वारा लाई गयी मिट्टी से बना हुआ है। इसका विस्तार पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिमी बंगाल,

उत्तराखंड तथा असम के कुछ हिस्सों में है। यह मिट्टी पोटाश, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम, चूना तथा ह्यूमस युक्त होती है। खेती के लिए यह सबसे अच्छी मिट्टी मानी जाती है।

(4) काली मिट्टी : काली मिट्टी का निर्माण ज्वालामुखी से निकले लावा से होता है। इस मिट्टी में चूना, पोटाश, मैग्नीशियम, एल्युमिना तथा लोहे की पर्याप्त मात्रा पाई जाती है, परंतु इसमें फॉस्फोरस, नाइट्रोजन तथा जैविक तत्त्वों की कमी होती है। इसका विस्तार गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु में है। अन्य मिट्टियों की तुलना में यह मिट्टी पानी को काफी समय तक रोके रखने की क्षमतायुक्त होती है।

(5) लाल मिट्टी : इस मिट्टी में लोहे तथा एल्युमिना की अधिक मात्रा पाई जाती है, इसीलिए इसका रंग लाल होता है। इस मिट्टी का निर्माण रूपांतरित और क्रिस्टलीय शैलों के टूटने से हुआ है। इसका विस्तार मध्य प्रदेश से तमिलनाडु तक है। कुछ भाग पश्चिमी महाराष्ट्र के कोंकण तट पर भी विस्तृत है। वर्षा के समय इस मिट्टी में पाया जाने वाला ह्यूमस नष्ट हो जाता है। पहाड़ियों के कुछ हिस्से भी इस मिट्टी के बने हैं।

(6) रेतीली या मरुस्थलीय मिट्टी : यह मिट्टी अत्यधिक कम वर्षा वाले क्षेत्रों में पाई जाती है। मिट्टी के कणों का आकार बड़ा होता है तथा रेत की मात्रा अधिक होती है। इसीलिए इसे रेतीली मिट्टी कहते हैं। इस मिट्टी का विस्तार राजस्थान के थार रेगिस्तान, गुजरात, लद्दाख, हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में है। मिट्टी में काँटेदार झाड़ियाँ, बबूल, नागफनी आदि वनस्पतियाँ पाई जाती हैं परंतु सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर इन मिट्टियों में अच्छी फसलें पैदा की जाती हैं।

(ii) **कम्पनी के शासन में न्याय व्यवस्था :** ईस्ट इंडिया कम्पनी के अस्तित्व से पूर्व न्याय व्यवस्था भारतीय रीति-रिवाजों पर आधारित

थी। हिंदुओं को धर्मशास्त्रों के आधार पर न्याय दिलाया जाता था तथा मुसलमानों के न्यायाधीश को काजी कहते थे। अंग्रेजों ने गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स के समय में एक नयी न्यायिक व्यवस्था लागू की। हेस्टिंग्स ने दो अपीलीय अदालतों की स्थापना की–सदर दीवानी अदालत तथा सदर निजामत अदालत; जिन्हें जिला न्यायालय के निर्णयों के विरुद्ध की गई अपीलों को सुनने का अधिकार था। हिंदुओं और मुसलमानों के मुकदमों को संगृही प्रथा विधि निर्मित कानूनों के आधार पर तय किया जाता था। लॉर्ड कार्नवालिस ने बड़े न्यायिक सुधारों को लागू किया। उसने प्रत्येक जिले में दो अदालतों का गठन किया–फौजदारी अदालत और दीवानी अदालत। अंग्रेज जिलाधीश दीवानी अदालतों के मुखिया होते थे। अपीलीय अदालतों (सदर तथा निजामत अदालतों) के अतिरिक्त 1774 ई. में कलकत्ता में एक सुप्रीम कोर्ट (उच्चतम न्यायालय) की स्थापना की गयी। मजिस्ट्रेटों को छोटे आपराधिक मुकदमों को सुनने का अधिकार दिया गया। 1781 ई. के एक्ट के अनुसार अंग्रेजों के मुकदमों का निपटारा अंग्रेजी कानूनों तथा भारतीयों के मुकदमों का निपटारा उनके अपने वैधानिक कानूनों के अनुसार होगा।

(iii) विधेयक को कानून बनाने के लिए निम्न प्रक्रिया प्रयोग की जाती है–

(1) प्रस्तुतीकरण तथा प्रथम वाचन : संसद में साधारण विधेयक किसी भी सदन में व्यक्तिगत सदस्य या मंत्री द्वारा प्रस्तुत किए जा सकते हैं। सभापति विधेयक को सदन में रखने की तारीख निश्चित करता है और उस निश्चित तिथि पर इसे प्रस्तुत किया जाता है। संसद सदस्य विधेयक के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा करते हैं।

(2) द्वितीय वाचन : प्रथम वाचन के बाद निश्चित तिथि पर

विधेयक को दूसरी बार पढ़ा जाता है। विधेयक के मूल सिद्धांतों और उद्देश्यों पर वाद-विवाद किया जाता है। सदस्य इस पर अपने विचार और मत प्रकट करता है। कुछ इसका विरोध करते हैं तो कुछ इसके पक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करते हैं तथा अपने तर्क देते हैं। इसके पश्चात् विधेयक एक समिति को भेज दिया जाता है। समिति विधेयक पर अपनी सिफारिशें देती है। अपनी सिफारिशों सहित समिति विधेयक को वापिस सदन में भेज देती है। समिति की रिर्पोट पर सदस्यों द्वारा गहन वाद-विवाद होता है। इसका प्रत्येक धारा पर गहनता से विचार होता है। इसके बाद विधेयक बहुमत से पारित कर दिया जाता है।

(3) तृतीय वाचन : सदन में विधेयक का यह अंतिम चरण होता है। इस अवस्था में विधेयक के सामान्य सिद्धांतों पर वाद-विवाद किया जाता है। तृतीय वाचन के दौरान इसमें केवल मौखिक संशोधन किए जाते हैं। मतदान के बाद इसे द्वितीय सदन में भेज दिया जाता है। इस सदन में प्रथम सदन की भाँति विधेयक पारित हो जाता है और इसे दोनों सदनों द्वारा पारित मान लिया जाता है। यदि दोनों सदनों के विचारों में विधेयक को लेकर कोई मतभेद है तो इसे संसद में संयुक्त अधिवेशन में प्रस्तुत किया जाता है और अंत में इसे पारित मान लिया जाता है।

आदर्श प्रश्न-पत्र-II

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) फ्लेक्स   (ii) (a) मेरठ से

(iii) (d) विधवा पुनर्विवाह   (iv) (b) 1,00,000 रुपये

2. निम्नलिखित को सही मिलान कीजिए :

'अ'	'ब'
तारापुर	महाराष्ट्र
जमशेदजी टाटा	टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी
रानी लक्ष्मीबाई	झाँसी
थियोसफिकल सोसाइटी	श्रीमती ऐनी बेसेंट
जवाहरलाल नेहरू	प्रथम प्रधानमंत्री (भारत)

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य   (ii) असत्य   (iii) असत्य

(iv) असत्य   (v) सत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) खनन वह प्रक्रिया है, जिसके द्‌वारा पृथ्वी की परतों में स्थित चट्‌टानों से खनिज को पृथक् किया जाता है।

(ii) कृषि 'Agriculture' शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के दो शब्दों 'ager' (एगर) या 'agri' तथा 'culture' को मिलाकर हुई है– 'ager' या 'agri' का अर्थ है–मिट्‌टी तथा 'culture' का अर्थ है–मिट्‌टी की जुताई।

(iii) मंगल पांडे बंगाल रेजिमेंट का ब्राह्मण सिपाही था।

(iv) दयानंद सरस्वती ने।

(v) राष्ट्रपति।

2. 6 पंक्तियों में उत्तर :

(i) भारत विश्व के कुल कोयला उत्पादन का 40% कोयला उत्पादित करता है। भारत में निम्नलिखित कोयला उत्पादन क्षेत्र हैं–

(अ) गोंडवाना क्षेत्र :

(1) **दामोदर घाटी क्षेत्र :** रानीगंज (पश्चिम बंगाल), झरिया, बोकारो, गिरिडीह, कर्णपुर –सभी बिहार तथा झारखंड में स्थित हैं।

(2) **महानदी घाटी क्षेत्र :** कोरबा, सोनहाट, रामगढ़ (मध्य प्रदेश), तालचर, संबलपुर (ओडिशा)।

(3) **सोन घाटी क्षेत्र :** सिंगरौली, डमरिया, सोहागपुर (मध्य प्रदेश), तत्रा पानी, रामकोला (छत्तीसगढ़), डाल्टनगंज, हुतार, औरंगा (बिहार)।

(ब) गोदावरी क्षेत्र : सिंगरैनी और तन्दुर (आंध्र प्रदेश), बल्लारपुर और चाँदा (महाराष्ट्र)।

(स) सतपुड़ा क्षेत्र : छिंदवाडा और नरसिंहपुर (मध्य प्रदेश)।

इसके अलावा पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग, राजस्थान में पलना, तमिलनाडु में दक्षिणी अर्काट जिला तथा कश्मीर में चिनाब नदी के किनारी कोयले के भंडार स्थित हैं। असम में लखीमपुर व शिवसागर जिले का माकूम क्षेत्र भी कोयले के खनन के लिए जाना जाता है।

(iii) **राजनीतिक कारण :** लॉर्ड वेलेजली ने सहायक संधि को लागू किया, जिन राज्यों में इसे स्वीकार किया गया था, उन्हें अंग्रेज रेजिडेंट को रखना पड़ा तथा उन्होंने सेनाओं पर आने वाले खर्च को भी वहन किया। यदि उन्होंने संधि का पालन नहीं किया तो उनके राज्यों को कम्पनी ने छीनकर अपने राज्य की सीमाओं में विलीन कर दिया। अवध और हैदराबाद ऐसे ही राज्य थे, जो इस नीति का शिकार हुए और यह 1857 ई. के विद्रोह का कारण बना।

आर्थिक कारण : अंग्रेजों की भू-राजस्व की दरों में वृद्‌धि और

उसे वसूल करने के उनके अमानवीय तरीकों ने भारतीय किसानों और जमींदारों में अपार असंतोष उत्पन्न कर दिया था। दूसरी ओर अंग्रेजों ने शिल्पकारों का अनेक प्रकार से शोषण किया था। इसी तरह से अंग्रेजों द्वारा किसानों, जमींदारों और शिल्पकारों का आर्थिक शोषण जारी रहा और 1857 ई. के विद्रोह का कारण बना।

(iv) **उच्चतम न्यायालय का अपीलीय क्षेत्राधिकार :**

(1) उच्चतम न्याययलय में उच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध अपील की जा सकती है।

(2) यह अपील दीवानी, फौजदारी या वैधानिक निर्णयों के संदर्भ में की जा सकती है।

(3) संविधान की व्याख्या से संबंधित मुकदमें में किसी प्रश्न के संदर्भ में पुनर्विचार की प्रार्थना उच्चतम न्यायालय में की जा सकती है।

उच्च न्यायालय का अपीलीय क्षेत्राधिकार : अधीनस्थ न्यायालयों के निर्णयों के विरूद्ध की गई अपीलों की सुनवाई करता है, जिसके अंतर्गत यह दीवानी, फौजदारी और राजस्व संबंधी मुकदमों की सुनवाई करता है। यह मुकदमों को एक न्यायालय से दूसरे न्यायालय में स्थानांतरित भी कर सकता है। यदि किसी निचली अदालत में अर्थात् जिला सत्र न्यायाधीश की अदालत में किसी व्यक्ति को मृत्युदंछ की सजा सुनाई गई हो तो इसका अनुमोदन उच्च-न्यायालय द्वारा होना आवश्यक है। दूसरे, यदि फौजदारी के मामलों में सेंशन कोर्ट ने मृत्युदंड दिया हो तो उच्च न्यायालय में अपील की जा सकती है।

(v) **प्रधानमंत्री की स्थिति :** सारी कार्यपालिका शक्तियाँ राष्ट्रपति में निहित होती हैं परंतु व्यवहार में उन शक्तियों का वास्तविक रूप से उपयोग करने वाला व्यक्ति प्रधानमंत्री है। वह केबिनेट का वास्तविक अध्यक्ष है तथा मंत्रियों की नियुक्ति राष्ट्रपति उसके परामर्श पर ही करता है। वह मंत्रियों को उनके विभागों को आवंटित करता है। उनके विभागों में फेर-बदल कर सकता है तथा

मंत्रियों के इस्तीफे की माँग कर सकता है तथा अपना त्यागपत्र देकर संपूर्ण मंत्रिमंडल को भंग कर सकता है। वह सत्ताधारी पार्टी का नेता है तथा टीम का कैप्टन है। वह राष्ट्रपति और मंत्रिपरिषद् के बीच की महत्त्वपूर्ण कड़ी है।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) अहमदाबाद में सूती वस्त्र उद्योग की स्थापना की गई क्योंकि यह नगर गुजरात में साबरमती नदी पर स्थित है। गुजरात में भारत की सर्वाधिक कपास पैदा होती है तथा इसकी जलवायु नम है, जो सूत की कताई और बुनाई के लिए उपयुक्त है। कुशल और अर्द्धकुशल कारीगर, रेलों तथा सड़कों का जाल, वायुपत्तन, मुंबई के बंदरगाह तक आसानी से पहुँचाना तथा पंजाब, हरियाणा आदि राज्यों में स्थित बाजार के अलावा निर्यात की सुविधाएँ आदि अहमदाबाद में सूती वस्त्र मिलों के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण कारक हैं।

(ii) कुछ भारतीयों ने भारत में शिक्षा की दशा को सुधारने के लिए प्रयास किए। महान समाज सुधारक राजा राममोहन राय भारतीयों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने के पक्ष में थे, यद्यपि वह बंगला और संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित थे। उन्होंने कलकत्ता विद्यालय समाज की स्थापना की जिसने 115 स्कूलों को खोला। उन्होंने कलकत्ता में हिंदू कॉलेज की स्थापना की जहाँ व्याकरण, इतिहास, बंगला, भूगोल, गणित, ज्योतिष तथा अंग्रेजी विषयों को पाश्चात्य शैक्षिक तरीकों के माध्यम से पढ़ाया जाता था। इंग्लैंड के चर्च के सदस्यों ने बम्बई में बाम्बे एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना की जिसने यूरोपीय और एंग्लो-इंडियन बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के प्रयास किए।

उत्तर प्रदेश और दिल्ली में गैर-मिशनरी प्रयासों के माध्यम से शिक्षा देने की कोशिश की गई। 1818 ई. में बनारस में जयनारायण घरहाल ने जयनारायण स्कूल की स्थापना की जिसमें हिंदू और

मुसलमान बच्चे अंग्रेजी, फारसी, बंगला और हिंदुस्तानी (हिंदी) का अध्ययन करते थे।

1867 ई. में डॉ. आत्माराम पांडुरंग ने बम्बई में प्रार्थना समाज की स्थापना की। 1870 ई. में दक्कन एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना की। उन्होंने नारी शिक्षा के लिए प्रयास किए तथा श्रमिकों के बच्चों की शिक्षा के लिए विद्यालय खोले।

1875 ई. में दयानंद सरस्वती ने बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की जिसमें गुरुकुलों, डी.ए.वी. कॉलेजों और विद्यालयों की स्थापना की। आर्य समाज ने अछूतों और दलितों के शैक्षिक विकास पर जोर दिया।

आयरलैंड की रहने वाली श्रीमती ऐनी बेसेंट ने वाराणसी में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की तथा अनेक विद्यालयों की देश में नींव डाली।

इनके अतिरिक्त और भी कई अन्य लोगों द्वारा; जैसे–ज्योतिराव फुले, सावित्री फुले, सत्यानंद अग्निहोत्री, सर सैय्यद अहमद खाँ आदि ने शिक्षा को विकसित करने के विभिन्न प्रयास किए।

(iii) **राष्ट्रपति के संकटकालीन अधिकार (शक्तियाँ) :** संविधान की धारा 352 के अनुसार राष्ट्रपति को संकटकालीन घोषणा करने का अधिकार भी प्रदान किया गया है। वह निम्नलिखित परिस्थितियों में संकटकाल की घोषणा कर सकता है–

(1) यदि मंत्रिपरिषद् राष्ट्रपति को आंतरिक विद्रोह, अशांति या सैनिक विद्रोह, बाह्य आक्रमण आदि की सूचना दे तो राष्ट्रपति संकटकाल की घोषणा कर सकता है। उदाहरण के लिए, 1962 ई. में अक्टूबर माह में चीन के आक्रमण के समय ऐसा किया गया था।

(2) यदि राज्य में संवैधानिक ढाँचा विफल हो गया हो तो ऐसी घोषण होगी। जम्मू एवं कश्मीर तथा पंजाब में इसी कारण से राष्ट्रपति शासन लागू किया गया।

(3) यदि आर्थिक संकट हो गया हो तो भी ऐसी घोषण होगी।

4. संक्षिप्त वर्णन कीजिए :

(i) **राष्ट्रीय पार्क तथा वन्य जीव अभ्यारण्य :**

राष्ट्रीय पार्क : सरकारी नियंत्रण में रहने वाली वन्य जीवों की प्रजातियों के रहने के लिए प्राकृतिक क्षेत्र राष्ट्रीय पार्क कहलाता है। भारत में 60 राष्ट्रीय पार्कों की स्थापना की गई है।

वन्य जीव अभ्यारण्य : वन्य जीव अभयारण्य ऐसे क्षेत्र हैं, जहाँ वानिकी, पशुचारण या कृषि जैसे कार्यो पर सरकारी रोक लगी होती है। भारत में 400 वन्य जीव अभयारण्यों की स्थापना की गई है।

(ii) **जन्म दर तथा मृत्यु दर :**

जन्म दर : प्रति 1000 व्यक्तियों में जन्म लेने वाली जनसंख्या को जन्म-दर कहते हैं। 1991-2000 के दौरान जन्म-दर 30.97 थी।

मृत्यु दर : प्रति 1000 व्यक्तियों में मृत्यु होने वाली जनसंख्या को मृत्यु-दर कहते हैं। 1991-2000 के दौरान मृत्यु-दर 10.8 थी।

(iii) **सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम तथा निजी क्षेत्र के उपक्रम :**

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम : किसी व्यक्ति या कई व्यक्तियों द्वारा मिलकर चलाए जाने वाले उद्योग निजी क्षेत्र के उद्योग कहलाते हैं। उदाहरण–मवाना शुगर मिल्स, मवाना; टाटा मोटर्स; मोदी कॉन्टीनेन्टल टायर आदि।

निजी क्षेत्र के उपक्रम : केंद्रीय या राज्य सरकारों द्वारा चलाए जाने वाले उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग कहलाते हैं। उदाहरण–भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स लिमिटेड, गैस ऑथोरिटी इंडिया लिमिटेड, बोकारो स्टील्स लिमिटेड आदि।

आदर्श प्रश्न-पत्र-III

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (c) चावल (ii) (a) सार्वजनिक उपक्रम

(iii) उत्तरी गोलार्द्ध में

(iv) (a) जलियाँवाला बाग हत्याकांड के कारण

(v) (d) 1949 ई. में (vi) (b) ट्राइसेम

2. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य (v) सत्य

3. निम्नलिखित नारे किसने दिए :

(i) महात्मा गांधी (ii) सुभाषचंद्र बोस

(iii) भगत सिंह (iv) सुभाषचंद्र बोस

(v) सुभाषचंद्र बोस (vi) सुभाषचंद्र बोस

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) चाय, चीनी, वस्त्र, कागज, पटसन (जूट), घी, तेल, चमड़ा, दुग्ध उद्योग आदि।

(ii) प्रति 1000 व्यक्तियों में जन्म लेने वाली जनसंख्या को जन्म-दर कहते हैं।

(iv) ए.ओ. ह्यूम एक अवकाश प्राप्त सिविल सेवा के अधिकारी थे।

(v) प्रभावित व्यक्ति की ओर से पुलिस थाने में दर्ज कराई गई प्राथमिकी को प्रथम सूचना रिर्पोट या एफ.आई.आर. कहते हैं।

(vi) प्रधानमंत्री।

2. 6 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **भारत के औद्योगिक क्षेत्र :**

उत्तरी क्षेत्र : दिल्ली, गुड़गाँव, मेरठ, हरिद्वार, रूद्रपुर, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, बनारस।

दक्षिणी क्षेत्र : चेन्नई, हैदराबाद, बंगलुरू, कोल्लम, त्रिवेन्द्रम, मदुरै, विजयवाड़ा, कोयम्बटूर, विशाखापत्तनम।

पश्चिमी क्षेत्र : मुंबई, पूना, वड़ोदरा, अहमदाबाद, सूरत।

पूर्वी क्षेत्र : कोलकाता, आसनसोल, बर्दवान।

(ii) **भारत में लिंगानुपात :** (2001 ई. की जनगणना के अनुसार) भारत में 1901 ई. में लिंगानुपात 972 और 2001 ई. में 933 था। केरल राज्य में लिंगानुपात सर्वाधिक 1058 तथा हरियाणा में सबसे कम 861 है जबकि संघशासित प्रदेशों में दमन और दीव में सबसे कम 709 तथा सर्वाधिक पुडुचेरी में 1001 है। भारत में महिलाओं की दयनीय सामाजिक और आर्थिक दशाओं के कारण लिंगानुपात पुरुषों के पक्ष में है।

(iii) **ब्रिटिश शासनकाल में रेलवे :** अंग्रेजों ने देश के विभिन्न भागों से कच्चा माल लाने और वहाँ तैयार माल पहुँचाने के लिए पूरे देश में रेलों का जाल बिछा दिया। देश के महत्त्वपूर्ण नगरों, कस्बों और बंदरगाहों को दिल्ली, मुगलसराय, लखनऊ आदि रेलवे जंकशनों से जोड़ा गया।

(iv) **जलियाँवाला बाग हत्याकांड :** अमृतसर (पंजाब) में डॉ. सतपाल और डॉ. किचल की गिरफ्तारी के विरोध में लोग जलियाँवाला बाग में इकट्ठे हो गए। इसलिए 13 अप्रैल 1919 ई. को एक सभा का आयोजन किया गया था, जिसमें उक्त नेताओं की गिरफ्तारी पर विचार-विमर्श चल रहा था। जनरल डायर ने निहत्थी भीड़ पर एकाएक ब्रिटिश सेना से गोलियाँ चलवा दीं। हजारों पुरुष, स्त्रियाँ और मासूम बच्चों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा और अनेक घायल हो गए।

(v) **आई.आर.डी.पी. (समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम) :** इस

कार्यक्रम का मूल उद्देश्य ग्रामीण निर्धन परिवारों की पहचान करना और उन्हें रोजगार उपलब्ध कराना है। यह केंद्र द्वारा चलाया गया कार्यक्रम है। जिसमें धन की व्यवस्था राज्य सरकार और केंद्र सरकार 50 : 50 के अनुपात में करते हैं। इस योजना का लाभ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को हुआ था। यह योजना 1980 ई. में चलायी गई थी।

जे. आर. वाई (जवाहर रोजगार योजना : इस योजना को गरीब परिवार के कम-से-कम एक सदस्य को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए अप्रैल 1989 ई. में भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया। इस योजना का महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि इसे जिला, ब्लॉक तथा ग्राम स्तर पर पंचायतों के माध्यम से क्रमशः 70:15:15 के अनुपात में क्रियान्वित किया गया।

जे.आर.वाई : इस योजना को गरीब परिवार के कम-से-कम एक सदस्य को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए अप्रैल 1989 में भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया। इस योजना का महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि इसे जिला, ब्लॉक तथा ग्राम स्तर पर पंचायतों के माध्यम से क्रमश 70 : 15 : 15 के अनुपात में क्रियान्वित किया गया।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **विश्व जनसंख्या घनत्व :** किसी देश की जनसंख्या एवं भूमि के पारस्परिक अनुपात को जनसंख्या का घनत्व कहते हैं। विश्व का औसत जनसंख्या घनत्व 45 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। जनसंख्या घनत्व की दृष्टि से विश्व को निम्नलिखित चार क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है–

(अ) उच्च्य जनघनत्व वाले क्षेत्र : गंगा और सिंधु के मैदान (भारत), यांगटी सीक्यांग तथा मीक्यांग नदियों की घाटियाँ और बेसिन (चीन), जाफन और यूरोप की औद्योगिक पेटी (बैल्ट), अफ्रीका की नील नदी की घाटी; पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका।

(ब) मध्यम जनघनत्व वाले क्षेत्र : पूर्वी यूरोप, हिन्द-चीन के मैदानी क्षेत्र, उत्तर अमेरिका का मिसीसिपी का मैदान, अल्जीरिया, नाइजीरिया तथा दक्षिण अफ्रीका (अफ्रीका), ब्राजील के तटीय प्रदेश तथा मध्य चिली (दक्षिण अमेरिका)।

(स) आंशिक जनघनत्व वाले क्षेत्र : अंटार्कटिका, ग्रीनलैंड, टुंड्रा, मध्य एशिया में मंगोलिया, सहारा, कालाहारी, अरब अटाकामा आदि, मरुस्थल, अमेजन और कांगो बेसिन, ऊँचे पर्वतीय प्रदेश तथा पठार।

(द) अति अल्प जनघनत्व वाले क्षेत्र : उत्तरी यूरोप, पश्चिमी एशिया, मालागासी, सूडान, कनाडा तथा दक्षिण साइबेरिया।

(ii) **भारत विभाजन के कारण :**

(1) अंग्रेजों की 'फूट डालो राज करो' की नीति ने मुसलमानों और हिंदुओं को विभाजित कर दिया।

(2) मिंटों-मार्ले सुधारों और मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचक मण्डल की माँग ने भारत के विभाजन का मार्ग प्रशस्त कर दिया। इसके अतिरिक्त विभाजन में कवि मोहम्मद इकबाल तथा मोहम्मद अली जिन्ना की नीति ने आग में घी का काम किया।

(3) हिंदू और मुसलमानों में परस्पर अविश्वास का उत्पन्न होना।

(4) वीर सावरकर के हिंदू समुदाय को प्रोत्साहित करने का बुरा प्रभाव।

(5) मोहम्मद अली जिन्ना की द्विराष्ट्र सिद्धांत पर हठधर्मिता तथा आंतरिक सरकार का विफल होना भी इस विभाजन के लिए जिम्मेदार माना गया।

(6) सांप्रदायिक दंगों ने भी इस विभजान की पिशातय की।

(7) अंग्रेजों की दो राष्ट्रों में विभाजन की षड्यंत्रकारी नीति भी इसके लिए जिम्मेदार थी।

(8) लॉर्ड माउण्टबेटन योजना में पाकिस्तान और भारत में भारतीय उपमहाद्वीप का विभाजन निहित था।

4. कारण दीजिए :

(i) क्योंकि चीनी उद्योग के लिए आवश्यक कच्चा माल (गन्ना) तथा श्रमिक उत्तर प्रदेश में बहुतायत में प्राप्त होते हैं।

(ii) प्रशांत महासागर की तटीय पट्टी में ज्वालामुखी विस्फोट के कारण भूकंप आते रहते हैं।

(iii) 1764 ई. में बक्सर का युद्ध लड़ा गया क्योंकि अंग्रेजों ने मीर कासिम को पदच्युत कर उसकी जगह मीर जाफर को बंगाल का नवाब बनाना चाहा था।

(iv) क्योंकि वे चाहते थे कि भारतीय उनकी कार्य प्रणाली को समझें और कंपनी को अंग्रेजी पढ़े-लिखे क्लर्क मिल सकें।

(v) न्यायाधीशों को पदच्युत करने की प्रक्रिया अति जटिल है क्योंकि न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है तथा उनके खेत्राधिकार काफी विस्तृत हैं।